सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023
www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 140, नई दिल्ली, मंगलवार 29 जुलाई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 गुरु रंधावा ने लॉन्च किया 24Hs फ़िटनेस: भारत की फ़िटनेस संस्कृति
06 विदेशी चिकित्सा डिग्री: भारत का एनएमसी लगभग 9 लाख रुपये...
08 "बीबिपुर: एक गांव की कहानी, जो अब किताबों में पढ़ाई जाएगी"

दिल्ली में EoL वाहनों को स्क्रैप करने और B VI वाहनों पर दिल्ली सरकार द्वारा लगाए गए पर्यावरण क्षतिपूर्ति शुल्क (ECC) को वापस लेने का मामला, जो 28-7-25 को सर्वोच्च न्यायालय में सुनवाई के लिए लंबित था, अब अस्थायी रूप से 5-8-2025 को सूचीबद्ध

स्थिति - लंबित (प्रस्ताव की सुनवाई [आदेश (अधूरे मामले/IA/CRLMP) पर सुनवाई नहीं हुई/आज नहीं।

1. दिल्ली में EoL वाहनों को स्क्रैप करने
2. क्या बीएस-6 अनुपालक ट्रकों पर दिल्ली में ईसीसी शुल्क लगना चाहिए या नहीं ?

पिंकी कुंडू सह संपादक परिवहन विशेष

नई दिल्ली। दिल्ली में आने वाले सभी BS-6 डीजल के मालवाहक वाहनों से ग्रीन टैक्स (ECC) खत्म कराने की दिल्ली एनसीआर ट्रांसपोर्ट एकता मंच की अपील को माननीय सुप्रीम कोर्ट द्वारा 24 जुलाई 2025 को मंजूर कर लिया गया और इस पर सुनवाई सोमवार 28 जुलाई 2025 को सुनिश्चित कर दी थी जिस पर किसी कारणवश आज सुनवाई नहीं हो पाई और इसे लंबित कर 5 अगस्त 2025 को सुनवाई के लिए लगाया गया।

बीएस-6 अनुपालक ट्रकों पर ईसीसी शुल्क लगाया जाना चाहिए या नहीं इस पर सुप्रीम कोर्ट याचिका पर सुनवाई कर देगा अपना निर्देश/ फैसला

न्यायालय ने ट्रांसपोर्टरों के संगठन दिल्ली एनसीआर ट्रांसपोर्ट एकता मंच की उस याचिका पर सोमवार को सुनवाई करने पर सहमति व्यक्त की, जिसमें बीएस-6 प्रदूषण मानक वाले भारी वाहनों पर पर्यावरण क्षतिपूर्ति शुल्क (ईसीसी) लगाने को चुनौती दी गई है। यह शुल्क पहले बीएस-3 और बीएस-4 मानक वाले ट्रकों के दिल्ली में प्रवेश पर लागू था।

अधिवक्ता प्रताप एस नर्वाल ने प्रदूषण पर अंकुश लगाने से संबंधित एमसी मेहता मामले में एसोसिएशन द्वारा दायर आवेदन पर तत्काल सुनवाई की मांग की, जिसमें सुप्रीम कोर्ट 1985 से लगातार आदेश का प्रयोग कर रहा है। सीजेआई बीआर गवई की अध्यक्षता वाली पीठ ने सोमवार को आवेदन पर सुनवाई करने पर सहमति व्यक्त की।

ट्रक एसोसिएशन ने कहा कि 9 अक्टूबर, 2015 के सुप्रीम कोर्ट के आदेश के आधार पर 1 नवंबर, 2015 से बीएस-III और बीएस-IV अनुपालक भारी वाहनों पर ईसीसी लगाया गया था पर बीएस-VI अनुपालक ट्रकों से भी ईसीसी वसूला जा रहा है जो असवैधानिक और गलत है और उन्होंने इसके औचित्य पर सवाल उठाया।

2015 के आदेश पारित करते समय, प्रदूषण पर अंकुश लगाने का इरादा था क्योंकि केवल बीएस-III और IV मानकों वाले ट्रक ही बनाए जाते थे। "परिवहन क्षेत्र में तकनीकी प्रगति के साथ, भारी वाहन अब बीएस-VI मानकों के अनुरूप हैं। इस आदेश के लागू होने के समय भी, डीजल से चलने वाली बसों पर ECC नहीं लगाया गया था।"

बीएस-VI मानकों वाले ट्रकों को छूट देते हुए, यानी बाद वाली श्रेणी के भारी वाहन प्रदूषणकारी नहीं थे, फिर भी ईसीसी अभी भी तर्कहीन रूप से वसूला जा रहा है। इसमें कहा गया है, "खाद्य और पेट्रोलियम पदार्थ ले जाने वाले वाहनों, एम्बुलेंस या सरकारी वाहनों को छोड़कर, सभी व्यावसायिक वाहनों से ईसीसी वसूला जाता है।"

श्याम सुन्दर, महासचिव
दिल्ली एनसीआर ट्रांसपोर्ट एकता मंच

शहीद भगह सिंह कालोनी में समस्याओ के अम्बार
फिर भी जीती हुई भाजपा की निगम पार्षद का सौतेला व्यवहार, क्या करे जनता किसको लगाए गुहार, सबसे बड़ा सवाल?

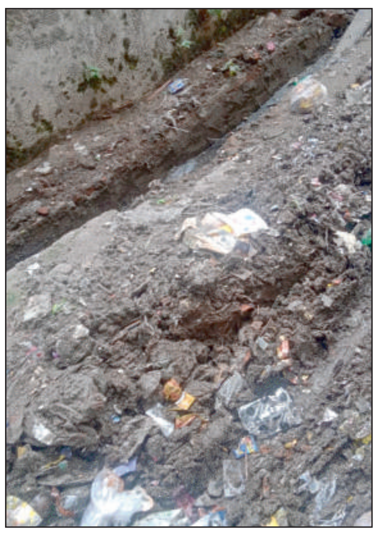
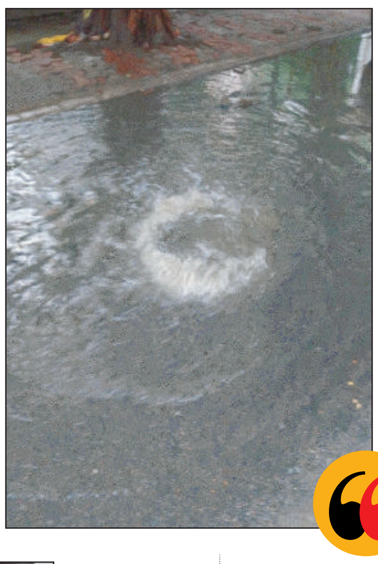

पिंकी कुंडू सह संपादक परिवहन विशेष

नई दिल्ली। वार्ड ०-92 पंजाबी बाग के शहीद भगत सिंह कालोनी के नागरिक नरकीय जीवन जीने पर मजबूर है, इस कालोनी में जिधर देखो समस्या ही समस्या दिखती है। इन समस्याओं के जिम्मवार कौन है, उसके लिए तह तक जाकर जानने के लिए कालोनी के अनेको लोगो से बात करके समस्याओं को जाना और जो बाते सामने आई है उससे नेताओं के चेहरे से नकाब ही उतर गया है

इदौंरिया समाज के प्रधान लल्लूराम ने बताया कि जब यह

कालोनी बसाई गई थी तब से वह इस कालोनी मे रह रहे हैं। पिछले 5 वर्षो से इस कालोनी में विकास होना तो बहुत दूर की बात है यहां तो साफ- सफाई तक नहीं होती है। जगह जगह गंदगी के ढेर का अम्बार देखने को मिलता है.

बुजुर्ग महिला राज रानी ने कहा यहाँ सबसे ज्यादा समस्या बरसाती नाली की सफाई नही होने से है बरसात के

मौसम में हर गली जलमगन हो जाती है। सीवर की समस्या बहुत जटिल है, इन समस्याओं का समाधान करने में कोई भी रुचि नहीं दिखाता ना तो सरकारी अधिकारी ना ही निगम पार्षद और ना ही निगम कर्मचारी।

क्षेत्र निवासी मदनलाल ने नेताओ के उपर रोष व्यक्त करते हुए कहा इस कालोनी की समस्याओं का समाधान कोई नही करना चाहता। दिन प्रतिदिन समस्याएं बढ़ रही है। इन्होंने बताया निगम पार्षद कार्य करने में रुचि नहीं रखती हमेशा कालोनी से सौतेला व्यवहार करती है।

समाज सेविका कंचन कच्छप ने बताया इस क्षेत्र में पार्को की हालत भी

सड़को जैसी बदतर है। पार्कों में जंगली घास बढ़ रही है और उसके कारण इस समय क्रीड़े मकोड़े, सांप पार्कों मे होने के डर से लोग पाकों में जाना छोड़ दिया है।

क्षेत्र निवासी कपील मदान ने कहा इस कालोनी मे असमाजिक तत्व का बोल वाला है। इस पर कोई ध्यान नही देता। बरसाती नाली के पानी लोगो के घर में घूस जाते हैं। जिससे कालोनी में रहना मुश्किल हो गया है।

क्षेत्र निवासी अजित सिह ऊर्फ कालू द्वारा रोष भरे शब्दों में बताया इस

कालोनी की समस्याओं का सबसे बड़ा जिम्मेवार क्षेत्रीय पार्षद है जो कोई भी कार्य नहीं करवा रही हैं।

क्षेत्र निवासी कुलदीप सिंह ने बताया इस कालोनी में एक कूड़ा घर बना हुआ है जो होम गार्ड मुख्यालय के ठीक सामने है और यहाँ नियमित रूप से कुड़ा नही उठाया जाता इस वजह से इस कालोनी में बदबू और बीमारी का भय सदा बना रहता है।

क्षेत्र निवासी बीडी गुप्ता ने बताया की कालोनी की समस्याओं के

समाधान करवाने के लिए कई बार निगम कार्यालय और निगम पार्षद के कार्यालय में शिकायतें कर चुके फिर भी कोई इस कालोनी में समस्या का समाधान नहीं करवा रहा।

क्षेत्र निवासी सचिन वर्मा ने कहा यहां चाहे पार्क हो या गलियां चारो तरफ गंदगी ही गंदगी भरी पड़ी है और कोई भी लाइट का प्रबंध नहीं है। अंधेरा होते ही यहां असामजिक तत्व का जामवाड़ा लग जाता है

क्षेत्र निवासी मनोहर सिंह ने कहा आवारा

पशुओं का जमघट यहां हमेशा लगा रहता है इस पर कोई भी ना तो नगर निगम, ना ही निगम पार्षद ध्यान दे रही है।

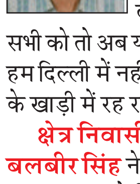

क्षेत्र निवासी रावेल सिंह ने कहा यहां की समस्याओ को देखते हुए हम सभी को तो अब यह लगता हैं की हम दिल्ली में नहीं अपितु बंगाल के खाड़ी में रह रहे है।

क्षेत्र निवासी बलबीर सिंह ने कहा इस कालोनी में विकास कार्य नहीं होता सिर्फ

कर्मचारी कागजो में कार्य दिखा कर सरकारी पैसा लूट रहे हैं साफ- सफाई सब चौपट है.

क्षेत्र निवासी पुरुषोतम ने

बताया मात्र दो सौ मीटर पर पश्चिमी जोन निगम कार्यालय एवम् जिलाधीश आफिस है उसके बावजूद इस क्षेत्र में समस्या ही समस्या है विधायक कैलाश गंगवाल जी ने दौरा किया था इस दौरे के बाद से उम्मीद है कि समस्याओ से निजात मिलेगा पर कब यह पता नहीं है।

क्षेत्र निवासी और संस्था के अध्यक्ष के के छावड़ा ने कहा

क्षेत्र में जितनी समस्याए है उन सब का समाधान जरूरी है पर दूख कि बात यह है की निगम पार्षद के अंहकारी रवैये से क्षेत्र का विकास कार्य रूका पड़ा हैं यदि किसी समस्या के लेकर निगम पार्षद को फोन कोई करता है तो फोन निगम पार्षद के पति उठाते हैं कहते हैं इस कालोनी से वोट मुझे नहीं मिला है और मैं काम नहीं कराऊंगा जैसे निगम पार्षद उनकी पत्नी नहीं वह स्वयं है।

कुल मिलाकर शहीद भगत सिंह कालोनी के नागरिक निगम पार्षद की कार्यशोली और रवैये से नाखुश हैं। निगम पार्षद के इस रवैये से आने वाले समय में भाजपा के अन्य नेताओं और पदाधिकारियों को लोगों का आक्रोश झेलना पड़ सकता है। इस कालोनी मे आने से यह बात भी सामने खुलकर आई की इस क्षेत्र के भाजपा के कार्यकर्ता भी निगम पार्षद और उसके पति के कार्य शैली से बेहद नाराज़ हैं।

कुल मिलाकर शहीद भगत सिंह कालोनी के नागरिक निगम पार्षद की कार्यशोली और रवैये से नाखुश हैं और भारतीय जनता पार्टी के आला अधिकारियों से अपील करते हैं की वह स्वयं आकर इस क्षेत्र का दौरा करे और देखे की कैसी निगम पार्षद उन्होंने जनता को सेवा के लिए प्रदान की है जिसे जनता से कुछ लेना देना नहीं सिर्फ अपने पारिवारिक सदस्यों को जिला में पद दिलाकर लोगों को प्रभावित करना मात्र है।

ट्रैक्टर ट्राली बंद हो, भारतमाला पर पुलिस व आरटीओ की वसूली बंद हो

चोरों को मिली खुली छूट का जिम्मेदार कौन? किसका कितना हिस्सा सरकार जवाब दे

नशे में धुत व हथियारों से लेश गैंगों द्वारा ट्रकों की रिकवरी के नाम पर गुंडागर्दी की जवाबदेही किसकी

हरियाणा-राजस्थान-दिल्ली-उत्तर प्रदेश में लोकेशन सिस्टम में परिवहन अधिकारीयों व दलालों की मिलीभगत तोड़ने में स्थानीय सरकारी मशीनरी फेल

परिवहन विशेष न्यूज

हरियाणा के सिरसा जिले में ऐलनाबाद यूनियन सभा के दौरान ट्रैक्टर ट्रॉली, डाला वसूली, पुलिस आरटीओ की गुंडागर्दी, रिकवरी एजेंसीयों के द्वारा मचाई जा रही दहशतगर्दी व गाड़ियों को लंबे समय तक मंगा कर लोडिंग नहीं करना व अनलोडिंग के समय भी तीन से चार दिन तक बेसहारा स्थिति में छोड़ दिए जाने को लेकर चर्चा गरम रही1

बृजलाल लोहिया ने कहा की गाड़ियां खाली होने के पश्चात भाड़े के भुगतान पर आनाकानी, व कई बार भाड़े भुगतान ही नहीं किए जाते अतः इसके लिए कड़े कदम उठाने आवश्यक हैं1 ऐलनाबाद यूनियन में विभिन्न संस्थाओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हुए राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा के कार्य को खुले गले से सराहना की व डॉ यादव के सभी आंदोलन, आह्वान व परिवहन उद्योग हेतु सभी क्रियाकलापों को पूर्ण समर्थन देने की बात की1

वही हनुमानगढ़ यूनियन के कार्यालय में जिले व आसपास के परिवहन क्षेत्र से जुड़े प्रतिनिधियों ने उपस्थिति दर्ज कराते हुए ट्रैक्टर ट्रॉली के मुद्दे पर सरकार के प्रति वीरोध जताते हुए लगातार भारतमाला पर पुलिस व आरटीओ के द्वारा वसूली को लेकर चिंता व्यक्त की, इसके साथ ही दिल्ली एनसीआर में हो रहे पुलिस व आरटीओ की गुंडागर्दी को लेकर रोष जताते हुए इसके खिलाफ आंदोलन के लिए बिगुल फूंके जाने की मांग की, कुछ भ्रष्ट पदाधिकारियों द्वारा एक-एक गाड़ी से 20-30 हजार रुपए की वसूली दिल्ली सरकार के भ्रष्टाचार को उजागर करती है1 वहीं दिल्ली के अंदर विभिन्न मंडीयों में धर्म कांटे को अपने अनुरूप चला कर प्रतिदिन प्रति गाड़ियों को हजारों का नुकसान करवाया जा रहा है यह लीगल एंड मेटालर्जी डिपार्टमेंट की सहायता से खुलेआम लूट मची हुई है।

विभिन्न मुद्दों का जवाब देते हुए राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा "उफ्तत्सा" के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ राजकुमार यादव ने - परिवहन व्यवसाय को उद्योग का दर्जा दिलाने, प्रत्येक पंजीकृत गाड़ी मालिकों को 25000 का प्रतिमाह पेंशन की त्वरित घोषणा, 5% ब्याज पर भारी व्यावसायिक वाहनों को वित्त प्रदत्त, विभिन्न श्रेणियां में बंटे जीएसटी को परिवहन व्यवसाय के लिए समान धारा में लाने की अपील, ऑनलाइन चालान को तुरंत बंद किए जाने की मांग, बीमा को मोबाइल वाउचर की तरह टुकड़ों में किए जाने व बॉर्डर बंद होने के बावजूद भी देश के विभिन्न बॉर्डर पर विशेष रूप से महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़ में भारी वसूली का विरोध दर्ज कराते हुए केंद्रीय एजेंसियों द्वारा उच्च स्तरीय जांच की मांग की एवं पश्चिम बंगाल में डंडा टैक्स के नाम पर किए जा रहे हैं भारी भरकम वसूली का पुरजोर विरुद्ध दर्ज किया गया1

उक्त बैठक में श्री रविंद्र बधानी, महेंद्र सिँह, रविंद्र बिश्नोई, जुगल किशोर राठी, लीलाधर शर्मा, गजेंद्र सिँह पीलीबंगा, अनूप सिँह, नरेश गोछी, कृष्ण वधवा व अन्य उपस्थित रहे1

नागपंचमी आज

पंचांग के अनुसार, हर साल सावन माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि पर नाग पंचमी का पर्व मनाया जाता है। माना जाता है कि इस तिथि पर नाग देवता और भगवान शिव की पूजा-अर्चना करने से व्यक्ति को काल सर्प दोष से राहत मिल सकती है। साथ ही नाग पंचमी उन खास तिथियों में से भी एक है, जब रोटी बनाना वर्जित माना जाता है।

कब मनाई जाएगी नाग पंचमी

=====================

सावन माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि का प्रारम्भ 28 जुलाई को रात 11 बजकर 24 मिनट पर हो रहा है। वहीं पंचमी तिथि का समापन 30 जुलाई को देर रात 12 बजकर 46 मिनट पर होगा। ऐसे में नाग पंचमी मंगलवार 29 जुलाई को मनाई जाएगी।

नाग पंचमी पूजा मुहूर्त - सुबह 06 बजकर 13 मिनट से सुबह 08 बजकर 49 मिनट तक

जरूर करें ये काम

=====================

नाग पंचमी के दिन नाग देवता के साथ-साथ शिव जी की आराधना करना भी काफी शुभ माना जाता है। ऐसे में इस दिन पर शिवलिंग का कच्चे दूध से अभिषेक करना चाहिए। इसी के साथ नाग पंचमी के दिन जरूरतमंदों को दान आदि करना भी काफी शुभ माना गया है।

अगर किसी व्यक्ति को कालसर्प दोष सता रहा है, तो इसके लिए उन्हें नाग पंचमी के दिन नाग देवता की पूजा-अर्चना करनी चाहिए और उनके मंत्रों का जप करना चाहिए। इससे आपको कालसर्प दो से राहत मिल सकती है।

नाग पंचमी के दिन बन रहे हैं ये शुभ योग

=====================

इस साल नाग पंचमी के दिन 2 बहुत ही शुभ योग बन रहे हैं, जो इस दिन और भी ज्यादा खास बना रहे हैं। बता दें कि कृष्ण पक्ष की पंचमी तिथि के दिन मनाई जाने वाली नाग पंचमी को सौभाग्य योग बन रहा है। वहीं, शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को मनाई जाने वाली नाग पंचमी के दिन शिव योग बना रहा है। ऐसे में नाग देवता और भगवान शिव की पूजा करने से व्यक्ति की मनोकामनाएं पूर्ण हो सकती हैं।

नाग पंचमी पूजा विधि

=====================

इस दिन सुबह जल्दी उठकर स्नानादि करने के बाद साफ वस्त्र धारण करने चाहिए। इसके बाद, पास के शिवालय में जाकर विधि-विधान से पूजा-अर्चना करें और व्रत का संकल्प लें। अब अपने घर, रसोई और मंदिर के दरवाजे के दोनों ओर खड़िया से पुताई करके कोयले से नाग देवता का चिन्ह बना लें। अगर ऐसा संभव न हो, तो आप नाग देवता की तस्वीर का प्रयोग भी कर सकते हैं। फोटो लगाने के बाद घर में नाग देवता विधि-विधान से पूजा करें और फिर पास के खेत या ऐसे स्थान पर दूध का कटोरा रखकर आ जाएं जहां सांप आ सकते हैं। इस दिन सेवई और चावल बनाने का भी खास महत्व होता है। अब नाग देवताओं को दूध और जल से स्नान कराएं। साथ ही, धूप, दीप, नैवेद्य आदि अर्पित करें। अब अंत में आरती करें और नाग पंचमी की कथा का पाठ भी अवश्य करें। इससे बेहद शुभ फल की प्राप्ति होती है।

नाग पंचमी का क्या है महत्व ?

=====================

सावन के महीने में सांप भू गर्भ से निकलकर भू तल पर आ जाते हैं। माना जाता है कि नाग किसी व्यक्ति को नुकसान न पहुंचाएं, इसलिए नाग पंचमी के दिन नाग देवता की पूजा-अर्चना की जाती है। कृष्ण पक्ष की पंचमी तिथि को बिहार, बंगाल, उड़ीसा, राजस्थान आदि स्थानों पर नाग देवता की पूजा की जाती है। वहीं, शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को देश के अन्य राज्यों में नाग पंचमी मनाई जाती है। शास्त्रों और पुराणों के अनुसार, नाग देवता स्वयं पंचमी तिथि के स्वामी हैं। ऐसे में इस दिन उनकी पूजा करने से भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण हो सकती है और जीवन में सुख-समृद्धि आती है। मान्यता है कि नाग पंचमी पर विधि-विधान से नाग देवता की पूजा करने से कुंडली में मौजूद राहु व केतु से जुड़े दोषों से मुक्ति मिल सकती है। नाग देवता को पाताल लोक का भी स्वामी बताया गया है। ऐसे में पंचमी तिथि के दिन भूमि की खुदाई भूलकर भी नहीं करे।

केदारनाथ जी आदि वृंदावन काम्यवन कामां राजस्थान में पहाड़ के ऊपर गुफा के अंदर विराजमान है

केदारनाथ जी शिला के नीचे पहाड़ों के ऊपर प्रकट हुए थे जिस शिला के नीचे प्रकट हुए थे वो नन्दी (नादीया) आकर में है कई शिलाएं और भी विराजमान है जो सर्पाकार गणेश भगवान आकर स्वरूप में देखने को मिलती हैं यह भगवान केदारनाथ जी की महिमा है जो प्राकृतिक स्वरूपों में प्रकट हुई हैं यहां का प्राकृतिक सौंदर्य बहुत ही अलौकिक है जो देखने लायक है इसलिए आप इनके दर्शन करने अवश्य पधारे व भगवान केदारनाथ जी की कृपया प्राप्त करें भगवान केदारनाथ जी ने भगवान कृष्ण की सारी लीलाएं यही से देखी थी यह स्थान आदि वृंदावन काम्यवन राजस्थान में स्थित है पहले जो असली वृंदावन था यही है यहीं से कुछ दूरी पर भोजन थाली है वहीं से स्वयं ब्रह्मा जी ने कृष्ण भगवान को कोई साधारण बालक समझा था तब सभी ग्वाल वालों को व गायों को ब्रह्मा जी ले गए जब कृष्ण भगवान को पता चला तो कृष्ण भगवान ने सभी ग्वाल-पाल हुए गए अपनी लीला से बनाए तब ब्रह्मा जी को एहसास हुआ यह साधारण बालक

नहीं है यह विष्णु अवतार श्री कृष्ण भगवान हैं हर ब्रह्मा जी ने क्षमा याचना मांगी भोजन थाली से कुछ भी दूरी पर इंद्रसेन पर्वत है जहां पर कृष्ण भगवान ने व्योमासुर नाम के दैत्य को मारा था इन दोनों में युद्ध बहुत भयंकर हुआ तब कृष्ण भगवान ने उसे चरण पहाड़ी नामक स्थान पर पटक कर मारा पूरा ब्रह्मांड हिलने लग गया तब कृष्ण भगवान ने चरण पहाड़ी नामक स्थान पर अपने चरणों में हाथों से दबाकर पूरे ब्रह्मांड को हिलने से रोका आज भी कृष्ण भगवान के पद चिन्ह चरण पहाड़ी नामक स्थान पर बने हुए हैं यहीं से कुछ दूरी पर तीर्थराज विमल कुंड है जहां पर कृष्ण भगवान ने विमल राजा की16000 कन्याओं के साथ विवाह किया था यहां पर 84 कुंड 84 खम्मा कई मंदिर स्थापित है यही से कुछ दूरी पर कदमखंडी नामक स्थान है जहां पर नागा बाबा की जटाओं को झाड़ियों से स्वयं कृष्ण भगवान व राधा रानी ने सुलझाया था यहीं से कुछ किलोमीटर दूरी पर बद्रीनाथ जी विराजमान हैं। आदि वृंदावन काम्यवन कामां राजस्थान से 7 किलोमीटर दूरी पर बरसाना धाम व 10 किलोमीटर दूरी पर नंदगांव है।

शिवलिंग के 7 स्थान कौन से हैं जहां चंदन लगाने से भोलेनाथ होते हैं प्रसन्न! जानिए यहां, ?

●**शिवलिंग की पूजा :-** कहा जाता है भगवान शिव भोले हैं, उन्हें मनाना बहुत आसान है. खासतौर से सावन के महीने में. क्योंकि मान्यता है श्रावण मास में भोलेनाथ धरती पर निवास करते हैं. इसलिए शिव भक्त उनकी मन भाव से पूजा अर्चना करते हैं. ताकि भगवान महादेव प्रसन्न होकर उनपर अपना कृपा बरसाएं. इस माह में शिवलिंग की पूजा का विशेष महत्व होता है. सावन के सोमवार के दिन विधि-विधान से पूजा करना और उनको धतुरा,बेलपत्र, दूध, शहद, दही आदि चीजें चढ़ाने और शिवलिंग पर 7 जगह चंदन लगाने से भगावन शिव प्रसन्न होकर भक्तों की सारी मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं।ऐसे में आइए जानते हैं ज्योतिषाचार्य अरविंद मिश्र से शिवलिंग के वो सात स्थान जहां लगाया जाता है शिव जी को चंदन।

●**शिवलिंग पर कहां-कहां चंदन लगाएं, ?**

शिवलिंग पर सात स्थानों पर चंदन लगाने की प्रथा है, जो भगवान शिव के परिवार के विभिन्न सदस्यों को समर्पित है. ये स्थान हैं: शिवलिंग, जलाधारी, गणेश जी का स्थान, कार्तिकेय जी का स्थान, अशोक सुंदरी का स्थान, और नंदी के दोनों सींग।

ऐसे में आइए जानते हैं ज्योतिषाचार्य अरविंद मिश्र से शिवलिंग के वो सात स्थान जहां लगाया जाता है शिव जी को चंदन।

●यहां उन सात स्थानों का विस्तृत विवरण दिया गया है:-

●1. शिवलिंग: यह भगवान शिव का मुख्य स्थान है और चंदन का लेप शिवलिंग के ऊपर लगाया जाता है.

●2. जलाधारी: यह वह स्थान है जहाँ से जल बहता है और यह स्थान माता पार्वती को समर्पित है.

●3. गणेश जी का स्थान: शिवलिंग के दाईं ओर, जलाधारी के ऊपर का स्थान गणेश जी का माना जाता है.

●4. कार्तिकेय जी का स्थान: शिवलिंग के बाईं ओर, जलाधारी के ऊपर का स्थान कार्तिकेय जी का माना जाता है.

●5. अशोक सुंदरी का स्थान: जलाधारी से बहने वाले जल के रास्ते पर अशोक सुंदरी का स्थान माना जाता है.

●6. नंदी के दोनों सींग: नंदी, जो भगवान शिव के वाहन हैं, उनके दोनों सींगों पर भी चंदन लगाया जाता है.

●7. शिवलिंग के पीछे: शिवलिंग के पीछे का स्थान भी चंदन लगाने के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है. ।

●**धार्मिक मान्यताओं और प्रथाओं पर है आधारित:**

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि ये सात स्थान धार्मिक मान्यताओं और प्रथाओं पर आधारित हैं, और विभिन्न परंपराओं में थोड़े भिन्न हो सकते हैं. भगवान शिव जी का पूजन करते समय उपरोक्त सात स्थानों पर चन्दन अवश्य लगाना चाहिए. इससे भगवान शिव के साथ उनका पूरा शिव परिवार प्रसन्न हो कर अपने भक्तों पर कृपा करते हैं.भगवान शिव का परिवार हमें अपने परिवार के साथ सम्मिलित और संगठित होकर रहने की सीख देता है. हर मुसीबत और दुख-सुख में हमारा परिवार ही काम आता है. और जो परिवार साथ रहता है उस पर मुसीबतें भी कम आती है और सुरक्षित रहता है।

देवाधिदेव भगवान शिव जहाँ हृदय में विराजमान हों तो वहाँ जीवन स्वयं तप बन जाता है,इसमे कोई संदेह नहीं।

भगवान शिव को समर्पित यह मास सभी के जीवन में सुख, समृद्धि, आरोग्य और आध्यात्मिक उन्नति का सृजन करे।

जयति जयति जय पुण्य सनातन संस्कृति,
जयति जयति जय पुण्य भारतभूमि,
मङ्गल कामनाओं के साथ,
हर हर महादेव

केदारनाथ मंदिर कैसे बना है और पुराणों के अनुसार इसका क्या महत्व है?

देखिए तथ्य और यहां तक कि पुराण श्री केदारनाथ मंदिर के बारे में क्या कहते हैं...

श्री केदारनाथ धर्मनिष्ठ हिंदुओं के लिए सबसे पवित्र तीर्थस्थलों में से एक है। यह मंदाकिनी नदी के मुहाने पर गढ़वाल हिमालय के आश्चर्यजनक पहाड़ी दृश्य के बीच स्थित है। केदार भगवान शिव, रक्षक और संहारक का दूसरा नाम है। श्री केदारनाथ मंदिर का शिवलिंग पिरामिड के आकार का है और इसलिए शिव मंदिरों में अद्वितीय है।

4000 ईसा पूर्व के महाभारत युद्ध में शौर्य और वीरता का उत्तम पुष्प अठारह दिनों के भीतर युद्ध की ज्वाला में जलकर भस्म हो गया। पांडव ओवर ड्राइव के दोषी थे। उनके पास कोई सम्मान नहीं बचा था और नींद के दौरान बुरे सपने आ रहे थे। यह स्वयं भगवान कृष्ण थे जिन्होंने उन्हें भगवान शिव का आशीर्वाद लेने की सलाह दी थी। प्रकाश के रूप के दर्शन

पाकर पांडवों को उनके पापों से मुक्ति मिली। भीम ने गदा लेकर शिव के बैल रूप से युद्ध किया था, इसलिए उन्हें पश्चाताप हुआ। उन्होंने शिव के शरीर की घी से मालिश की। इसी घटना की स्मृति में आज भी केदारनाथ जी के शिवलिंग की घी से मालिश की जाती है।

शास्त्रों में वर्णित है कि श्री केदारनाथ जी के दर्शन करने से स्वप्न में भी दुःख नहीं आते।

"केदारनाथ की यात्रा करने वाला व्यक्ति अपने सभी पापों को छोड़ सकता है"। व्यास स्मृति।

"व्यक्ति अपने शरीर (मृत) को छोड़कर शिवलोक प्राप्त करता है, महाप्रस्थान यात्रा है जो केदारांचल के लिए जौमेय है"। शांतिपर्व।

"केदारखंड में स्नान करने और कृष्णपक्ष में चतुर्दशी के दिन केदारनाथ मंदिर में दर्शन करने के बाद, भक्त अपने सभी पापों से मुक्त हो जाते हैं और स्वर्ग प्राप्त करते हैं।" वाना पुराण।

"केदार के दर्शन करने और हिमालय तीर्थ में स्नान करने से व्यक्ति को रुद्रलोक प्राप्त होगा।"

कूर्म पुराण।

"केदारेश्वर लिंग हिमालय में स्थित है जो भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। केदारेश्वर लिंग के दर्शन करने के बाद, भक्तों को अपने सभी पापों से छुटकारा मिल जाता है।₹ शिव महा पुराण।

"पांडवों ने महाभारत के युद्ध के दौरान गौ हत्या और गुरु हत्या के कारण हुए अपने पापों के लिए व्यास जी से उपाय मांगा था। व्यास जी ने उन्हें प्रायश्चित प्राप्त करने के लिए केदारनाथ जाने के लिए कहा था।" स्कंद पुराण।

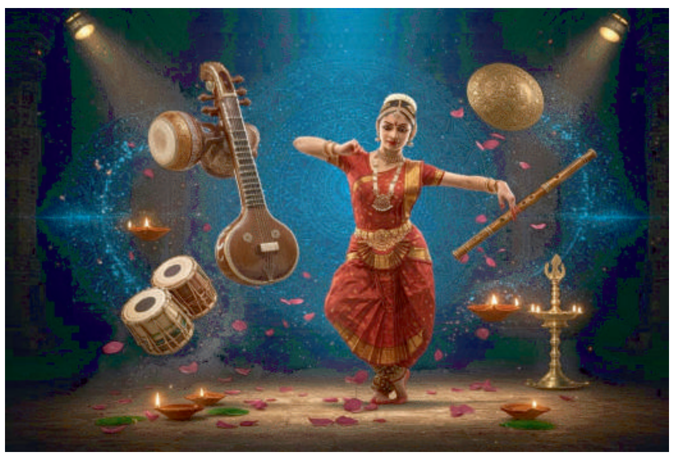

यहां दिखाई देने वाली सभी वस्तुएं/ आकार अनित्य हैं, परिवर्तनशील हैं

इसी अनित्यता के कारण ही हमारा उनसे या तो राग होता है या द्वेष होता है। उसे खोने या पाने की वितृष्णा के कारण ही इस अनित्य संसार से हमारा राग/द्वेष होना बिल्कुल सहज है, स्वाभाविक है। ध्यान रहे कि निर्दोषता आते ही राग-द्वेष का अन्त होने लगता है। राग-द्वेष रहित होते ही, इन्द्रियाँ विषयों से विमुख होकर मन में, मन बुद्धि में और बुद्धि अपने प्रकाशक में विलीन हो जाती है। इस दृष्टि से, समस्त दृश्य उस अनन्त का प्रकाश है। प्रकाश में सत्ता उस प्रकाशक की ही होती है। अतः प्रकाश और प्रकाशक का विभाजन नहीं हो सकता, अपितु प्रकाश अपने प्रकाशक से अभिन्न हो सकता है। वास्तव में यही नित्य योग है। नित्य योग, संयोग की दासता और वियोग के भय से मुक्त करने में समर्थ है, जिसके होते ही चिर-शान्ति, अमरत्व एवं प्रीति की जागृति स्वतः हो जाती है।

शिव और सावन : जब प्रकृति करती है शिव का अभिषेक, जब ब्रह्मांड गूंजता है 'ॐ नमः शिवाय'

जब नीला-सफेद आकाश अपनी शांत छटा बिखेरता है, और बादलों की कोमल गूंज के साथ इंद्रधनुष के रंग झरने लगते हैं, तब लगता है जैसे प्रकृति ने कोई मधुर गीत छेड़ दिया हो। हर दिशा में एक अलौकिक शांति फैल जाती है, और हवा की हर सरसराहट में भक्ति की सिहरन महसूस होने लगती है। यह वह पल होता है जब धरती और आकाश दोनों मिलकर किसी दिव्य उपस्थिति का स्वागत करते हैं—जैसे स्वयं 'शिव' के आगमन की आहट हो। तब धरती सावन की स्वर्णिम बूँदों में नहाकर आल्हादित हो उठती है। यह वही समय होता है, जब प्रकृति अपने संपूर्ण समर्पण के साथ एक ही नाम का उच्चारण करती है — महादेव, भोलेनाथ शिव का। शिव और सावन का संबंध केवल धार्मिक आस्था का नहीं है, बल्कि यह भावना, प्रकृति और ब्रह्मांडीय चेतना का विलक्षण समन्वय है। सावन का महीना मानो प्रकृति का एक प्रेमपूर्ण पत्र हो, जिसे वह शिव को अर्पित करती है। हर बूँद, हर पत्ता, और हवाओं की सरसराहट मानो शिव के नाम का जप कर रही हो। इस पावन काल में गगन अपने अश्रुजल से शिव के मस्तक का अभिषेक करता है और धरती अपनी हरियाली से उनके चरणों में श्रद्धा अर्पित करती है। शिव, जो स्वयं वैराग्य के प्रतीक हैं, सावन में प्रेम और भक्ति के केंद्र बन जाते हैं। उनके गले का

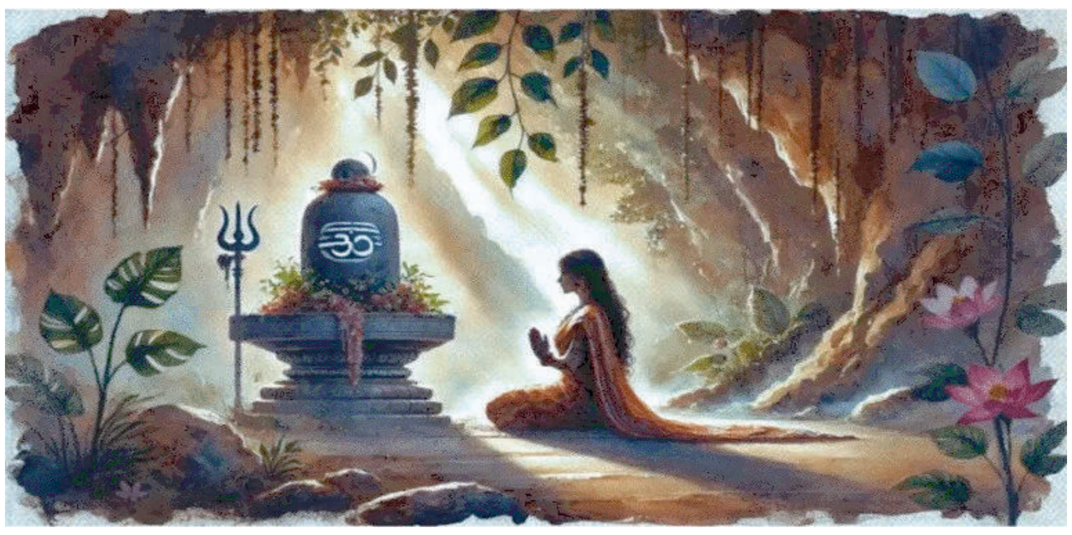

नाग सावन की लहराती जलधाराओं का प्रतीक बनता है, उनके जटाओं से निकलती गंगा इस ऋतु की पवित्रता की अनुभूति कराती है, और उनका त्रिनेत्र मानो मन, बुद्धि और आत्मा को एक साथ जागृत करता है। सावन के सोमवार जैसे आस्था के स्वर्णमय हार हैं, जिनमें हर बूँद श्रद्धा से दमकती है। व्रती महिलाएँ, कन्याएँ और भक्तजन अपनी इच्छाओं, कष्टों और विश्वास को शिव के चरणों में अर्पित करते हैं, जैसे चंद्रमा की चाँदनी में तपते सूर्य को शीतलता मिले। शिव स्वयं असाधारणता के प्रतीक हैं—वह जो श्मशान में वास करते हैं, पर भक्तों के दिल में बसते हैं; जो विनाशक हैं, पर कल्याणकारी भी; जो योगी हैं, पर गृहस्थ जीवन के पोषक भी। सावन वही सौंदर्यपूर्ण समय है, जब शिव का यह विराट स्वरूप अपनी सम्पूर्ण चमक में प्रकट होता है। बेलपत्र जैसे प्रकृति के लिखे प्रेमपत्र हैं शिव के लिए, और धतूरा जैसे तपस्या की अग्नि में परखे गए पुष्प। हर मंदिर, हर शिवालय और 'ॐ नमः शिवाय' की गूंज सावन में इस दिव्य एकत्व की कथा सुनाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानो स्वयं समय ठहरकर शिव में लीन हो जाता है और सृष्टि का हर अणु शिवमय हो उठता है। शिव और सावन दो नहीं, एक ही आत्मा के दो आयाम हैं—एक संवेदना है, दूसरा उसकी अभिव्यक्ति। एक परम ब्रह्म है, दूसरा उसकी आराधना। एक मौन है, तो दूसरा उसी मौन का गान। और जब दोनों का यह मिलन होता है, तो संपूर्ण सृष्टि शिवस्वरूप हो जाती है। यह ऋतु केवल वर्षा की नहीं, यह आत्मिक आराधना, भक्ति और ब्रह्म से एकत्व की ऋतु है।

— डॉ. पंकज भारती - सारण, बिहार।

भगवान शिव से जुड़े कुछ रोचक तथ्य :-

भगवान शिव का कोई माता-पिता नही है ! उन्हें अनादि माना गया है ! मतलब, जो हमेशा से था ! जिसके जन्म की कोई तिथि नही !

कथक, भरत नाट्यम करते वक्त भगवान शिव की जो मूर्ति रखी जाती है, उसे नटराज कहते है !

किसी भी देवी-देवता की टूटी हुई मूर्ति की पूजा नही होती ! लेकिन शिवलिंग चाहे कितना भी टूट जाए फिर भी पूजा जाता है !

शंकर भगवान की एक बहन भी थी अमावरी ! जिसे माता पार्वती की जिद्द पर खुद महादेव ने अपनी माया से बनाया था !

भगवान शिव और माता पार्वती का १ ही पुत्र था ! जिसका नाम था ! कार्तिकेय..

(गणेश भगवान तो मां पार्वती ने अपने उबटन शरीर पर लगे लेप) से बनाए थे !

भगवान शिव ने गणेश जी का सिर इसलिए काटा था ! क्यो कि गणेश ने शिव को पार्वती से मिलने नही दियाथा ! उनकी मां पार्वती ने ऐसा करने के लिए बोला था !

भोले बाबा ने तांडव करने के बाद सनकादि के लिए चौदह बार डमरू बजाया था ! जिससे माहेश्वर सूत्र यानि संस्कृत व्याकरण का आधार प्रकट हुआ था !

शंकर भगवान पर कभी भी केतकी का फुल नही चढ़ाया जाता ! क्यों कि यह

ब्रह्मा जी के झूठ का गवाह बना था !

शिवलिंग पर बेलपत्र तो लगभग सभी चढ़ाते है ! लेकिन इसके लिए भी एक ख़ास सावधानी बरतनी पड़ती है, कि बिना जल के, बेलपत्र नही चढ़ाया जा सकता !

शंकर भगवान और शिवलिंग पर कभी भी शंख से जल नही चढ़ाया जाता ! क्यो कि शिव जी ने शंखचूड़ को अपने त्रिशूल से भस्म कर दिया था !* आपको बता दें, शंखचूड़ की हड्डियों से ही शंख बना था !

भगवान शिव के गले में जो सांप लिपटा रहता है ! उसका नाम है वासुकि है ! यह शेषनाग के बाद नागों का दूसरा राजा था ! भगवान शिव ने खुश होकर इसे गले में डालने का वरदान दिया था !

चंद्रमा को भगवान शिव की जटाओं में रहने का वरदान मिला हुआ है !

नंदी, जो शंकर भगवान का वाहन और उसके सभी शिव-गणों में सबसे ऊपर भी है ! वह असल में शिलाद ऋषि को वरदान में प्राप्त पुत्र था !

जो बाद में कठोर तप के कारण नंदी बना था !

गंगा भगवान शिव के सिर से क्यों बहती है ? देवी गंगा को जब धरती पर उतारने की सोची तो एक समस्या आई कि इनके वेग से तो भारी विनाश हो जाएगा ! तब शंकर भगवान को मनाया गया कि, पहले गंगा को अपनी ज़टाओं में बाँध लें, फिर अलग-अलग दिशाओं से धीरें-धीरें उन्हें धरती पर उतारें !

शंकर भगवान का शरीर नीला इसलिए पड़ा क्यों कि उन्होने हलाहल जहर पी लिया था ! दरअसल, समुंद्र मंथन के समय १४ चीजें निकली थी !

१३ चीजें तो असुरों और देवताओं ने आधी-आधी बाँट ली लेकिन हलाहल नाम का विष लेने को कोई तैयार नही था ! ये विष बहुत ही घातक था ! इसकी एक बूँद भी धरती पर बड़ी तबाही मचा सकती थी ! तब भगवान शिव ने इस विष को पीया था ! यही से उनका नाम पड़ा नीलकंठ !

भगवान शिव को संहार का देवता माना जाता है ! इसलिए कहते है, तीसरी आँख बंद ही रहे प्रभु की...

कंबोडिया-थाईलैंड के बीच तनाव से चीन को होगा फायदा

राजेश जैन

दक्षिण-पूर्व एशिया एक बार फिर अशांत है। कंबोडिया और थाईलैंड खतरनाक सीमा संघर्ष में उलझ गए हैं। अब तक 27 लोगों की मौत हो चुकी है और हजारों को अपने घर छोड़ने पड़े हैं।

इस बार भी विवाद की जड़ वही पुरानी है—प्रीह विहेयर मंदिर। हजारों साल पुराना यह मंदिर खमेर साम्राज्य की धरोहर है लेकिन इस पर मालिकाना दावा थाईलैंड और कंबोडिया दोनों करते हैं। 1962 में अंतरराष्ट्रीय न्यायालय ने इसे कंबोडिया का हिस्सा माना था पर थाईलैंड ने यह फैसला पूरी तरह स्वीकार नहीं किया।

वैसे भी 817 किलोमीटर लंबी थाई-कंबोडिया सीमा पर दशकों से विवाद चला आ रहा है। इसकी जड़ें फ्रांसीसी औपनिवेशिक काल के नक्शों में हैं। 1907 में बने नक्शों को थाईलैंड अब भी विवादित मानता है। कंबोडिया का कहना है कि प्रीह विहेयर और ता मुएन थोम जैसे ऐतिहासिक मंदिर उसके क्षेत्र में आते हैं, वहीं थाईलैंड इन्हें अपनी सांस्कृतिक विरासत मानता है।

2008 से 2011 के बीच इसी विवाद पर हुई झड़पों में 34 लोगों की मौत हो गई थी। 2025 की चिंगारी तब भड़की जब एक कंबोडियाई सैनिक की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। 24 जुलाई को हालात और बिगड़ गए जब ता मुएन थोम मंदिर के पास भारी गोलीबारी और हवाई हमले हुए। थाईलैंड का आरोप है कि कंबोडिया ने बीएम-21 रॉकेट लॉन्चर से पहले हमला किया। वहीं कंबोडिया का दावा है कि थाई सैनिकों ने बिना उकसावे के आक्रामकता दिखाई और हवाई हमले किए। फिलहाल थाईलैंड ने सीमाएं सील कर दी हैं और कंबोडिया ने भी थाईलैंड से आने वाले आयात—जैसे फल, सब्ज़ियां, गैस और फिल्मों—पर रोक लगा दी है।

चीन को मिलेगा यह फायदा

कंबोडिया पहले से ही चीन के प्रभाव में है। पूर्व प्रधानमंत्री हुन सेन और वर्तमान प्रधानमंत्री हुन मानेट दोनों को चीन का भरोसेमंद साथी माना जाता है। यही वजह है कि चीन इस पूरे घटनाक्रम में शांत तो है पर उसकी मौजूदगी हर स्तर पर महसूस की जा सकती है।

दक्षिण कंबोडिया में चीन द्वारा विकसित किया गया रीम नौसैनिक अड्डा अमेरिका और भारत जैसे देशों के लिए चिंता का विषय है। माना जाता है कि ऐसे ठिकाने दक्षिण चीन सागर से लेकर हिंद महासागर तक चीन की सामरिक पहुंच बढ़ा सकते हैं।

थाईलैंड लंबे समय से अमेरिका का रणनीतिक साझेदार रहा है और कोबरा गोल्ड जैसे संयुक्त सैन्य अभ्यासों में अमेरिका के साथ बढ़-चढ़कर हिस्सा लेता है। लेकिन बीते वर्षों में चीन से उसके आर्थिक और सैन्य रिश्ते भी गहरे हुए हैं। अगर चीन इस टकराव में मध्यस्थ बनता है तो वह अमेरिका के प्रभाव को तो काफी हद तक कम कर ही सकता है, साथ ही दोनों देशों के साथ व्यापार और निवेश को भी अपनी शर्तों पर आगे बढ़ा सकता है।

भारत की चिंताएं और कूटनीतिक चुनौती

भारत के लिए यह संघर्ष कई वजहों से चिंता का कारण है। थाईलैंड 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' का मुख्य प्रवेश द्वार है जबकि कंबोडिया 'मेकोंग-गंगा सहयोग' में एक अहम साझेदार।

भारत ने दोनों देशों में डिजिटल कनेक्टिविटी, सांस्कृतिक परियोजनाओं और रणनीतिक संवादों पर काम किया है। लेकिन अगर दोनों देशों के बीच यह तनाव लंबा चलता है, तो भारत की कूटनीतिक स्थिति अस्थिर हो सकती है।

भारत को संतुलन साधना होगा—दोनों पक्षों से संबंध बनाए रखते हुए अपने हितों की रक्षा करनी होगी। भारत को चाहिए कि वह आसियान के साथ संवाद और सहयोग को और मजबूत करे। मेकोंग-गंगा सहयोग के तहत थाईलैंड और कंबोडिया दोनों में सांस्कृतिक और विकास परियोजनाओं को गति दे।

क्षेत्रीय मंचों का उपयोग करके सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था पर संवाद बढ़ाना भारत की प्राथमिकता होनी चाहिए। साथ ही भारत को स्पष्ट संदेश देना चाहिए कि क्षेत्रीय स्थिरता में उसका सीधा हित है और वह किसी भी बाहरी दबाव के खिलाफ अपने साझेदारों के साथ खड़ा रहेगा।

अमेरिका, भारत और संयुक्त राष्ट्र की नजर

कंबोडिया ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद से आपात बैठक की मांग की है और मामला फिर से अंतरराष्ट्रीय न्यायालय में ले जाने की तैयारी कर रहा है। लेकिन थाईलैंड ने अंतरराष्ट्रीय न्यायालय के अधिकार को नकारते हुए सिर्फ द्विपक्षीय बातचीत पर जोर दिया है। इसके लिए उसने पहले युद्धविराम की शर्त रखी है।

इस तनाव को सुलझाने के लिए अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थता की भूमिका अहम हो सकती है। अगर चीन इस संघर्ष में 'शांति-निर्माता' बनकर उभरता है, तो वह दक्षिण-पूर्व एशिया में अमेरिका की साख को और कमजोर करेगा और भारत की रणनीतिक स्थिति पर भी असर डालेगा।

गजा अकाल मृत्यु के कगार पर, दुनिया खामोश नहीं रह सकती: मुस्लिम रहनुमाओं ने हुकूमत से त्वरित एक्शन का आग्रह किया

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। प्रमुख भारतीय मुस्लिम संगठनों, धार्मिक विद्वानों और नागरिक समाज समूहों ने प्रेस क्लब ऑफ इंडिया में एक प्रेस कांफ्रेंस आयोजित किया। कांफ्रेंस में संयुक्त बयान जारी कर गजा में गहराते मानवीय संकट पर गंभीर चिंता व्यक्त की गयी। उन्होंने भारत सरकार से इजरायल की जारी आक्रामकता को रोकने में अधिक दृढ़ और नैतिक रूप से साहसी भूमिका निभाने का आह्वान किया।

मीडिया को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने गजा की स्थिति को ₹अभूतपूर्व मानवीय आपदा₹ बताया तथा चेतावनी दी कि अकाल अत्यंत सन्निकट है जो विनाश का कारण बनेगा।₹ उन्होंने कहा, ₹गज़ा भूख से मर रहा है। समय पर कार्रवाई न करना एक ऐतिहासिक अपराध होगा।₹

उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि मानवीय सहायता अवरुद्ध होने और गजा के बुनियादी ढांचे के नष्ट होने के कारण 20 लाख से अधिक निवासी बड़े पैमाने पर भुखमरी, चिकित्सा प्रणालियों के पतन और अनिवार्य सेवाओं के पूर्ण अभाव का सामना कर रहे हैं। 90 फीसद से ज़्यादा अस्पताल और स्वास्थ्य सेवा केंद्र बमबारी से तबाह हो चुके हैं या बंद पड़े हैं। पूरे मोहल्ले मिट गए हैं। परिवार टुकड़ों पर गुज़ारा कर रहे हैं। नवजात शिशु ईंधन की कमी के कारण इनक्यूबेटरों में मर रहे हैं। डॉक्टर बिना एनेस्थीसिया के सर्जरी कर रहे हैं। हर बुनियादी मानवीय व्यवस्था जैसे - स्वास्थ्य, शिक्षा, पोषण, स्वच्छता - ध्वस्त हो गई है। यह आत्मरक्षा नहीं है बल्कि लोगों का व्यवस्थित विनाश है।

वक्ताओं ने संयुक्त राष्ट्र में भारत के हालिया रुख को सराहा, जिसमें उसके स्थायी प्रतिनिधि द्वारा युद्ध विराम का आह्वान किया गया है और मानवीय आपातकाल पर जोर दिया गया है।₹हम संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपने देश के हालिया बयान का स्वागत करते हैं जिसमें एक स्वतंत्र फ़िलिस्तीनी राज्य के प्रति हमारी प्रतिबद्धता और तत्काल युद्धविराम के आह्वान की पुष्टि की गई है। यह एक सकारात्मक कदम है।"

उन्होंने आग्रह किया कि भारत सरकार चिंता व्यक्त करने से आगे बढ़कर वैश्विक नैतिक नेतृत्व की भूमिका निभाए। ₹भारत को नागरिकों पर अंधाधुंध बमबारी, अस्पतालों और स्कूलों को निशाना बनाने और पूरी आबादी को सामूहिक दंड देने की निंदा करनी चाहिए। शब्द मायने रखते हैं, लेकिन कर्म उससे भी ज़्यादा मायने रखते हैं। भारत के पास इस नरसंहार की निंदा करने और युद्ध अपराधियों को जवाबदेह ठहराने में अंतर्राष्ट्रीय समुदाय का नेतृत्व करने के लिए ऐतिहासिक प्रतिष्ठा और कूटनीतिक क्षमता दोनों है।"

उन्होंने मानवीय गलियारों को तुरंत खोलने और भारत से इज़राइल के साथ सभी सैन्य और रणनीतिक सहयोग तब तक स्थगित करने का आह्वान किया जब तक कि आक्रमण समाप्त न हो जाए। ₹भारत को उत्पीड़ितों के साथ खड़े होने की एक गौरवशाली विरासत मिली है। हमें अब निर्णायक कार्रवाई करके उस विरासत का सम्मान करना चाहिए। जब नरसंहार हमारी आँखों के सामने हो रहा हो, तो चुप्पी और तटस्थता कोई विकल्प नहीं हैं।"

गुरु रंधावा ने लॉन्च किया 24Hs फ़िटनेस: भारत की फ़िटनेस संस्कृति को नए सिरे से परिभाषित करने वाला एक नए ज़माने का आंदोलन

मुख्य संवाददाता

दिल्ली, भारत एक क्रांतिकारी फ़िटनेस ब्रांड के अनावरण का गवाह बना, जब संगीत जगत के दिग्गज गुरु रंधावा ने 24Hs फ़िटनेस के लॉन्च के साथ वेलनेस के क्षेत्र में कदम रखा। नई दिल्ली के होटल ली मेरिडियन में आयोजित इस विशेष कार्यक्रम का समापन प्रमुख मीडिया पेशेवरों, डिजिटल क्रिएटर्स और फ़िटनेस उद्योग के सदस्यों द्वारा किया गया - जिसने भारत में फ़िटनेस आंदोलन की अगली पीढ़ी की आधिकारिक शुरुआत को चिह्नित किया।

इस ब्रांड के मूल में एक साहसिक दृष्टिकोण निहित है - भारत में फ़िटनेस के अनुभव को नए सिरे से परिभाषित करना। इमर्सिव जिम डिज़ाइन, विशिष्ट प्रशिक्षण क्षेत्र और बेबाक सौंदर्यबोध के साथ, 24Hs FITNESS एक ऐसा वर्कआउट वातावरण प्रदान करने का वादा करता है जो न केवल प्रभावशाली होगा, बल्कि भावनात्मक और दृश्यात्मक रूप से भी प्रेरणादायक होगा।

इस कार्यक्रम में एक सिनेमा टीज़र, मंच पर एक प्रभावशाली 'लोगो रिवील' और आगामी जिमों के विस्तृत 3D वॉकथ्रू शामिल थे—जो मेहमानों को ब्रांड की डिज़ाइन भाषा, ऊर्जा और प्रीमियम माहौल का प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करते हैं। नेतृत्व टीम ने इस अवसर का उपयोग ब्रांड के पीछे के दर्शन को साझा करने के लिए किया, जिसमें नए युग के भारतीय उपभोक्ताओं के लिए महत्वाकांक्षी फिटनेस डिज़ाइन बनाने के अपने मिशन पर ज़ोर दिया गया।

पहला 24Hs FITNESS जिम दिल्ली के किरण नगर में खुलेगा, जो ब्रांड की पहली शुरुआत होगी। हालाँकि, प्रमुख सुविधा पश्चिम विहार में बन रही है, जहाँ ब्रांड का कॉर्पोरेट मुख्यालय होगा और यह सभी फ्रैंचाइज़ी संचालन, नवाचार और रणनीतिक विस्तार के लिए केंद्रीय केंद्र के रूप में काम करेगा।

ब्रांड की दिल्ली-एनसीआर विस्तार योजना के तहत अशोक विहार में एक और प्रीमियम आउटलेट जल्द ही पूरा होने वाला है और जल्द ही शुरू हो जाएगा। दो अतिरिक्त स्थानों पर अभी अंतिम चर्चा चल रही है।

फ्रैंचाइज़ी के लिए पूछताछ आधिकारिक तौर पर जनवरी 2026 में शुरू होगी, क्योंकि ब्रांड का लक्ष्य 2030 तक पूरे भारत में 100 प्रीमियम जिम शुरू करना है, जो महानगरीय शहरों और उच्च-विकासशील टियर 2 बाजारों, दोनों को कवर करेंगे।

इस कार्यक्रम में बोलते हुए, सह-संस्थापक और ब्रांड एंबेसडर, गुरु रंधावा ने कहा:

"फिटनेस मेरे लिए व्यक्तिगत है। 24Hs फिटनेस के साथ, मैंने उस जुनून को एक ऐसे क्षेत्र में डाला है जो आज की पीढ़ी की भाषा बोलता है। यह एक जिम से कहीं बढ़कर है—यह एक अनुभव है, एक जीवनशैली है, और यह इस बात का प्रतिबिंब है कि हम कौन हैं जब हम हर दिन बेहतर बनने का फैसला करते हैं।"

24Hs FITNESS के सह-संस्थापक, क्षीज़ कोहली और अमित कौशिक, वर्षों के व्यावसायिक नेतृत्व और रणनीतिक कार्यान्वयन का अनुभव रखते हैं।

क्षीज़ कोहली ने कहा, ₹हम सिर्फ़ फ़िटनेस सेंटर ही नहीं बना रहे हैं—हम वेलनेस के क्षेत्र में भारत के अगले सांस्कृतिक आंदोलन को आकार दे रहे हैं।₹

अमित कौशिक ने आगे कहा, ₹हमारा ध्यान ऐसे बेहतरीन फ़िटनेस अनुभव प्रदान करने पर है जो निरंतरता, गर्व और व्यक्तिगत विकास को प्रेरित करें।₹

इस ब्रांड का नेतृत्व मुख्य रूप से मुख्य संचालन अधिकारी, जसविंदर सिंह कर रहे हैं, जिनके पास फ्रैंचाइज़ी विकास, जिम संचालन और ब्रांड निर्माण में गहन उद्योग अनुभव है।

प्रविधिका समापन समारोह एवं वक़्फ़ संशोधन अधिनियम 2025 पर पैनल चर्चा हुई

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली : भारतीय जनता पार्टी, दिल्ली प्रदेश (कानूनी प्रकोष्ठ) द्वारा आयोजित प्रतिष्ठित विधिक इंटर्नशिप कार्यक्रम प्रविधिका का समापन समारोह उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम को दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा एवं विधायक अरविंदर सिंह लवली ने सम्बोधित किया।

सचदेवा ने अपने सम्बोधन में कहा की पार्टी में आज लीगल प्रकोष्ठ एवं अधिवक्ता साथियों का विशेष महत्व है क्योंकि समाज के अन्य क्षेत्रों की तरह राजनीति में भी सोशल मीडिया, मीडिया का हस्ताक्षेप बहुत बढ़ गया है, चुनाव आयोग की प्रक्रिया भी कानूनी रूप से जटिल हुई है अतः लीगल प्रकोष्ठ का पार्टी के दैनिक कामकाज से जुड़ गया है और यह हर्ष का विषय है लीगल प्रकोष्ठ सुगमता से पार्टी गतिविधियां चलाने में सहयोग दे रहा है।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य कानून के छात्रों एवं युवा विधिज्ञों को विधायी प्रक्रियाओं, कानूनी अनुसंधान, जनहित याचिकाओं एवं नीति-निर्माण में व्यावहारिक अनुभव प्रदान करना था, जिससे उनमें राष्ट्रीय सेवा और संवैधानिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास हो।

इस अवसर पर अनेक प्रख्यात विधि विशेषज्ञों एवं राजनीतिक हस्तियों की गरिमामयी उपस्थिति रही, जिनमें वरिष्ठ अधिवक्ता एवं सांसद महेश जेठमलानी, संविधान विशेषज्ञ डॉ. बी. रामास्वामी, कानूनी लेखिका एवं सामाजिक कार्यकर्ता मोनिका अरोड़ा भी सम्मिलित हुए। सभी वक्ताओं ने युवाओं को लोकतांत्रिक मूल्यों एवं संवैधानिक मर्यादाओं के संरक्षण के लिए प्रेरित किया।

समारोह की प्रमुख विशेषता वक़्फ़ संशोधन अधिनियम 2025 पर आयोजित पैनल चर्चा रही। वरिष्ठ अधिवक्ता अनिल सोनी, वरिष्ठ अधिवक्ता मोनिका अरोड़ा एवं अधिवक्ता डॉ. बी. रामास्वामी ने अधिनियम के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, पारदर्शिता की चुनौतियों एवं विधिक सुधार की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

उन्होंने संशोधन अधिनियम का स्वागत करते हुए इसे दीर्घकालिक विधिक असंतुलन को ठीक करने वाला आवश्यक कदम बताया।

पैनल ने स्पष्ट किया कि पूर्ववर्ती कानूनों के तहत वक़्फ़ बोर्डों को असीमित अधिकार प्राप्त थे, जिससे कई बार बिना उचित प्रक्रिया के निजी संपत्तियों को वक़्फ़ घोषित कर दिया जाता था। नया अधिनियम नोटिस, सुनवाई और आपत्ति दर्ज कराने जैसे आवश्यक प्रक्रियात्मक प्रावधानों के माध्यम से पारदर्शिता, न्यायिक निगरानी और संपत्ति अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करता है।

वक्ताओं ने यह भी स्पष्ट किया कि यह कानून वक़्फ़ विरोधी नहीं, बल्कि न्याय समर्थक है, जो समानता, निष्पक्षता और कानूनी उत्तरदायित्व को बढ़ावा देता है। यह संशोधन धार्मिक संपत्ति विवादों में पक्षपात को रोकते हुए धर्मनिरपेक्षता को सुदृढ़ करता है।

प्रविधिका इंटर्नशिप के माध्यम से प्रतिभागियों को अनुसंधान परियोजनाओं, विशेषज्ञ सत्रों और फील्ड विज़िट्स के माध्यम से व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हुआ। समारोह का समापन इंटर्न्स के सम्मान एवं धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ, जिसमें कानून के माध्यम से एक न्यायपूर्ण एवं समतामूलक समाज के निर्माण की प्रतिबद्धता को दोहराया गया।

वैदेही सांस्कृतिक महिला मण्डल और कुटुंब प्रबोधन द्वारा तीज उत्सव धूमधाम से मनाया गया

मुख्य संवाददाता

दिल्ली, मयूर विहार फेज-1 स्थित राम मंदिर पॉकेट-1 का परिसर परंपरा, भक्ति और स्त्री शक्ति के रंगों से सराबोर हो गया, जब श्री राम मंदिर की समर्पित महिला शाखा वैदेही ग्रुप ने कुटुंब प्रबोधन के साथ मिलकर एक भव्य और हृदयस्पर्शी तीज उत्सव का आयोजन किया।

एक सांस्कृतिक पहल के रूप में शुरू हुआ यह उत्सव जल्द ही एकता, अभिव्यक्ति और सशक्तिकरण के आंदोलन में बदल गया। इस शाम में न केवल मयूर विहार के पॉकेट-1 से पॉकेट-5 तक, बल्कि दिल्ली के अन्य हिस्सों से भी महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, जिससे मंदिर प्रांगण भक्ति और सामुदायिक बंधन के जीवंत संगम में बदल गया।

इस उत्सव की असली खूबसूरती इस बात में झलक रही थी कि कैसे गृहिणियाँ और आम महिलाएँ आत्मविश्वास और शालीनता के साथ मंच पर उतरीं और भक्ति नृत्य, भावपूर्ण नाटक और कलात्मक अभिव्यक्तियाँ प्रस्तुत कीं जो लंबे समय से बंद दरवाजों के पीछे छिपी हुई थीं। मंच एक ऐसा स्थान बन गया जहाँ आंतरिक प्रतिभा का दिव्य ऊर्जा से मिलन हुआ।

इस प्रभावशाली कार्यक्रम की संकल्पना और क्रियान्वयन चार उत्साही महिलाओं - दीपा शर्मा, प्रीति चुघ, मंजू सोलंकी और सीमा शर्मा ने सोच-समझकर किया और उनके नेतृत्व ने कार्यक्रम के हर पहलू में भव्यता और भावुकता भर दी।

तीज उत्सव की सफलता श्री राम मंदिर संचालन समिति, श्री सनातन धर्म सभा, मयूर विहार, दिल्ली की प्रबंध समिति के बिना शर्त समर्थन और सहयोग में निहित थी। अध्यक्ष आर. पी. अग्रवाल और सहसचिव अनुराग अग्रवाल के मार्गदर्शन, आशीर्वाद और सक्रिय प्रोत्साहन ने इस उत्सव को वास्तव में दिव्य और यादगार बना दिया। प्रबंध समिति के अन्य सदस्यों, संरक्षक गोविंद सिंह पवार एवं भगवान दास मिडा, महासचिव कृष्ण बलदेव शर्मा, कोषाध्यक्ष अनिल सचदेवा और भंडारी रणवीर सिंह रावत ने भी इस आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हवा में गूंजते मंत्रों और मुस्कुराते चेहरों पर रोशनी की चमक के साथ, यह आयोजन न केवल यादें, बल्कि एक संदेश भी छोड़ गया - कि जब परंपराएँ एकजुटता से मिलती हैं, तो चमत्कार घटित होते हैं।

वैदेही समूह के राम मंदिर ने एक बार फिर साबित कर दिया कि आस्था से प्रेरित सामुदायिक प्रयास साधारण शामों को असाधारण विरासतों में बदल सकते हैं।

मेट्रो का सपना टूट गया है, ओडिशा के लोगों के साथ विश्वासघात हुआ है : नबीन पटनायक

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : राज्य सरकार ने भुवनेश्वर रेलवे परियोजना का कार्य आदेश रद्द कर दिया है। मेट्रो परियोजना के रद्द होने से राजनीतिक दलों से लेकर आम जनता में भी असंतोष फैल गया है। इस पर बीजद सुप्रीमो नवीन पटनायक ने कहा कि यह फैसला पूरी तरह से आश्चर्यजनक है। ओडिशा के लोगों के साथ विश्वासघात हुआ है।

नवीन पटनायक ने सोशल मीडिया पर कहा, मुझे यह जानकर बहुत दुख हुआ है कि भाजपा के नेतृत्व वाली ओडिशा सरकार ने भुवनेश्वर मेट्रो रेल का ठेका रद्द कर दिया है। भुवनेश्वर को एक विश्वस्तरीय शहर के रूप में विकसित करना हमेशा से हमारा सपना रहा है। हम विश्वस्तरीय खेल अवसंरचना विकसित करने, प्रमुख अंतरराष्ट्रीय आयोजनों की मेजबानी करने, सुगम आधुनिक परिवहन प्रदान करने और मंदिरों के शहर को विश्वस्तरीय शहर बनाने के लिए आईटी पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। भुवनेश्वर मेट्रो रेल परियोजना शहरी परिवहन में बसों और अन्य कनेक्टिविटी को शामिल करके शहर की गतिशीलता को एक नया रूप देती। इससे भीड़भाड़ कम होती। हमने परियोजना के पहले चरण के लिए 2027 की समय सीमा तय की थी। उन्होंने आगे कहा, दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन (डीएमआरसी) द्वारा ठेकेदारों को जारी किए गए नोटिस से अब पता चलता है कि ओडिशा सरकार ने भुवनेश्वर मेट्रो रेल परियोजना को रद्द कर दिया है। डबल इंजन सरकार ने मेट्रो रेल जैसी महत्वपूर्ण परियोजना को रद्द करके ओडिशा के लोगों के साथ विश्वासघात किया है। डबल इंजन का यह चौंकाने वाला फैसला शहर को 10 साल पीछे ले जाएगा।

आस्था से आगे: नाग पंचमी का वैज्ञानिक और मानवीय पक्ष

[नाग पंचमी : श्रद्धा, संरक्षण और सह-अस्तित्व की सीख]
[नाग पंचमी : धार्मिक आस्था से जैव विविधता तक की यात्रा]

भारत की पावन भूमि, जहां संस्कृति और आध्यात्मिकता का अनूठा संगम हर पर्व में जीवंत हो उठता है, वहां नाग पंचमी का पर्व एक ऐसी मणि है जो प्रकृति, परंपरा और मानवता के बीच गहरा तालमेल बिठाती है। यह पर्व, जो श्रावण मास की शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को मनाया जाता है, केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि प्रकृति के प्रति सम्मान, जैविक संतुलन और सह-अस्तित्व की भावना का जीवंत प्रतीक है। जब सावन की हरियाली धरती को नया जीवन देती है, तब नाग पंचमी का यह उत्सव हमें याद दिलाता है कि हमारी संस्कृति में हर जीव, चाहे वह सर्प हो या कोई अन्य प्राणी, इस सृष्टि की विशाल शृंखला का अभिन्न अंग है। यह पर्व न केवल हमारे धार्मिक विश्वासों को दर्शाता है, बल्कि सामाजिक एकता, पर्यावरण संरक्षण और नैतिक मूल्यों को भी जीवंत करता है।

नाग पंचमी का महत्व भारतीय संस्कृति के प्राचीन ग्रंथों, पुराणों और शास्त्रों में गहराई से समाया हुआ है। स्कंद पुराण, भविष्य पुराण और नारद पुराण जैसे ग्रंथों में इस पर्व का उल्लेख मिलता है, जहां नागों को प्रकृति की रक्षा करने वाली शक्ति और धरती की उर्वरता का प्रतीक माना गया है। भारत में नागों को केवल एक सर्प नहीं, बल्कि दैवीय शक्ति का प्रतीक माना जाता है। भगवान शिव के गले में लिपटे वासुकि नाग और भगवान विष्णु के शेषनाग पर शयन करने की कथाएँ इस बात का प्रमाण हैं कि भारतीय संस्कृति में नागों को ईश्वरीय और आध्यात्मिक महत्व प्राप्त है। यह विश्वास कि नागदेवता का आशीर्वाद सुख-समृद्धि, रोगमुक्ति और संतान सुख प्रदान करता है, इस पर्व को और भी विशेष बनाता है।

नाग पंचमी की परंपराएँ भारतीय समाज की गहरी संवेदनशीलता और प्रकृति के प्रति आदर को दर्शाती हैं। इस दिन लोग अपने घरों के मुख्य द्वार, दीवारों या पूजा स्थलों पर गेरुए से नाग की आकृति बनाते हैं। मिट्टी, गोबर या धातु से बनी नाग प्रतिमाओं की पूजा दूध, लड्डू, फूल, हल्दी और कुमकुम से की जाती है। कुछ क्षेत्रों में जीवित सर्पों को भी दूध चढ़ाने की प्रथा है, हालांकि आधुनिक समय में यह प्रथा विवादास्पद रही है। विशेषज्ञों के अनुसार, सर्प दूध नहीं पीते, और यह प्रथा उनके लिए हानिकारक हो सकती है। फिर भी, इस प्रथा के पीछे की भावना प्रकृति और जीव-जंतुओं के प्रति सम्मान और संरक्षण की है। ग्रामीण भारत में, जहां खेती और भूमि से गहरा नाता है, नागों को धरती की उर्वरता और जल संरक्षण का प्रतीक माना जाता है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के अनुसार, सर्प खेतों में चूहों जैसे कीटों को नियंत्रित कर फसलों की रक्षा करते हैं, जिससे प्रत्यक्ष रूप से 20-30% तक फसल नुकसान को कम करने में मदद मिलती है। इस प्रकार, नाग पंचमी का पर्व न केवल धार्मिक, बल्कि वैज्ञानिक और पर्यावरणीय महत्व भी रखता है।

महाभारत में वर्णित एक कथा इस पर्व की ऐतिहासिक और धार्मिक पृष्ठभूमि को और गहराई देती है। कहा जाता है कि महर्षि जनमेजय ने अपने पिता परीक्षित की मृत्यु का बदला लेने के लिए सर्प यज्ञ का आयोजन किया, जिसमें सभी सर्पों का विनाश होने वाला था। लेकिन आस्तिक मुनि ने अपनी तपस्या और बुद्धिमत्ता से इस यज्ञ को पंचमी तिथि पर रोक दिया, जिससे सर्पों की रक्षा हुई। इस घटना के स्मरण में नाग पंचमी को सर्पों के संरक्षण और अहिंसा का प्रतीक माना गया। यह कथा हमें करुणा, सहिष्णुता और सभी जीवों के प्रति सम्मान की सीख देती है। यह पर्व हमें याद दिलाता है कि हिंसा और विनाश के बजाय सह-अस्तित्व और संरक्षण ही सृष्टि के लिए हितकारी है।

नाग पंचमी का सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व भी कम नहीं है। यह पर्व विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में सामुदायिक एकता का प्रतीक है। गाँवों में इस दिन मेलों का आयोजन होता है, जहां लोकगीत, नृत्य और नाटक आयोजित किए जाते हैं। महिलाएँ और बच्चे इस उत्सव में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते हैं। विवाहित महिलाएँ अपने परिवार की सुख-शांति और संतान की रक्षा के लिए व्रत रखती हैं और प्राचीन लोककथाएँ सुनती-सुनाती हैं। इन कथाओं में 'ससुराल गई नागिन' और 'सांवरा नाग' जैसी कहानियाँ शामिल हैं, जो न केवल मनोरंजन करती हैं, बल्कि नैतिकता, पारिवारिक जिम्मेदारियों और प्रकृति के प्रति सम्मान की सीख भी देती हैं। ये परंपराएँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी संस्कृति के हस्तांतरण का माध्यम बनती हैं।

आधुनिक समय में, जब विज्ञान और तर्क का बोलबाला है, नाग पंचमी जैसे पर्व हमें यह सोचने पर मजबूर करते हैं कि परंपराएँ केवल रूढ़ियाँ नहीं, बल्कि उनमें गहरे वैज्ञानिक और सामाजिक संदेश छिपे हैं। विश्व वन्यजीव कोष (डब्ल्यूडब्ल्यूएफ) की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में सर्पों की 300 से अधिक प्रजातियाँ पाई जाती हैं, जिनमें से कई प्रजातियाँ लुप्तप्राय हैं। अज्ञानता और भय के कारण सर्पों को मार दिया जाता है, जिससे जैव विविधता को नुकसान पहुँचता है। नाग पंचमी जैसे पर्व इस मानसिकता को बदलने का अवसर प्रदान करते हैं। यह हमें सिखाता है कि सर्प न तो हमारे शत्रु हैं और न ही अंधविश्वास का प्रतीक, बल्कि वे प्रकृति के संरक्षक हैं, जिनके बिना पारिस्थितिकी तंत्र असंतुलित हो सकता है।

नाग पंचमी का एक और महत्वपूर्ण पहलू पर्यावरणीय जागरूकता है। यह पर्व हमें यह समझाता है कि मनुष्य इस सृष्टि का केंद्र नहीं, बल्कि प्रकृति का एक हिस्सा है। जब हम सर्प जैसे जीवों को पूजा और संरक्षण के योग्य मानते हैं, तब हम यह स्वीकार करते हैं कि हर प्राणी का इस धरती पर एक उद्देश्य है। पर्यावरण मंत्रालय की 2023 की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में जैव विविधता के संरक्षण के लिए सर्पों का संरक्षण आवश्यक है, क्योंकि वे कीटों और छोटे कृन्तकों को नियंत्रित कर खाद्य श्रृंखला को संतुलित रखते हैं। इस प्रकार, नाग पंचमी का पर्व हमें पर्यावरण संरक्षण और जैव विविधता के महत्व को समझने की प्रेरणा देता है।

आज के दौर में, जब शहरीकरण और आधुनिकता ने हमें प्रकृति से दूर कर दिया है, नाग पंचमी जैसे पर्व हमें अपनी जड़ों से जोड़ते हैं। यह हमें सिखाता है कि प्रकृति और जीव-जंतुओं के साथ सामंजस्य में रहकर ही मानव समाज दीर्घकालिक समृद्धि और शांति की ओर बढ़ सकता है। यदि हम इस पर्व को केवल दूध चढ़ाने या व्रत रखने तक सीमित न रखकर इसके व्यापक संदेश को समझें, तो यह हमें अधिक संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिक बना सकता है। नाग पंचमी हमें यह सिखाती है कि हर जीव का सम्मान और संरक्षण ही वह मार्ग है, जो हमें प्रकृति के साथ तादात्म्य स्थापित करने की ओर ले जाता है। यह पर्व केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक और पर्यावरणीय आह्वान है, जो हमें प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारी को याद दिलाता है और एक संतुलित, समरस और समृद्ध समाज की नींव रखता है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

देश का नाम रोशन करने वाले सहारा श्री सुब्रत राय की कपूर थला चौराहे पर लगाई जाए प्रतिमा : राकेश मणि

सुनील बाजपेई

कानपुर। जिन्होंने बहुत परिश्रम के साथ व्यावसायिक और औद्योगिक प्रगति के जरिए लाखों लोगों को रोजगार दिया। जिन्होंने देश का भी नाम रोशन किया। सहारा ग्रुप के प्रमुख रहे उन सहारा श्री सुब्रत राय सहारा की प्रतिमा अवश्य ही लगाई जानी चाहिए।

यह मांग करते हुए यहां हिंद मजदूर किसान पंचायत के राष्ट्रीय सचिव वरिष्ठ श्रमिक नेता राकेश मणि पांडेय ने कहा कि सुब्रत रॉय जैसे साधारण व्यक्ति ने अपनी कठिन परिस्थितियों को पार करते हुए देश और विदेश में अपना स्थान ही नहीं बनाया बल्कि प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से 50 लाख से अधिक लोगो को रोजगार प्रदान किया।

चर्चित मजदूर नेता राकेश मणि पांडेय ने बताया कि सहारा परिवार ने एक साथ एक दिन में एक लाख सहारा क्यू शॉप सेन्टर स्थापित करके कीर्तिमान स्थापित किया था ,जिसमे कई लाख लोग प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ गए थे। उसे भी सरकार की बदनियती ने बंद करा दिया और लोग सड़क पर आ गए। सहारा परिवार ने हजारों लोगो को दुकाने बना कर आवंटित किया था जिससे लोग रोजगार में लगे थे। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार आये दिन उनके ऑफिस और कार्यालयों को सील करके कर्मचारियों और उपभोक्ताओं के तमाम हित लाभों को स्थगित और समाप्त करने की दिशा में कार्य कर रही है।

देश और समाज के हित में उपलब्धियां को सम्मानित करने के लिए सहारा श्री सुब्रत रॉय की प्रतिमा लखनऊ में कपूरथला चौराहे पर लगाए जाने की जोरदार मांग करते हुए वरिष्ठ समय नेता राकेश मणि पांडे ने कहा कि कपूरथला चौराहे पर सहाराश्री की प्रतिमा का लगाया जाना आज के परिप्रेक्ष्य में अति आवश्यक है। क्योंकि ऐसा करने

से देश और समाज के हित में लोगों को प्रेरणा भी मिलेगी।

राकेश मणि पांडेय ने यह भी आरोप लगाया कि सरकार की अदुरदर्शिता के फलस्वरूप आज लाखों लोग बेरोजगार हैं। उन्होंने बताया कि उनकी ग्रेच्युटी, किये गए कार्य का वेतन, बोनस, भविष्य निधि अंशदान आदि का भुगतान सरकार द्वारा ईडी के जरिए करवाई गई अनुचित कार्रवाई की वजह से ही प्रभावित हुआ।

श्रमिक नेता राकेश मणि पांडे ने बातचीत में आरोप लगाया कि सरकार ने न्यायालय और ईडी की मदद से करोंडों रुपये की वसूली और उगाही सहारा इण्डिया से कर चुकी है, जबकि उसको लेने वाला कोई सामने नहीं आ रहा है।

उन्होंने यह भी बताया कि दूसरी तरफ ईडी और सरकार की कार्यवाही के चलते सहारा अपने सभी उद्योग धंधे और संस्थाओं को बंद करती जा रही है।

श्रमिक नेता राकेश मणि पांडेय ने एक सवाल के जवाब में कहा कि सहारा इण्डिया ने भारत की गरिमा को बनाने के लिए इंग्लैंड में भारतीय के नाम से होटल खरीदा और उसका संचालन भी किया। मुम्बई में अंग्रेज़ों द्वारा आधिपत्य होटल को अपने कब्जे में लिया।

उन्होंने बताया कि इस संस्था का उद्देश्य 26 जनवरी और 15 अगस्त को राष्ट्रीय त्यौहार के रूप में मनाने का कार्य किया जाता रहा है।

अनेक सफल आंदोलन के अगुआ कर रहे राकेश मणि पांडेय ने दावा किया कि सहारा इण्डिया परिवार ने लखनऊ और दूसरे क्षेत्रों में तमाम सामाजिक कार्यो के साथ-साथ शमशान घाट स्थल को एक स्मरणीय स्मारक स्थल के रूप में स्थापित किया है। साथ ही कई चौराहों को स्थापित और उनका बेहतर सुन्दरीकरण भी किया है।

राकेश कुमार पांडे ने कहा कि इसीलिए तमाम अच्छे कार्यो के साथ-साथ 50 लाख लोगों को नौकरी और अन्य सामाजिक कार्यों को दृष्टिगत रखते हुए नगर निगम द्वारा सुब्रत रॉय की प्रतिमा कपूरथला चौराहे पर अवश्य ही लगायी जानी चाहिए।

श्रमिक नेता राकेश मणि पांडेय ने कहा कि जब बिना कोई सामाजिक कार्य किये लोगों को ठगने और लूटने वाले तमाम निठल्ले नेताओं, धनपशुओं, अपराधियों की मूर्तियां विभिन्न स्थानों पर लगायी गयी हैं, तो फिर इसके विपरीत अभी तक लाखों लोगों को रोजगार देने वाले सहारा श्री की प्रतिमा नहीं लगाया जाना बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्होंने कहा कि जबकि सहारा इण्डिया परिवार केवल सरकार के कोपभाजन का शिकार हुआ है।

सहारा परिवार से वसूले गए करोड़ों रुपये को कर्मचारियों को किये गए कार्य का वेतन, ग्रेच्युटी, बोनस, भविष्य निधि अंशदान का भुगतान, राज्य कर्मचारी बीमा अंशदान का भुगतान किए जाने की भी मांग करते हुए हिंद मजदूर किसान पंचायत के राष्ट्रीय सचिव मजदूर नेता राकेश पांडे ने यह भी आरोप लगाया कि सरकार लाखों कर्मचारियों को बेरोजगार करके किंचित रूप से कुछ लोगों को खुश करने का प्रयास कर रही है ,जो दुर्भाग्यपूर्ण है। सरकार को न्याय व्यवस्था के तहत वास्तविक न्याय देना चाहिए।

भारत की पासपोर्ट इंडेक्स में बड़ी छलांग- विकसित भारत का ग्लोबल मिशन

हाल ही में २२ जुलाई २०२५ को हेनली पासपोर्ट इंडेक्स-२०२५ जारी किया गया है, और यह हमारे देश के लिए गौरवान्वित करने वाली बात है कि हम इस इंडेक्स में 77 वें स्थान पर पहुंच गए हैं। पाठकों को बताता चलूं कि हेनले पासपोर्ट इंडेक्स दुनिया के सभी पासपोर्टों को उन गंतव्यों की संख्या के आधार पर रैंक करता है, जहाँ उनके धारक बिना पूर्व वीज़ा के प्रवेश कर सकते हैं। बहरहाल,भारत के लिए यह उपलब्धि अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि इसलिए है, भारत इस रैंकिंग में आठ पायदान ऊपर चढ़ा है और अच्छी बात यह है कि भारतीय पासपोर्ट धारकों को दो नये गंतव्यों में वीज़ा मुक्त प्रवेश मिला है, और भारतीय अब 59 देशों में बिना वीजा या वीजा ऑन अराइवल (वीओए) के यात्रा कर सकते हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि भारत की पासपोर्ट रैंकिंग में जबरदस्त सुधार हम सभी के लिए फक्र की बात है। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि इससे पहले भारतीय 58 देशों में ही 'वीजा फ्री' यात्रा कर सकते थे, वहीं अब भारतीय 59 देशों में 'वीजा फ्री' यात्रा कर सकेंगे। वास्तव में, हाल ही में जो पासपोर्ट इंडेक्स जारी किया गया है, इस इंडेक्स के माध्यम से ये देखा जाता है किस देश का पासपोर्ट धारक कितने देशों में 'फ्री वीजा' के साथ या 'वीजा ऑन अराइवल' की सुविधा के साथ जा सकता है। गौरतलब है कि इसमें मलेशिया, इंडोनेशिया, मालदीव और थाईलैंड जैसे एशिया के विभिन्न पॉपुलर टूरिस्ट देश शामिल हैं। इतना ही नहीं, श्रीलंका, मकाऊ(चीन)और म्यांमार जैसे देश भी वीजा ऑन अराइवल की सुविधा दे रहे हैं इसका फायदा यह हो रहा है कि अब भारतीय इन स्थानों पर आसानी से घूम सकते हैं, यात्रा कर सकते हैं। आसान शब्दों में कहें तो इस सुविधा (वीजा फ्री/वीजा ऑन अराइवल की सुविधा) के कारण अब भारतीय नागरिकों के लिए अंतरराष्ट्रीय यात्राओं के और भी रास्ते खुल गए हैं। यदि हम यहां पर भारतीयों के लिए वीजा फ्री या वीजा ऑन अराइवल देशों की बात करें तो इनमें क्रमश: अंगोला, बारबाडोस, भूटान, बोलिविया, ब्रिटिश वर्जिन आइलैंड्स, बुरुंडी, कंबोडिया, केप वर्डे आइलैंड्स, कोमोरो आइलैंड्स, कुक आइलैंड्स, जिबूती, डोमिनिका, इथियोपिया, फिजी, ग्रेनेडा, गिनी-बिसाऊ, हैती, ईरान, जमैका, जॉर्डन, कजाकिस्तान, केन्या, किरीबाती, लाओस, मेडागास्कर, मार्शल आइलैंड्स, मॉरीशस, माइक्रोनेशिया, मंगोलिया, मॉन्टसेराट, मोज़ाम्बिक, नामीबिया, नेपाल, न्यूई, पलाउ आइलैंड्स, कतर, रवांडा, समोआ, सेनेगल, सेशेल्स, सिएरा लियोन, सोमालिया, सेंट किट्स एंड नेविस, सेंट लूसिया, सेंट विंसेंट एंड द ग्रेनेडाइन्स, तंजानिया, तिमोर-लेस्ते, त्रिनिदाद और टोबैगो, तुवालु, वानुआतु और ज़िम्बाब्वे जैसे देश शामिल हैं। बहरहाल, दिलचस्प बात ये है अब वीजा-फ्री ट्रैवल की सूची में अब सिर्फ यूरोपीय देश ही टॉप पर नहीं हैं। एशियाई देश भी अब इस लिस्ट में आगे हैं। उल्लेखनीय है कि सिंगापुर इस समय पहले नंबर पर है, जहां के नागरिक 193 देशों में बिना वीजा के जा सकते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो हेनले पासपोर्ट इंडेक्स के अनुसार, सिंगापुर दुनिया भर में 193 गंतव्यों तक वीज़ा-मुक्त पहुँच के साथ पहले स्थान पर है। सिंगापुर को दुनिया भर के २२७ में से 193 गंतव्यों तक वीज़ा-मुक्त पहुँच प्राप्त है।हाल ही में जारी इस इंडेक्स से यह पता चला है कि एशियाई देश इस सूची में शीर्ष पर बने हुए हैं, जबकि जापान और दक्षिण कोरिया भी इसी स्थान पर हैं। यहां यह गौरतलब है कि हेनले पासपोर्ट इंडेक्स 199 देशों के पासपोर्ट की २२७ गंतव्यों तक वीज़ा-मुक्त पहुँच की तुलना करता है। यह इंडेक्स अंतर्राष्ट्रीय वायु परिवहन संघ (आइएटीए) के विशिष्ट टिमैटिक डेटा के आधार पर तैयार किया गया है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि जापान और साउथ कोरिया, जैसे देशों के पासपोर्ट धारक 190 देशों में, 7 यूरोपीय देशों जैसे कि जर्मनी, फ्रांस और स्पेन के नागरिक 189 देशों में, न्यूज़ीलैंड, ग्रीस और स्विट्ज़रलैंड (पांचवें नंबर) के पासपोर्ट धारकों को 188 देशों में वीजा-फ्री ट्रैवल की सुविधा है।यूके इस लिस्ट में छठे नंबर पर है, जिससे इसके नागरिक 186 देशों में बिना वीजा यात्रा कर सकते हैं। वहीं अमेरिका दसवें नंबर पर पहुंच गया है, जिसके नागरिक 182 देशों में वीजा-फ्री यात्रा कर सकते हैं। मध्य पूर्व का संयुक्त अरब अमीरात वैश्विक पासपोर्ट रैंकिंग में शीर्ष 10 में जगह बनाने वाला एकमात्र देश है, जो अब आठवें स्थान पर है। वहीं, इस लिस्ट में सबसे नीचे(106 वां स्थान) अफगानिस्तान का नाम है, जिसके नागरिक सिर्फ २६ देशों में बिना वीजा के जा सकते हैं, लेकिन यह पिछले साल की तुलना में दो कम है।सीरिया 105वें स्थान पर है (२७ गंतव्यों के साथ), जबकि इराक(31 गंतव्यों के साथ) 104वें स्थान पर है। दुनिया में कमजोर पासपोर्ट की सूची(हाल ही में जारी सूची के अनुसार) में इन दो देशों के अलावा क्रमश: यमन, इराक़, पाकिस्तान, सोमालिया, नेपाल, लीबिया,फ़िलिस्तीनी क्षेत्र, बांग्लादेश, दक्षिणी कोरिया,इरिट्रिया, सूडान और श्रीलंका शामिल हैं। पाठकों को बताता चलूं कि अब ब्रिटेन और अमेरिका की रैंकिंग एक-एक पायदान नीचे खिसक गई है,जो आज से 11-12 साल पहले दुनिया के सबसे ताकतवर पासपोर्ट देश माने जाते रहे हैं। अब बात करते हैं कि आखिर ताकतवर पासपोर्ट से आशय क्या है ? तो पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि ताकतवर पासपोर्ट का मतलब है, वह पासपोर्ट होता है ,जिसकी सहायता से कोई व्यक्ति बिना वीजा के(विदाउट वीजा) दुनिया के कई देशों में यात्रा कर सके। दूसरे शब्दों में कहें तो, यह एक ऐसा पासपोर्ट होता है, जो किसी व्यक्ति को अधिक यात्रा स्वतंत्रता और सुविधाएं प्रदान करता है। दरअसल, ताकतवर पासपोर्ट को आमतौर पर 'वैश्विक गतिशीलता'(ग्लोबल मोबिलिटी) के संदर्भ में मापा जाता है। इसका मतलब है कि कोई भी व्यक्ति बिना वीजा के कितने देशों में जा सकता है। वास्तव में, जिस देश के पासपोर्ट से कोई व्यक्ति बिना वीजा के जितने ज्यादा देशों में जा सकता है, वह पासपोर्ट उतना ही ताकतवर माना जाता है।अब अमेरिका और ब्रिटेन की पासपोर्ट रैंकिंग में गिरावट दर्ज की गई है तो इसका कारण यहां की सख्त और 'इमिग्रेशन पॉलिसी' है। पाठकों को बताता चलूं कि दरअसल सुरक्षा संबंधी चिंताएं, आर्थिक चुनौतियां और कमजोर देशों के साथ सीमित राजनयिक संबंध आदि, विश्व के देशों में कठोर या सख्त वीजा नीतियों को जन्म दे सकते हैं, जिससे नागरिकों की यात्रा की स्वतंत्रता सीमित हो सकती है। इतना ही नहीं, आर्थिक चुनौतियां, सीमित राजनयिक संबंध और नकारात्मक मीडिया कवरेज भी इन नीतियों में योगदान दे सकते हैं, जिससे नागरिकों के लिए स्वतंत्र रूप से यात्रा करना अधिक कठिन हो जाता है। वास्तव में, राजनीतिक अस्थिरता संघर्ष, गृहयुद्ध और अस्थिर सरकारें भी बहुत हद तक विभिन्न देशों के राजनयिक संबंधों और यात्रा समझौतों में बाधाएं उत्पन्न करती हैं, जिनका असर पासपोर्ट की ताकत पर कहीं न कहीं पड़ता है। अंत में यही कहूंगा कि भारत ने हेनले पासपोर्ट इंडेक्स २०२५ में अपनी अब तक की सबसे बड़ी छलांग लगाई है, जो हमारे देश की बढ़ती कूटनीतिक ताकत का प्रतीक है। सच तो यह है कि यह हमारे देश के बढ़ते वैश्विक सम्मान के साथ ही साथ साल २०४७ तक भारत को विकसित भारत बनाने का एक ग्लोबल मिशन है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा

अयोध्या में परिवार द्वारा सड़क पर फेंकी 80 वर्षीय बुजुर्ग महिला की मौत- सीसीटीवी वीडियो देखकर देश का दिल पसीज़ा- मैं भी रो पड़ा-

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर पूरी दुनियाँ में भारत ही एक ऐसा संस्कारी सभ्यता का प्रतीक सर्वधर्म समभाव महा मानवों का देश है जहां, माता-पिता बड़े बुजुर्गों की आज्ञा को ऊपरवाले की रज़ा व आदेश मानने वालों का यह देश आज पाश्चात्य वैचारिकता की ओर बढ़ गया है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र जब तीन दिन पहले प्रभु श्रीराम की नगरी अयोध्या में एक 80 वर्षीय बुजुर्ग माँ के परिजनों द्वारा उसे सड़क के कोने में फेंक कर भागने व 25 जुलाई 2025 को उन्हें अस्पताल में बचाने की काफी कोशिशें के बावजूद उसकी मृत्यु हो गई, मां को फेंक भागने का वीडियो देखकर भारत के संस्कारी लोगोंका दिल पसीज गया, मैं भी सीसीटीवी वीडियो देखकर रो पड़ा, फेंकने वाले संभ्रात परिवार के दो महिला व एक पुरुष दिखाई दे रहे हैं, जो इलेक्ट्रॉनिक ऑटो से आए थे, बुजुर्ग मां को एक ने दोनों हाथो व दूसरे ने दोनों पैरों से पड़कर रोड किनारे फेक कर उसको चादर डालकर भाग गए। मेरा मानना है यह सीसीटीवी वीडियो देखकर सबका खून खौल उठा होगा। संसद का मानसून सत्र चल रहा है, जो 21 अगस्त 2025 तक चलेगा। इस आर्टिकल के माध्यम से मैं केंद्र सरकार व सभी पार्टीयों के सभी राज्यसभा व लोकसभा सांसदों से हृदयपूर्वक मार्मिक अपील करना चाहता हूं कि, ताबतोड़ इसी हफ्ते संसद में माता-पिता सीनियर सिटीजन (अत्याचार अपमान व दुर्व्यवहार निवारण) विधायक 2025 बनाकर पेश करें, व सभी मिलकर लोकसभा में 543/0 व राज्यसभा में 245/0 के रिकॉर्ड तोड़ समर्थन से यह बिल पारित कर पूरे विश्व में एक उदाहरण पेश करें, तो भारत सहित पूरी दुनियाँ खुश हो जाएगी। मैं युवाओं से कहना चाहूंगा कि आज भारत भले ही युवाराष्ट्र है, परंतु एक रिपोर्ट के अनुसार 25 वर्षों के बाद भारत में 60 प्लस की संख्या अधिक होगी, जिसमें आज के सभी युवा शामिल होंगे। आज बुजुर्गों की स्थिति यह है कि 77 पेर्सेंट बुजुर्गों के साथ भावनात्मक मौखिक दुर्व्यवहार, 24 पेर्सेंट से शारीरिक दुर्व्यवहार होता है, तो 27 पेर्सेंट आर्थिक शोषण व 50 पेर्सेंट की उपेक्षा होती है।आज वर्तमान कानून

माता-पिता वरिष्ठ नागरिक भरण पोषण (संशोधित) अधिनियम 2019 व 2007 में बनाए गए माता-पिता तथा वरिष्ठ नागरिकों के भरण पोषण अधिनियम नाकाफी सिद्ध हो रहे हैं, क्योंकि आज करीब 12 पेर्सेंट बुजुर्गों को ही इन कानूनों के बारे में जानकारी है, ऐसी रिपोर्ट कहती है। मेरी अपील है कि मेरे द्वारा सुझाए गए उपरोक्त विधेयक में हत्या सामूहिक रेप व देशद्रोह की धाराओं के समतुल्य सजा का प्रावधान करना जरूरी हो गया है। अयोध्या एसपी का इंटरव्यू मैंने देखा तो पता चला पूरी तेज रफ्तार से जांच जारी है।महिला का फोटो जारी कर आरोपियों का पता बनाने बताने वालों के लिए इनाम की घोषणा की गई है। 25 किलोमीटर के दायरे में सीसीटीवी खंगाले जा रहे हैं अनेक पुलिस टीमें बनाई गई है, परंतु मेरा मानना है, आरोपी पकड़े जाने के बाद भी कानून की खामियों से शीघ्र ही जमानत व केस ट्रायल होने के बाद पूरी तरह छूट जाने की संभावना है, जिसका संज्ञान माननीय सभी सांसदों को लेना चाहिए, व सभी राज्यों को भी अपने-अपने स्तर पर एक सख्त कानून बनाने की जरूरत है।चूँकि रामनगरी अयोध्या में शर्मसार हुई मानवता, 80 वर्षीय बुजुर्ग महिला को संभावित परिवार वालों ने लावारिस फेंककर भागे, सीसीटीवी में कैद हुई हृदय विधायक घटना, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, भारत में बुजुर्गों का तिरस्कार कब खत्म होगा ? राम शर्मिंदा है, अयोध्या में संभावित परिवारजनों द्वारा सड़क पर माँ को फेंक भगा निकले, माँ दम तोड़ गई।

साथियों बात अगर हम 24 जुलाई 2025 को 1.50 एएम अयोध्या में हुई माँ को लावारिस फेंक भागने की घटना की करें तो, आज पूरे देश में अयोध्या की चर्चा हो रही है, लेकिन आज अयोध्या की चर्चा भगवान राम के लिए नहीं बल्कि एक बुजुर्ग महिला की वजह से हो रही है, जिसे कुछ लोगों ने अयोध्या में लावारिस छोड़ दिया और कुछ ही घंटे बाद उसकी मौत हो गई। ये घटना 23 जुलाई की देर रात 1 बजकर 50 मिनट की है। जब अयोध्या के दर्शन नगर मेडिकल कॉलेज के पास रात के अंधेरे में संभवतःपरिवार वाले 80 वर्ष की इस बुजुर्ग महिला को लेकर आए और उसे सड़क किनारे फेंककर चले गए। ये पूरी घटना सीसीटीवी में रिकॉर्ड हो गई। घटना का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है, जिसमें दो महिलाएं और एक पुरुष बुजुर्ग महिला को ई-रिक्शा से उतारकर वहां से जाते हुए दिखाई दे रहे हैं।अयोध्या के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (नगर) ने कहा, अब तक की जांच में पता चला है कि बुजुर्ग महिला को उसके रिश्तेदार देर रात ई-रिक्शा में लाए थे, और फिर उसे सड़क किनारे छोड़कर चले गए। सूचना मिलने के बाद, पुलिस महिला को इलाज के लिए मेडिकल कॉलेज ले गई, लेकिन इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई।

साथियों बात अगर हमसीसीटीवी कैमरों व पुलिस जांच की करें तो, सीसीटीवी फुटेज में दिख रहा है कि बुजुर्ग महिला को ई-रिक्शा में लाकर सड़क किनारे छोड़ दिया गया। ई-रिक्शा में सवार लोग उसके ऊपर कंबल डालकर तुरंत वहां से चले गए।एसपी ने कहा कि सीसीटीवी फुटेज के जरिए दोषियों की पहचान और गिरफ्तारी के प्रयास जारी हैं। अभी तक करीब 25 किलोमीटर का दायरा सीसीटीवी के ज़रिए चेक कर लिया गया है जल्द ही ई रिक्शा चालक और परिजन का पता लगा लिया जाएगा जिस इलाके में ये वारदात हुई वहा के स्थानीय लोगो का कहना है कि ये इलाका सुल्तानपुर गोंडाबहराइच और अम्बेडकरनगर को जोड़ता है ऐसे में संभावना है कि यह लोग इन जिलो से भी आए होंगे, स्थानीय लोगो ने इस पूरे वारदात की अत्यंत कड़ी निंदा की है।

साथियों बात अगर हम साथियों बात अगर हम सूचीगत जातियों की सुरक्षा के लिए बनाए गए अनुसूचित जाति व जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम 2019 के समकक्ष माता-पिता बुजुर्गों के सम्मान के लिए कानून बनाने की करें तो जिस तरह सामाजिक सौहार्दपूर्णता समानता को कायम रखने के लिए स्ट्रासिटी (अमेंडेड) कानून 2019 बनाया गया है,जिसका डर हमेशा उपद्रवी लोगों में बना रहता है या फिर कभी नए फौजदारी अधिनियम 2023 में क्राइम को रोकने अनेक धाराओं का डर लोगों में बना हुआ है उसी तर्ज पर मेरा सुझाव है कि संसद के 21 अगस्त 2025 तक चलने वाले मानसून सत्र में माता-पिता बुजुर्गों के साथ होने वाली क्रूरता दुष्टपरिणाम द्रुव्यवहार अपमान व दुत्कार पर लगाम लगाने के लिए माता-पिता वह वरिष्ठ नागरिक (अत्याचार अपमान दुर्व्यवहार व्यवहार व दुराचार) विधेयक 2024 बनाकर पेश किया जाए जिसे सभी पार्टियों एक मत होकर 544/0 मतदान से पारित करेंगी ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है।

साथियों बात अगर हम प्रस्तावित कानून में माता-पिता व वरिष्ठ नागरिक (अत्याचार अपमान दुर्व्यवहार निवारण) विधेयक 2024 की जरूरत की करें तो, हमारा देश महान संतानों की भूमि है, यहां बच्चों से अपने बुजुर्ग माता-पिता की उचित देखभाल करने की अपेक्षा की जाती है, लेकिन पीड़ादायक है कि नैतिक मूल्यों में इस कदर गिरावट आ गई है कि अपना सुख-चैन जिन बच्चों के लिए माता-पिता त्याग कर जीवन खत्म कर देते हैं, वही बच्चे उन्हें बुढ़ापे में दो जून की रोटी और मोहब्बत के लिए तरसा रहे हैं।

साथियों बात अगर हम माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण पोषण व कल्याण अधिनियम 2019 की करें तो, प्रावधान-धारा 2 डी के तहत इन्हें मिलेगा फायदा, जन्मदाता माता-पिता, दत्तक संतान ग्रहण करने वाले, सौतेले माता और पिता-धारा 2 (जी) उनके लिए जिनके बच्चे नहीं-अधिनियम की ये धारा उनके लिए हैं, ऐसे में उनके भरण पोषण की जिम्मेदारी वे संबंधी उठाएंगे जो उनकी संपत्ति के हकदार हैं।

साथियों बात अगर हम माता-पिता वरिष्ठ नागरिक भरण पोषण (संशोधित) अधिनियम 2019 को बनाने की जरूरत की करें तो, अपने ही देश, समाज और घर परिवार में बेगाने होते जा रहे बुजुर्गों की स्थिति पर उच्चतम न्यायालय ने भी चिंता व्यक्त की है. शीर्ष अदालत ने दिसंबर, 2018 में केंद्र और राज्य सरकारों को निर्देश दिया था कि बुजुर्गों के हितों की रक्षा के लिए 2007 में बनाये गये माता पिता और वरिष्ठ नागरिक भरण पोषण कानून के प्रावधानों का सख्ती से पालन किया जाए।

हयुंडई इन्स्टेर ईवी के मजबूती का यूरो एनसीएपी क्रैश टेस्ट में खुलासा, इन 4 कमियों से नहीं मिल पाई 5-स्टार सेफ्टी रेटिंग

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी आज अपना जन्मदिन मना रहे हैं। धोनी को कारों और बाइक्स का काफी ज्यादा शौक है और दुनिया की कई बेहतरीन कारें उनके गैराज में शामिल हैं। कौन सी पांच सबसे बेहतरीन कारें महेंद्र सिंह धोनी के गैराज में खड़ी हैं। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान या कैप्टन कूल के नाम से पहचाने जाने वाले महेंद्र सिंह धोनी आज अपना जन्मदिन (MS Dhoni Birthday) मना रहे हैं। उनको क्रिकेट के साथ ही कारों का भी काफी ज्यादा शौक है। धोनी के गैराज में वैसे तो कई कारें खड़ी हुई हैं, लेकिन कौन सी पांच ऐसी बेहतरीन कारें हैं जिनमें धोनी अक्सर सफर करते हुए नजर आते हैं। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Jeep Grand Cherokee TrackHawk

महेंद्र सिंह धोनी को अमेरिकी वाहन निर्माता जीप की ग्रैंड चिरोकी की ट्रैकहॉक काफी पसंद है। इस एसयूवी को अपने ताकतवर इंजन और परफॉर्मेंस के लिए जाना जाता है। इसके साथ ही इसमें ज्यादा जगह के साथ अग्रेसिव स्टाइल भी मिलता है। एसयूवी में 6.2 लीटर की क्षमता का वी8 पेट्रोल इंजन मिलता है।

Mercedes Benz G 63 AMG

मर्सिडीज बेंज की ओर से ऑफर की जाने वाली Mercedes Benz G 63 AMG भी धोनी के गैराज में शामिल एक बेहतरीन एसयूवी है। देश के कई बॉलीवुड एक्टर और व्यापारियों के पास भी इस एसयूवी को देखा जा सकता है। इसमें चार लीटर का ट्विन टर्बो वी8 पेट्रोल इंजन मिलता है।

Nissan Jonga

महेंद्र सिंह धोनी की कार कलेक्शन में Nissan Jonga भी शामिल है। विंटेज और दमदार गाड़ी के तौर पर इसकी दुनियाभर में अलग पहचान है। इसमें भी चार लीटर की क्षमता का वी8 इंजन मिलता है। रिपोर्ट्स के मुताबिक धोनी ने इस गाड़ी को अपनी कलेक्शन में 2019 में शामिल किया था।

Hummer H2

अमेरिकी सेना की पसंदीदा गाड़ी हम्वी से बनी हमर भी धोनी के गैराज में शामिल एक बेहतरीन एसयूवी है। धोनी के पास Hummer H2 है जिसमें 6.2 लीटर की क्षमता का वी8 इंजन मिलता है। धोनी को अक्सर इस एसयूवी में सफर करते हुए देखा जाता है।

Citroen Basalt

महेंद्र सिंह धोनी हाल में ही सिट्रॉएन की बेसाल्ट कूप एसयूवी में सफर करते हुए नजर आए हैं। उम्मीद है कि यह धोनी की कार कलेक्शन में शामिल सबसे नई गाड़ी है। हालांकि धोनी सिट्रॉएन के ब्रॉन्ड अंबेसडर भी हैं और उनको हाल में ही बेसाल्ट के ब्लैक एडिशन में सफर करते हुए देखा गया था।

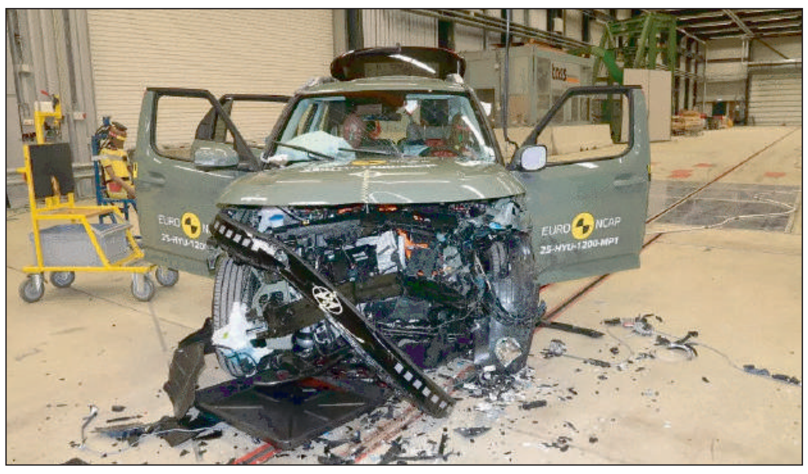

2025 रिनॉल्ट ट्राइबर की लॉन्च डेट फाइनल, अर्टिगा को टक्कर देगी नई फैमिली एमपीवी

परिवहन विशेष न्यूज

रेनो की ओर से भारतीय बाजार में हैचबैक से लेकर एसयूवी सेगमेंट तक के वाहनों को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। निर्माता की ओर से बजट एमपीवी सेगमेंट में ऑफर की जाने वाली Renault Triber 2025 को लॉन्च करने की तैयारी हो रही है। इसे किस तारीख को किस तरह के बदलावों के साथ लॉन्च किया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। हैचबैक से लेकर एसयूवी तक ऑफर करने वाली प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Renault की ओर से जल्द ही नई गाड़ी को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। निर्माता की ओर से किस गाड़ी को कब तक लॉन्च किया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

लॉन्च होगी 2025 Renault Triber

रेनो की ओर से जल्द ही बजट एमपीवी सेगमेंट में 2025 Renault Triber को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। निर्माता की ओर से इस गाड़ी के लॉन्च की तारीख भी तय कर दी गई है।

कब होगी लॉन्च

निर्माता की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक 2025 Renault Triber को 23 जुलाई 2025 को लॉन्च किया जाएगा। इस एमपीवी में कई कॉस्मैटिक बदलावों को किया जाएगा। लेकिन इंजन में किसी भी तरह का बदलाव होने की उम्मीद कम है।

लॉन्च से पहले हो रही टेस्टिंग

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक हाल में एमपीवी के फेसलिफ्ट को सड़कों पर टेस्टिंग के दौरान फिर से देखा गया है। हालांकि इस यूनिट को भी पूरी तरह से ढंका गया था, लेकिन फिर भी इसके फ्रंट की कुछ जानकारी सामने आई है। इसमें नया बंपर, हेडलाइट और ग्रिल को दिया जाएगा। जिससे यह मौजूदा वर्जन के मुकाबले अलग नजर आएगी।

इंजन में नहीं होगा बदलाव

रिपोर्ट्स के मुताबिक रेनो की ओर से ट्राइबर एमपीवी के इंजन में किसी भी तरह का बदलाव नहीं किया जाएगा। इसमें मौजूदा इंजन को ही ऑफर किया जाएगा। फिलहाल इस एमपीवी में एक लीटर की क्षमता का इंजन दिया जाता है जिसके साथ मैनुअल और एएमटी ट्रांसमिशन को दिया जाता है। इस एमपीवी को पेट्रोल के साथ ही सीएनजी में भी ऑफर किया जाएगा।

किनसे है मुकाबला

रेनो की ओर से ट्राइबर को बजट एमपीवी सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा

भारी छूट के साथ घर लाएं मारुति सुजुकी की कारें!

भारत की प्रमुख वाहन निर्माता Maruti की ओर Arena डीलरशिप पर कई कारों को ऑफर किया जाता है। कंपनी की इन कारों को July 2025 में खरीदने पर कितना क्या ऑफर मिल रहे हैं। कैश डिस्काउंट एक्सचेंज बोनस और कॉर्पोरेट बोनस के तौर पर कितना डिस्काउंट ऑफर किया जा रहा है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में Maruti Arena डीलरशिप के जरिए कई बेहतरीन कारों की बिक्री की जाती है। अगर आप भी इस महीने कंपनी की किसी गाड़ी को Arena डीलरशिप से खरीदने का मन बना रहे हैं, तो July 2025 में किस तरह के Discount Offer दिए जा रहे हैं। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Maruti Swift

मारुति की ओर से हैचबैक सेगमेंट में स्विफ्ट की बिक्री की जाती है। इस गाड़ी पर इस महीने के दौरान सबसे ज्यादा ऑफर दिए जा रहे हैं। जानकारी के मुताबिक इसके पेट्रोल एएमटी वेरिएंट पर 1.10 लाख रुपये तक बचाए जा सकते हैं। इसके सीएनजी और पेट्रोल वेरिएंट्स पर भी इस महीने 1.05 लाख रुपये के ऑफर मिल रहे हैं।

Maruti Alto K10

मारुति की ओर से ऑल्टो के10 पर July 2025 में अधिकतम 67500 रुपये के ऑफर दिए जा रहे हैं। कंपनी ऑल्टो के10 के AMT वेरिएंट पर अधिकतम डिस्काउंट दिया जा रहा है। इसके अलावा मैनुअल ट्रांसमिशन के साथ इसे खरीदने पर इस महीने में 62500 रुपये तक की बचत की जा सकती है।

Maruti S-Presso

मारुति की एस प्रेसो कार पर भी July 2025 में अधिकतम 62500 रुपये के ऑफर दिए जा रहे हैं। इस महीने में इस गाड़ी के भी AMT वेरिएंट को खरीदने पर यह बचत की जा सकती है। इसके अलावा इसके मैनुअल पेट्रोल और सीएनजी वेरिएंट्स पर अधिकतम 57500 रुपये के डिस्काउंट का फायदा लिया जा सकता है।

Maruti Celerio

सेलेरियो पर मारुति की ओर से July महीने में अधिकतम 67500 रुपये के ऑफर दिए जा रहे हैं। सेलेरियो पर इस महीने में यह ऑफर AMT वेरिएंट पर दिया जा रहा है। इसके अलावा पेट्रोल मैनुअल और सीएनजी मैनुअल पर इस महीने 62500 रुपये के डिस्काउंट का फायदा दिया जा रहा है।

Maruti Wagon R

कंपनी की ओर से वैगन आर पर भी अधिकतम 1.05 लाख रुपये का डिस्काउंट दिया जा रहा है। वैगन आर पर July महीने में यह बचत LXI पेट्रोल मैनुअल और सीएजी वेरिएंट्स पर की जा सकती है।

Maruti Brezza

मारुति की ओर से कॉम्पैक्ट एसयूवी के तौर पर Brezza को लाया जाता है। कंपनी की इस गाड़ी को इस महीने में खरीदने पर अधिकतम 35 से 45 हजार रुपये बचाए जा सकते हैं।

Maruti Ertiga

मारुति की सात सीटों वाली अर्टिगा पर भी इस महीने निर्माता की ओर से 10 हजार रुपये की बचत का मौका दिया जा रहा है।

सिट्रोएन ई स्पेसटॉरेर : दमदार फीचर्स और जबरदस्त रेंज के साथ यह इलेक्ट्रिक MPV, क्या भारत में होगी लॉन्च?

परिवहन विशेष न्यूज

फ्रांस की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Citroen की ओर से भारतीय बाजार में हैचबैक से लेकर एसयूवी सेगमेंट तक के वाहनों को ऑफर किया जाता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक निर्माता की ओर से जल्द ही लग्जरी इलेक्ट्रिक एमपीवी सेगमेंट में नई गाड़ी के तौर पर Citroen e-Spacetourer को लॉन्च किया जा सकता है। इसमें कैसे फीचर्स मिलते हैं। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में हैचबैक से लेकर एसयूवी सेगमेंट तक के वाहनों को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक लग्जरी इलेक्ट्रिक एमपीवी सेगमेंट में सिट्रॉएन की ओर से नई गाड़ी को लॉन्च किया जा सकता है। यह Citroen e-Spacetourer नाम से आ सकती है। इसमें किस तरह के फीचर्स और रेंज को दिया जाता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

भारत आ सकती है Citroen e-Spacetourer

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक सिट्रॉएन की ओर से जल्द ही नई गाड़ी को लॉन्च किया जा सकता है। जानकारी के मुताबिक इसे इलेक्ट्रिक लग्जरी एमपीवी सेगमेंट में लाया जा सकता है। इस गाड़ी को दुनिया के कई देशों में Citroen e-Spacetourer नाम से ऑफर किया जाता है।

ईवी वर्जन होगा पेश

कई देशों में इसे ICE वर्जन में भी ऑफर किया जाता है। लेकिन भारत में इसे सिर्फ ईवी सेगमेंट में ही लाया जा सकता है। हांलाकि अभी निर्माता की ओर से इस बारे में किसी भी तरह की जानकारी नहीं दी गई है।

क्या है खासियत

Citroen e-Spacetourer में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जाता है। इसमें 16 इंच स्टील रिम व्हील, ऑटो हेडलाइट्स, ऑटो वाइपर, ब्लूटूथ टेलीफोन कनेक्टिविटी, वायरलेस मिरर स्क्रीन, टाइप सी चार्जिंग पोर्ट, 10 इंच एचडी स्क्रीन, चार स्पीकर, चार ट्विटर ऑडियो सिस्टम, एसी, इलेक्ट्रिक और हीटेड डोर मिरर, 10 इंच इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, रियर पार्किंग असिस्ट, ट्विन स्लाइडिंग रियर डोर, एबीएस, ईबीडी, क्रूज कंट्रोल, हिल स्टार्ट असिस्ट, आइसोफिक्स चाइल्ड एंकरेज, टीपीएमएस जैसे कई बेहतरीन फीचर्स दिए जाते हैं।

कितनी है रेंज

निर्माता की ओर से Citroen e-Spacetourer में 49 और 75 kWh की क्षमता की बैटरी के विकल्प दिए जाते हैं। जिससे इसे सिंगल चार्ज में 215 किलोमीटर से 455 किलोमीटर तक की रेंज दे सकती है।

कितनी होगी कीमत

निर्माता की ओर से अभी इसके लॉन्च को लेकर भी कोई जानकारी नहीं दी गई है। ऐसे में कीमत की जानकारी लॉन्च के बाद ही दी जा सकती है। फिलहाल इसे ब्रिटेन सहित कई यूरोपिय देशों में ऑफर किया जाता है। ब्रिटेन में इसकी कीमत 44.56 लाख रुपये से शुरू होती है और इसके टॉप वेरिएंट की कीमत 64.69 लाख रुपये तक है।

किनसे होगा मुकाबला

अगर इसे भारत में लॉन्च किया जाता है तो इसका बाजार में MG M9 से सीधा मुकाबला होगा। इसके अलावा इसे BYD eMAX7 और Kia Carnival जैसी लग्जरी एमपीवी से भी चुनौती मिल सकती है।

टोयोटा अर्बन क्रूजर हाईराइडर का प्रेस्टिीज पैकेज हुआ पेश, नई एक्सेसरीज से बेहतर होगी लुक

परिवहन विशेष न्यूज

देश की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Toyota की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से ऑफर की जाने वाली मिड साइज एसयूवी Toyota Urban Cruiser Hyryder के लिए नए Prestige Package को पेश कर दिया है। इस पैकेज में किस तरह की एक्सेसरीज को ऑफर किया जा रहा है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में हैचबैक से लेकर एसयूवी सेगमेंट में कई वाहनों को ऑफर करने वाली निर्माता Toyota की ओर से मिड साइज एसयूवी Toyota Urban Cruiser Hyryder के लिए Prestige Package को पेश कर दिया गया है। इस पैकेज में किस तरह की एक्सेसरी को दिया जा रहा है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

पेश हुआ Prestige Package

टोयोटा की अर्बन क्रूजर हाइराइडर एसयूवी को मिड साइज एसयूवी के तौर पर ऑफर किया जाता है। इस एसयूवी के लिए निर्माता की ओर से प्रेस्टिज पैकेज को पेश कर दिया है। इस पैकेज में कई एक्सेसरीज को ऑफर किया गया है।

कौन सी एक्सेसरीज को किया गया ऑफर

निर्माता की ओर से प्रेस्टिज पैकेज में 10 अतिरिक्त एक्सेसरीज को ऑफर किया गया है। जिसमें डोर वाइज़र – प्रीमियम एसएस इंसर्ट के साथ, हुड प्रतीक, रियर डोर लिड गार्निश, फेंडर गार्निश, बॉडी क्लैडिंग, फ्रंट बम्पर गार्निश, हेड लैंप गार्निश, रियर बम्पर गार्निश, रियर लैंप गार्निश – क्रोम और बैक डोर गार्निश को दिया गया है।

कैसे हैं फीचर्स

टोयोटा की ओर से एसयूवी में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जाता है। इसमें प्रोजेक्टर एलईडी लाइट्स, एलईडी डीआरएल, ऑटो हेडलाइट, एलईडी टेल लैंप, हाई माउंट स्टॉप लैंप, रूफ रेल, रियर विंडो वाइपर और वॉशर, शॉर्क फिन एंटीना, ड्यूल टोन इंटीरियर, एंबिएंट लाइट्स, नौ इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, एपल कार प्ले, एंड्राइड ऑटो, आर्किमिस ऑडियो सिस्टम, सात इंच इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, हेड-अप डिस्प्ले, क्रूज कंट्रोल, पैनोरमिक सनरूफ, वायरलेस चार्जर, ऑटो एसी, रियर एसी वेंट्स, फ्रंट वेंटिलेटिड सीट्स, पीएम 2.5 फिल्टर, की-लैस एंट्री जैसे फीचर्स दिए गए हैं।

कितनी है कीमत

टोयोटा अर्बन क्रूजर हाइराइडर की एक्स शोरूम कीमत 11.34 लाख रुपये से शुरू होती है। इसके टॉप वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत 20.19 लाख रुपये है।

किनसे होता है मुकाबला

Toyota की ओर से Hyryder को कंपनी चार मीटर से बड़ी एसयूवी के तौर पर ऑफर करती है। कंपनी की ओर से इस गाड़ी का बाजार में सीधा मुकाबला Kia Seltos, Hyundai Creta, Honda Elevate, Maruti Grand Vitara, Mahindra XUV 700, Scorpio N जैसी SUVs के साथ होता है।

कंप्यूटर विज्ञान से परे

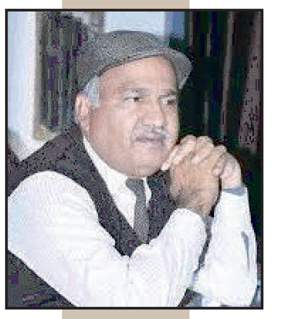

विजय गर्ग

जबकि कंप्यूटर विज्ञान हमारी डिजिटल दुनिया का आधार बनाता है, इसका वास्तविक प्रभाव ₹कंप्यूटर विज्ञान से परे₹ तक ही फैला हुआ है, लगभग हर दूसरे क्षेत्र में कल्पना करने योग्य और क्रांति ला रहा है। इस व्यापक प्रभाव को मोटे तौर पर कुछ प्रमुख लेंसों के माध्यम से समझा जा सकता है: 1.। एक सार्वभौमिक कौशल के रूप में कम्प्यूटेशनल सोच: कम्प्यूटेशनल सोच, जिसमें जटिल समस्याओं को तोड़ना, पैटर्न को पहचानना, विवरणों को नष्ट करना और एल्गोरिदम को डिजाइन करना शामिल है, केवल प्रोग्रामर के लिए नहीं है। यह विविध डोमेन पर लागू एक मूल्यवान कौशल है:

हेल्थकेयर: अस्पताल के वर्कफ़्लो का अनुकूलन, रोग निदान और उपचार, दवा की खोज और चिकित्सा इमेजिंग के लिए रोगी डेटा का विश्लेषण करना।

आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन: कुशल मार्गों को डिजाइन करना, आपूर्ति और मांग की भविष्यवाणी करना और इन्वेंट्री का प्रबंधन करना।

कृषि: रोपण, फसल रोटेशन, झुंड प्रबंधन, सिंचाई और कीट नियंत्रण को रणनीतिक करना।

अंतरिक्ष अन्वेषण: योजना मिशन, प्रक्षेपवक्र की गणना, और उपग्रह डेटा का विश्लेषण।

ऊर्जा उद्योग: ऊर्जा वितरण का अनुकूलन और हरित ऊर्जा समाधान डिजाइन करना।

मौसम विज्ञान: मौसम पैटर्न का अनुकरण और भविष्यवाणी करना।

आपराधिक न्याय: अपराध की रोकथाम के लिए फोरेंसिक जांच, कानूनी कार्यवाही और डेटा विश्लेषण।

पर्यावरण संरक्षण: पारिस्थितिक डेटा का विश्लेषण करना, वन्यजीवों पर नज़र रखना और आवास संरक्षण रणनीतियों का विकास करना।

वित्त और व्यापार खुफिया: डेटा-आधारित रणनीति, जोखिम मूल्यांकन और बाजार विश्लेषण।

शिक्षा: व्यक्तिगत शिक्षण उपकरण डिजाइन करना और विषयों में समस्या को हल करना। 2.। अन्य विज्ञान (और परे) में प्रत्यक्ष अनुप्रयोग: कंप्यूटर विज्ञान सिर्फ एक उपकरण नहीं है; यह वैज्ञानिक खोज और व्यावहारिक नवाचार में एक मौलिक भागीदार है:

जीव विज्ञान और चिकित्सा (कम्प्यूटेशनल जीव विज्ञान / जैव सूचना विज्ञान):

डेटा विश्लेषण: जीनोमिक्स (डीएनए अनुक्रमण), प्रोटीओमिक्स (प्रोटीन संरचनाएं), और जीन अभिव्यक्ति से बड़े पैमाने पर डेटासेट को संभालना।

मॉडलिंग और सिमुलेशन: अणुओं से लेकर अंगों तक उनके व्यवहार को समझने के लिए जैविक प्रणालियों के आभासी मॉडल बनाना।

ड्रग डिस्कवरी: यौगिकों की आभासी स्क्रीनिंग, दवा प्रभावकारिता और सुरक्षा की भविष्यवाणी।

मेडिकल इमेजिंग: एक्स-रे, सीटी स्कैन और एमआरआई को संसाधित और व्याख्या करना।

निदान और उपचार: रोग के पैटर्न की पहचान करना, स्वास्थ्य के मुद्दों की भविष्यवाणी करना और यहां तक कि रोबोट सर्जरी को सक्षम करना।

भौतिकी और रसायन विज्ञान: परमाणु और उप-परमाणु बातचीत, भौतिक विज्ञान और क्वांटम कंप्यूटिंग अनुसंधान के जटिल सिमुलेशन।

इंजीनियरिंग: जटिल प्रणालियों को डिजाइन करना और अनुकरण करना, प्रक्रियाओं का अनुकूलन करना और संरचनात्मक अखंडता का विश्लेषण करना।

सामाजिक विज्ञान (कम्प्यूटेशनल सामाजिक विज्ञान):

डिजिटल पैरों के निशान का विश्लेषण: सोशल मीडिया इंटरैक्शन और ऑनलाइन गतिविधियों के माध्यम से मानव व्यवहार, सामाजिक रुझानों और समूह की गतिशीलता को समझना।

नेटवर्क विश्लेषण: व्यक्तियों और समूहों और सूचना प्रवाह के बीच कनेक्शन का अध्ययन।

व्यवहार मॉडलिंग: विभिन्न संदर्भों (जैसे, अर्थशास्त्र, राय गतिशीलता) में मानव व्यवहार की भविष्यवाणी और अनुकरण करना।

सामाजिक चुनौतियों को संबोधित करना: गलत सूचना पर नज़र रखना, सामाजिक आंदोलनों को समझना और नीतिगत निर्णयों को सूचित करना।

मानविकी: डिजिटल मानविकी परियोजनाएं जिसमें पाठ विश्लेषण, ऐतिहासिक डेटा दृश्य और सांस्कृतिक विरासत संरक्षण शामिल हैं।

कला और डिजाइन: पीढ़ी कला, कम्प्यूटेशनल डिजाइन, एनीमेशन, और फिल्म में विशेष प्रभाव। 3। एआई और मशीन लर्निंग की परिवर्तनकारी शक्ति: आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, कंप्यूटर विज्ञान का एक उपक्षेत्र, गैर-सीएस डोमेन में विशेष रूप से प्रभावशाली है:

हेल्थकेयर: एआई-संचालित डायग्नोस्टिक्स, व्यक्तिगत उपचार योजनाएं, दवा विकास और रोग प्रकोप की भविष्यवाणी करना।

विपणन: उपभोक्ता व्यवहार, लक्षित विज्ञापन और एआई-संचालित चैटबॉट का विश्लेषण करना।

कृषि: फसल की पैदावार, सटीक खेती और पशुधन निगरानी का अनुकूलन।

भूविज्ञान: समुद्र-स्तरीय वृद्धि भविष्यवाणियों में सुधार करना, भूकंपीय डेटा का विश्लेषण करना और भूमिगत स्थितियों को समझना।

वित्त: एल्गोरिथम व्यापार, धोखाधड़ी का पता लगाने, और जोखिम प्रबंधन।

कानून: कानूनी अनुसंधान, अनुबंध विश्लेषण, और मामले के परिणामों की भविष्यवाणी।

शिक्षा: व्यक्तिगत शिक्षण मंच, बुद्धिमान ट्यूशन सिस्टम और स्वचालित ग्रेडिंग।

ग्राहक सेवा: एआई चैटबॉट और आभासी सहायक। संक्षेप में, कंप्यूटर विज्ञान, और विशेष रूप से कम्प्यूटेशनल सोच और एआई, उपकरणों का एक शक्तिशाली सेट और पारंपरिक अनुशासनात्मक सीमाओं को पार करने वाली समस्याओं के संपर्क का एक नया तरीका प्रदान करता है। यह हमें बड़ी मात्रा में डेटा को संसाधित करने, जटिल कार्यों को स्वचालित करने, जटिल प्रणालियों का अनुकरण करने और अंतर्दृष्टि को उजागर करने में सक्षम बनाता है जो पहले समाज के सभी पहलुओं में नवाचार और प्रगति को प्राप्त करना असंभव था।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

पायरिया कारण, लक्षण और उपाय

पायरिया (Pyorrhea), जिसे ₹दंत पिडकिकार₹ या ₹पुयस्वर दंत रोग₹ भी कहा जाता है, एक आम दंत रोग है जो मसूड़ों में सूजन, खून आना और बदबूदार मवाद निकलने जैसे लक्षणों के साथ प्रकट होता है। यह रोग धीरे-धीरे दाँतों की जड़ों और मसूड़ों को प्रभावित करता है और अगर समय पर इलाज न किया जाए तो दाँत ढीले होकर गिर भी सकते हैं।

पायरिया के कारण आयुर्वेद के अनुसार, पायरिया का मूल कारण त्रिदोषों – विशेष रूप से पित्त और कफ दोष – का असंतुलन होता है, जो दाँतों और मसूड़ों में दूषित रक्त और मवाद के रूप में परिलक्षित होता है।

आधुनिक दृष्टिकोण से देखें तो इसके प्रमुख कारण होता हैं

1.मुँह की स्वच्छता की कमी – नियमित ब्रश न करने या गलत तरीके से ब्रश करने से दाँतों के बीच में भोजन के कण फंस जाते हैं और बैक्टीरिया पनपने लगते हैं।

2.तम्बाकू, गुटखा और सिगरेट का सेवन – ये पदार्थ मसूड़ों को कमजोर बनाते हैं और संक्रमण को बढ़ावा देते हैं।

3.गलत खान-पान – अधिक तैलीय, मीठा और भारी भोजन पाचन को बिगाड़ता है जिससे शरीर में आम (toxins) उत्पन्न होता है, जो रक्त को दूषित करता है।

4.कब्ज और पाचन तंत्र की कमजोरी – जब पेट साफ नहीं होता, तब शरीर में विषैले तत्वों की मात्रा बढ़ जाती है और वह रक्त के माध्यम से मसूड़ों तक पहुँचते हैं।

5.अनुवांशिक प्रवृत्ति – यदि परिवार में किसी को पायरिया रहा हो तो अगली पीढ़ियों को भी इसकी संभावना अधिक रहती है।

6.विटामिन C की कमी – यह विटामिन मसूड़ों की स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। इसकी कमी से मसूड़ों में सूजन और रक्तस्राव शुरू हो जाता है।

पायरिया के लक्षण पायरिया धीरे-धीरे विकसित होता है, और इसके प्रारंभिक लक्षण इतने सामान्य होते हैं कि कई बार लोग उन्हें नज़रअंदाज़ कर देते हैं।

इसके प्रमुख लक्षण निम्नलिखित हैं

मसूड़ों से खून आना, विशेषकर ब्रश करने या कुछ कठोर खाने पर।

दाँतों के आसपास सफेद या पीले रंग का मवाद या पस आना।

मुँह से दुर्गंध आना, जिसे सामान्य टूथपेस्ट से दूर नहीं किया जा सकता।

मसूड़ों का फूलना, लाल होना या नर्म होना।

दाँतों में हिलने की प्रवृत्ति या दाँत का ढीला होना।

ठंडा-गर्म लगना या दाँतों में संवेदनशीलता।

भोजन चबाते समय दर्द या असहजता।

पायरिया के आयुर्वेदिक उपाय आयुर्वेद केवल लक्षणों का उपचार नहीं करता, बल्कि रोग की जड़ पर कार्य करता है। पायरिया के उपचार में शरीर के दूषित तत्वों को निकालना, पाचन तंत्र को मजबूत करना, मसूड़ों की शक्ति को पुनः प्राप्त कराना और नियमित देखभाल को अपनाना शामिल है।

1. दंत धावन (मंजन). आयुर्वेदिक पाउडर या मंजन से दिन में दो बार दाँतों को साफ करना चाहिए। कुछ प्रभावी सामग्री हैं!

त्रिफला चूर्ण
नीम की छाल
बबूल की छाल
लौंग चूर्ण
सेंधा नमक
काली मिर्च

इन सामग्रियों को मिलाकर बना हुआ मंजन दाँतों और मसूड़ों से रोगाणुओं को नष्ट करता है, सूजन घटाता है और मुँह को शुद्ध करता है।

2. कवल और गंडूष (तेल मुँह में भरना). तिल का तेल या नारियल तेल से प्रतिदिन ऑयल पुलिंग करना बहुत लाभकारी होता है। इससे मुँह की गंदगी बाहर निकलती है और मसूड़े मज़बूत होते हैं। इसके लिए सुबह खाली पेट 1 चम्मच तिल का तेल मुँह में लेकर 5-10 मिनट तक गरारे करें और फिर थूक दें। इसके बाद गुनगुने पानी से कुल्ला करें।

3. हर्बल काढ़ा और गरारे. हरड़, बहेड़ा, नीम की छाल और गिलोय से बना काढ़ा मसूड़ों की सूजन कम करता है और बैक्टीरिया को नष्ट करता है। इसे गुनगुना करके गरारे किए जा सकते हैं।

4. लौंग और इलायची का प्रयोग. लौंग में प्राकृतिक जीवाणुनाशक तत्व होते हैं। इसका तेल मसूड़ों पर लगाने से सूजन और दर्द में राहत मिलती है। इलायची से मुँह की दुर्गंध भी दूर होती है।

5. नीम का उपयोग. नीम की दातून प्राचीन समय से दंत रोगों के लिए प्रसिद्ध रही है। नीम की दातून से प्रतिदिन दाँत साफ करना पायरिया की रोकथाम में अत्यंत लाभकारी है।

6. आंतरिक शोधन और पाचन सुधार. चूंकि पायरिया का एक मुख्य कारण पाचन तंत्र की गड़बड़ी और कब्ज है, इसलिए इसके लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं!

त्रिफला चूर्ण रात में गर्म पानी के साथ लेना।

हल्का, सुपाच्य और फाइबर युक्त आहार।

हरी सब्जियाँ, मौसमी फल, छाछ, आंवला का सेवन।

7. आयुर्वेदिक औषधियाँ..कुछ विशिष्ट आयुर्वेदिक औषधियाँ पायरिया में लाभ देती हैं:

खदिरादि वटी – मसूड़ों की सूजन और दुर्गंध में लाभकारी।

त्रिफला गुग्गुलु – रक्त शुद्धिकरण और संक्रमण नाशक।

जीवनशैली में बदलाव...

भोजन के बाद कुल्ला अवश्य करें। पदार्थों को निकालने के लिए आयुर्वेद में इसका सम्पूर्ण और प्राकृतिक उपचार संभव है, जिसमें आहार, दिनचर्या, जड़ी-बूटियाँ और ध्यानपूर्वक मौखिक स्वच्छता का समावेश होता है। यदि इसका समय रहते इलाज न किया जाए तो यह न केवल दाँतों का नुकसान करता है, बल्कि शरीर के अन्य अंगों को भी प्रभावित कर सकता है।

स्वस्थ मसूड़े और मजबूत दाँत न केवल आत्मविश्वास बढ़ाते हैं, बल्कि संपूर्ण स्वास्थ्य के लिए भी अत्यंत आवश्यक हैं। अतः पायरिया से बचाव और उपचार के लिए आयुर्वेदिक दृष्टिकोण को अपनाएं और स्वस्थ जीवन की ओर अग्रसर हों।

आयुर्वेद अपनाएं स्वस्थ जीवन पाएं.

विदेशी चिकित्सा डिग्री: भारत का एनएमसी लगभग 9 लाख रुपये मान्यता शुल्क पेश करता है : विजय गर्ग

भारत के शीर्ष चिकित्सा शिक्षा नियामक नेशनल मेडिकल कमीशन विदेशी चिकित्सा योग्यता को पहचानने के लिए अपने नियमों में एक महत्वपूर्ण फेरबदल की घोषणा की है। एक प्रमुख प्रस्ताव विदेशी विश्वविद्यालयों या उनकी मान्यता एजेंसियों द्वारा भुगतान किए जाने वाले $ 10,000 (लगभग 8.6 लाख रुपये) शुल्क की शुरूआत है, प्रत्येक आवेदन के लिए भारत के मेडिकल कोर्स की आधिकारिक मान्यता की मांग की जाती है। यह संशोधन औपचारिक रूप से 16 जुलाई, 2025 को एक मसौदा गजट अधिसूचना के रूप में प्रकाशित किया गया था।

भारतीय उम्मीदवारों को सीधी राहत प्रदान करने वाले एक कदम में, एनएमसी ने एक साथ पहले से अनिवार्य 2.5 लाख रुपये आवेदन शुल्क को स्क्रैप करने का फैसला किया है जो व्यक्तिगत भारतीय डॉक्टरों को अपनी विदेशी चिकित्सा योग्यता की मान्यता के लिए भुगतान करना था। ₹एनएमसी भारत में उच्च चिकित्सा मानकों को सुनिश्चित करने के लिए ऐसा कर रहा है। शुल्क मान्यता प्रक्रिया को औपचारिक रूप देने और सुव्यवस्थित करने में मदद करता है और यह सुनिश्चित करता है कि केवल उच्च गुणवत्ता वाली विदेशी योग्यताओं को मान्यता दी जाए। यह दृष्टिकोण भारत को अंतरराष्ट्रीय वरीयता के साथ संरेखित करता है, जहां अमेरिका, कनाडा और यूके जैसे देशों में समान मान्यता शुल्क आम है।

यह नीति अनुमानित 20,000 से 25,000 भारतीय छात्रों को सीधे प्रभावित करती है जो सालाना विदेशों में चिकित्सा डिग्री हासिल करते हैं, अक्सर भारत में सीमित एमबीबीएस सीटों के लिए तीव्र प्रतिस्पर्धा के कारण रूस, चीन, जॉर्जिया और किर्गिस्तान जैसे गंतव्यों का चयन करते हैं। जबकि व्यक्तिगत शुल्क को हटाने से स्नातकों को लौटने के लिए एक वित्तीय बाधा कम हो जाती है, विदेशी संस्थानों पर $ 10,000 शुल्क लगाने से संभावित रूप से ट्यूशन या प्रशासनिक शुल्क के माध्यम से छात्रों के लिए अप्रत्यक्ष लागत समायोजन हो सकता है।

एनएमसी की पहल विदेशी चिकित्सा शिक्षा पर गुणवत्ता नियंत्रण बढ़ाने के लिए एक व्यापक रणनीति का हिस्सा है। इसमें कड़े विदेशी चिकित्सा स्नातक लाइसेंस विनियम और एफएमजीई (विदेशी चिकित्सा स्नातक परीक्षा) जैसी अनिवार्य स्क्रीनिंग परीक्षाएं शामिल हैं, जिन्हें जल्द ही राष्ट्रीय निकास परीक्षा द्वारा प्रतिस्थापित किया जाएगा। आयोग ने एक समर्पित ईमेल आईडी के माध्यम से आपत्तियों और सुझावों को आमंत्रित करते हुए 30-दिवसीय सार्वजनिक परामर्श अवधि खोली है, जो अंतिम नियामक ढांचे को आकार देने में हितधारक सगाई के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है। इस मुखर रुख का उद्देश्य भारत की स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों के लिए समान रूप से योग्य चिकित्सा कार्यबल सुनिश्चित करना है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक

"और पोल खुल गई शराब पीने वाले" की

अक्सर सुनने में आता है कि बोतल के बोतल, पेटी के पेटी, कंटेनर के कंटेनर शराब थाने से, शराब के गोदाम से, शराब खाने में रखी हुई या पकड़ी गई या फिर जप्त की गई शराब कैसे गायब हो जाती है ? कौन पी जाता है ? यह आज तक किसी के समझ में नहीं आया। मौसम बे मौसम दिन रात सी बी आई की तरह मिस्टर इंडिया की तरह गायब हुई शराब की खोजबीन करने पर पता चला कि इतनी सारी शराब की बोतल खाली करने वाले और कोई चोर, लुटेरे, डाकू, कर्मचारी, अधिकारी, राजनेता नहीं है बल्कि ₹ चूहा पहलवान ₹ हैं जिन्होंने शराब की कई बोतले खाली कर दी। इतनी बड़ी घटना को आंखें वालों के साथ तिसरी आंखें भी देख नहीं पाईं। है ना ! कमल का जादू, शराब गायब होने का। यह खबर जैसे ही चूहों की जमात को मिली तो उनके होश उड़ गए। उनके पैरों तले जमीन खिसक गई। चुहो ने कहा है, जिस भ्रष्टाचार के कारण यह घोटाला एक कांड के रूप में घटना की तरह घटीत हुआ है, उस पर किसी भी प्रकार से सबसे तेज बोलने वाले चैनलों पर चर्चा नहीं हो रही है। किसी तरह से कोई कार्रवाई नहीं हो रही है। यह सिस्टम का कैसा स्वरूप है जो समझ में नहीं आ रहा है जो काम हमने किया ही नहीं उस में हम चुहों का नाम क्यों लिया जा रहा है ? मुझे इस वक्त एक कहावत याद आ रही है कि, कर गया मूछ वाला और पकड़ा गया पुछ वाला।

हम चुहों की इतनी ताकत, हमारी इतनी औकात है की, हम शराब की बोतले की बोतले खाली कर दे वह भी किसी शराबी की तरह और वह भी खासकर जप्त की हुई शराब जो बंदूक धारी के संरक्षण में रखी हुई या मालखाने में पड़ी हुई। मुझे यहां किसी शायर का एक अश्आर याद आ रहा है।

"यहां दावाओं के तोहफे आते हैं दान में, सेहतमंदों से बचें तो मरीजों में बाटे।"

अरे भाई हमारे चुहा खानदान में, वंश में आज तक कोई शराबी पैदा नहीं हुआ जो शराब की बोतल खाली कर दे। हम देव आदि देव महादेव के बड़े पुत्र गणेश के वाहन जरूर है मगर इसका मतलब यह नहीं की हम किसी गंदी चीज को हाथ लगाएं। एक बात जरूर है हम चौपाये जरूर है। माफ करना हम चार पैर वाले हैं लेकिन, हमें पूरी पूरी शंका है। शंका ही नहीं ₹ पूरी-पूरी ₹ रूप से शंका है। मै पूर्ण रूप से ₹ आत्मविश्वास ₹ के साथ ₹ आजादी की अभिव्यक्ति ₹ के तहत में यह दावे के साथ कह सकता हूं, चाहे तो ₹ कोरे कागज ₹ पर हमारे ₹ चारों पैरों ₹ के निशान देकर कह सकता हूं कि शराब हमने नहीं भी बल्कि दो पैर वाले उसे मानव जाति वाले ₹ मानव ₹ ने पी है और नाम हमारा ले रहा है। ₹ चोर ₹ पकड़ में नहीं आया तो हम चुहों का नाम लेकर हमारी जाति को बदनाम कर रहा है। जो पकड़ाएगा चोर, वह मूछ वाला हीं निकलेगा हम पूछ वाले जरूर हैं मगर मूछ वाले की तरह हरकतों नहीं करते हैं।

यही क़माल है ग़ायब होने वाली शराब का या फिर किसी अन्य वस्तुओं के गायब होने का कमाल है। कर गया मूछ वाला और पकड़ा गया पूछ वाला। समझ गई ना मेरे कहने का मतलब ₹ करे कोई भरे कोई ₹।

प्रकाश हेमावत
टाटा नगर रतलाम

क्या देश की व्यवस्था जनता के लिए है ?

राजेश कुमार पासी

किसी भी देश को चलाने के लिए एक व्यवस्था की जरूरत होती है ताकि वो देश सुचारू रूप से चलता रहे। यह व्यवस्था उस देश की जनता की सेवा के लिए होती है लेकिन हमारे देश की व्यवस्था कुछ अलग है। हमारे देश की व्यवस्था जनता के लिए नहीं है बल्कि खुद के लिए है। ऐसा लगता है कि हमारे देश की व्यवस्था अपनी अधिकतम ऊर्जा खुद को चलाने के लिए ही खर्च करती है. बची-खुची ऊर्जा को वो जनता के कामों के लिए इस्तेमाल करती है। राजस्थान के झालावाड़ में एक स्कूल के भवन के गिरने से सात मासूम बच्चों की असमय मौत हो गई है और 9 बच्चे गंभीर रूप से घायल बताए जा रहे हैं। बरसात में स्कूल के भवन का गिरना बता रहा है कि भवन की हालत खराब हो चुकी होगी तभी वो बरसात में गिर गया। स्कूल के बच्चों ने बताया है कि सुबह से ही भवन की छत से कंकड़-पत्थर गिर रहे थे जिसकी जानकारी उन्होंने अपने शिक्षकों को भी दी थी लेकिन उन्होंने उनकी शिकायत को अनदेखा कर दिया। उनको बताने के कुछ देर बाद ही यह हादसा हो गया। अगर शिक्षक बच्चों की बातों को गंभीरता से लेते तो बच्चों की जान बचायी जा सकती थी।

इसके अलावा भी बच्चों ने जो कहा है उससे शिक्षकों के रवैये पर सवाल उठते हैं। जिला कलेक्टर ने बताया है कि शिक्षा विभाग की जर्जर भवनों की सूची में इस स्कूल का नाम नहीं था। सवाल यह पैदा होता है कि जिस स्कूल का नाम नहीं था, वो गिर गया और जिनका नाम है, क्या उनको ठीक कर दिया गया है। ग्रामीणों का कहना है कि स्कूल की छत पिछले चार सालों से टपक रही थी लेकिन किसी ने ध्यान नहीं दिया। शिक्षकों को जब शिकायत की गई तो उन्होंने ग्रामीणों को कहा कि तुम लोग पैसे जमा करके इसको ठीक करा दो। क्योंकि सात बच्चों की मौत हो गई है तो यह मामला मीडिया की सुर्खियों में आ गया है लेकिन कुछ दिनों बाद सब भुला दिया जाएगा। वास्तविकता यह है कि राष्ट्रीय बाल अधिकार आयोग की 2024 की रिपोर्ट के अनुसार लगभग 20 प्रतिशत स्कूलों की हालत खराब है।

ये घटना बताती है कि हमारे देश में सरकारी व्यवस्था सरकारी भवनों की देखरेख में कितनी लापरवाही करती है। ऐसी घटनाओं की सूचना पूरे देश से आती रहती है। इस घटना में सात बच्चों की मौत हो गई है तो घटना बड़ी बन गई है. अगर इस घटना में बच्चे नहीं मारे जाते तो कुछ नहीं होता। बच्चों की मौत के कारण घटना की जांच और कड़ी कार्यवाही की बात हो रही है और कहा जा रहा है कि मुख्यमंत्री जी ने इस घटना का संज्ञान लिया है। अभी घटना मीडिया में छाई हुई है इसलिए ऐसी बातें हो रही है। जब घटना मीडिया से गायब हो जाएगी तो फिर सब कुछ पुराने ढर्रे पर चलने लगेगा। शिक्षा विभाग ने आदेश दिया है कि जर्जर भवनों में बच्चों को न बिठाया जाए लेकिन सवाल यह है कि फिर बच्चों को कहां बिठाया जाएगा। जब भवनों की ऐसी हालत है तो उन्हें समय पर क्यों नहीं ठीक किया गया। इस सम्बन्ध में शिक्षा निदेशक ने रिपोर्ट मांगी है लेकिन सवाल उठता है कि क्या उन्हें पता नहीं है कि किन स्कूलों की ऐसी हालत है। सरकार को बताना चाहिए कि बच्चों की जान जोखिम में डालकर ऐसे भवनों में बच्चों को क्यों पढ़ाया जा रहा है।

यह भी कहा जा रहा है कि स्कूल की मरम्मत के लिए पैसा स्वीकृत किया जा चुका था लेकिन उसकी फाइल कहीं रूकी हुई थी। सवाल यह है कि फाइल क्यों रुकी हुई थी। क्या फाइल में रिश्वत का पहिया नहीं था, इसलिए रूकी हुई थी। इस बच्चों की मौत के लिए कौन जिम्मेदार है, इस पर विचार करने की जरूरत है। वास्तव में सिर्फ स्कूलों के भवन ही खस्ताहाल नहीं है बल्कि कई सरकारी कार्यालयों की यही हालत होती है। थोड़े-थोड़े अंतराल पर ऐसी खबरें सुनने में आ जाती है कि कहीं सड़क बह गई, सड़क टूट गई, पुल टूट गया और बिल्डिंग गिर गई. सवाल यह है कि बार-बार ऐसा क्यों होता है।

वास्तव में इसके पीछे देश में फैला हुआ भ्रष्टाचार है जो कि सरकारी निर्माण कार्यों में जबरदस्त तरीके से होता है। मैंने अपनी सरकारी सेवा के दौरान केंद्रीय लोक निर्माण विभाग में ही काम किया है जो कि केन्द्र सरकार द्वारा होने वाले लगभग सभी निर्माण कार्य करता है। यह सच है कि कोई भी सरकारी भवन बिना कमीशन खाये नहीं बनता है। राज्य सरकारों के लोक निर्माण विभागों में तो केन्द्र सरकार के विभाग से ज्यादा बुरा हाल है। हर काम के लिए कमीशन तय होती है जो कि ऊपर से नीचे तक अधिकारियों और कर्मचारियों में बांटी जाती है। अगर ठेकेदार कमीशन न दे तो उसका कोई काम नहीं होता। उसके किये गये काम में नुक्स निकाला जाता है, उसके बिल अटक जाते हैं। वो जानता है कि उसे कितनी रकम रिश्वत के रूप में विभाग में बांटनी है. उसी के अनुसार वो काम के लिए रकम तय करता है। यह काम इतना मिलजुल कर होता है कि कोई किसी की शिकायत नहीं करता और आराम से सब चलता रहता है। हमारे देश की सच्चाई यही है कि जिस भ्रष्टाचार से सबका फायदा होता है, वहां कोई भी एंटी करप्शन एजेंसी कुछ नहीं कर सकती। पूरी व्यवस्था ही ऐसे चल रही है, सब मिलजुल कर देश को लूट रहे हैं। फूड इंस्पेक्टर का हर दुकान से महीना बंधा होता है जो उसे बिना किसी परेशानी के हर महीने मिल जाता है। समस्या तब आती है जब वो नियत राशि से ज्यादा की मांग करता है।

एक बार मैं सीबीआई के साथ ऐसे ही इंस्पेक्टर को पकड़ने के लिए ट्रेप लगाने गया तो सीबीआई अधिकारियों का यही कहना था कि जब पानी सिर से ऊपर चला जाता है तब हमें कार्यवाही करनी पड़ती है। वास्तव में दुकानदार को पैसे देने में दिक्कत नहीं थी लेकिन जब उसने मंथली रकम ज्यादा बढ़ा दी तो उसने सीबीआई को शिकायत दी थी। एक बार हमारे बाजार में किसी दुकानदार ने फूड इंस्पेक्टर को सीबीआई से पकड़वा दिया तो उससे सारे दुकानदार चिढ़ गए। उनका कहना था कि महीना देने से आराम से काम चल रहा था. अब हमारे ऊपर छापे डालने शुरू हो जायेंगे। इससे पता चलता है कि भ्रष्टाचार हमारी व्यवस्था का हिस्सा बन गया है और हमने उसे स्वीकार कर लिया है।

सवाल फिर वही है कि क्या ये व्यवस्था जनता के लिए काम कर रही है या अपने लिये काम कर रही है। न्यायपालिका में न्यायाधीशों को इतनी ज्यादा सुरक्षा दे दी गई है कि वो कुछ भी करें, उनके खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं हो सकती। अभी दिल्ली हाई कोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस वर्मा भ्रष्टाचार के मामले में फंसे हुए हैं लेकिन उनके खिलाफ एफआईआर भी दर्ज नहीं की जा सकती। उन्हें सजा देना तो बहुत दूर की बात है, उन्हें उनके पद से हटाना भी मुश्किल हो रहा है। इन हालातों में न्यायाधीश न्याय करें या अन्याय करें, जनता उनके खिलाफ कहीं कोई शिकायत नहीं कर सकती। इससे साबित होता है कि न्यायालय जनता के लिए नहीं है, अगर होते तो पांच करोड़ मुकदमे फैसले का इंतजार नहीं कर रहे होते। जो नेता वोट मांगने हमारे दरवाजे तक आ जाते हैं, जीतने के बाद उनसे मिलना भी मुश्किल हो जाता है। सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों की नौकरी इतनी सुरक्षित कर दी गई है कि वो काम करें या न करें, उनकी मर्जी पर निर्भर करता है।

झारखंड के साहेबगंज जिले में मिली 12 वीं सदी चामुंडा की प्राचीन मूर्ति

मूर्ति पर इतिहासकारों का अध्ययन आरंभ , पूजा-अर्चना जारी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, उत्तर झारखंड के साहेबगंज, जहां गंगा प्रवाहित है । उसी जिले के उसी क्षेत्र के कालू पंचायत के कमालपुर गांव में शुक्रवार को खेत से करीब ढाई फीट ऊंची व डेढ़ फीट चौड़ी एक प्राचीन देवी की मूर्ति मिली है जो मां चामुण्डा की है वह 12 सौ वर्ष पुरानी मूर्ति है । वस्तुत मां चामुण्डा जिन्हें चंड और मुंड नामक राक्षसों का वध करने के लिए जाना जाता है, जिसके बाद उन्हें यह नाम मिला। चामुंडा को अक्सर दुर्गतिनाशिनी के रूप में भी जाना जाता है, जो देवी दुर्गा का एक उग्र रूप है।

मुक्ति मिलने से लोगों की भीड़ मौके पर मूर्ति को देखने के लिए जमा होने लगी। ग्रामीणों के मुताबिक यह प्रतिमा सैकड़ों वर्ष पुरानी मां काली की हो सकती है। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार यह खेत उधवा प्रखंड के राधानगर गांव के एक व्यक्ति का बताया जा रहा है। वहां इस समय कमालपुर गांव के एक व्यक्ति सब्जी की खेती कर रहे हैं।शुक्रवार को जब खेत में मेड़ बनाने का कार्य चल रहा था, तभी मजदूरों की कुदाल एक पत्थर से टकराई। शुरू में उसे सामान्य पत्थर समझकर हटाने का प्रयास किया गया, लेकिन जैसे ही उसे खींचा गया, वहां से पानी का रिसाव शुरू हो गया। ग्रामीणों की मदद से जब उस पत्थरनुमा वस्तु को सावधानीपूर्वक बाहर निकाला गया और साफ किया गया, तो स्पष्ट हुआ कि वह कोई साधारण पत्थर नहीं, बल्कि मां काली की अत्यंत प्राचीन प्रतिमा है। प्रतिमा की बनावट, अभिव्यक्ति और शिल्प शैली अत्यंत प्रभावशाली है। उस जमीन पर सब्जी खेती करने वाले नयन रजवाड़ ने इसे ईश्वरीय कृपा बताते हुए कहा कि यह मेरे जीवन का सौभाग्य है कि मां काली स्वयं मेरे खेत से प्रकट हुईं। मैं इस प्रतिमा की सेवा और पूजा करके जीवन धन्य करूंगा। ग्रामीणों ने मूर्ति की तुरंत पूजा-अर्चना शुरू कर दी है । गांव में उत्सव जैसा वातावरण बन गया है। इसबीच राजमहल मॉडल डिग्री कॉलेज के प्राचार्य व भू-वैज्ञानिक डॉ. रंजीत कुमार सिंह ने प्रतिमा के अवलोकन के बाद बताया कि, यह प्रतिमा लगभग आठवीं शताब्दी (12 से 13 सौ साल)पहले की प्रतीत होती है और यह चामुंडा देवी (मां दुर्गा का उग्र रूप) की मूर्ति हो सकती है। तांत्रिक बौद्ध कला में भी ऐसे स्वरूप देखने को मिलते हैं। फोटो 12, खेत से मिली मूर्ति को देखते ग्रामीण। पाल वंश व सेन वंश कालीन चामुंडा देवी की मूर्तिः डॉ. वर्मा बरहड़वा ।इतिहासकार व स्टडी व रिसर्च सेंटर रामपुरहाट(वीरभूम)के डॉ. दिनेश नारायण वर्मा ने कहा कि मेरी जानकारी के मुताबिक ये बंगाल के पाल वंश(8वीं से 12वीं शताब्दी)और सेन वंश (11वीं से 13वीं शताब्दी)कालीन चामुंडा देवी की मूर्ति है। प्रख्यात पुरातत्ववेत्ता अरुण कुमार (पटना)ने भी इसे चामुंडा देवी की मूर्ति बताया है। इसे देवी दुर्गा का एक उग्र रूप और शक्ति का प्रतीक माना जाता है। इन वंशों के काल में इसकी पूजा तांत्रिक परम्पराओं से जुड़ी है जो बंगाल के विभिन्न स्थानों पर अवस्थित इसके मंदिरों में आज भी प्रचलित है। आम लोगों में स्थावित विश्वास के अनुसार चामुंडा देवी की पूजा शक्ति व सुरक्षा मिलती है। मनोकामनाएं पूरी होती हैं।

29 जुलाईः अंतरराष्ट्रीय बाघ दिवस : बाघ नहीं तो जंगल नहीं, जंगल नहीं तो जीवन नहीं

जब जंगल की गहराइयों में बाघ की गर्जना गूंजती है, तो वह सिर्फ एक आवाज नहीं, बल्कि प्रकृति की सांसों की धड़कन है। वह गर्जना धरती के प्राचीन गीत की तरह है, जो जीवन, शक्ति और संतुलन की कहानी कहती है। लेकिन आज, उस गर्जना का स्वर धीमा पड़ रहा है। हमारी लापरवाही, लालच और अनियंत्रित विकास ने उस राजसी प्राणी को, जो कभी जंगलों का निर्विवाद स्वामी था, विलुप्ति के कगार पर ला खड़ा किया है। अंतरराष्ट्रीय बाघ दिवस, जो हर साल 29 जुलाई को मनाया जाता है, केवल एक तारीख नहीं, बल्कि एक जागृति का आह्वान है—एक पुकार है उस प्राणी को बचाने की, जो हमारी धरती की आत्मा का प्रतीक है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि यदि बाघ की गर्जना खामोश हो गई, तो जंगल का संगीत हमेशा के लिए मौन हो जाएगा।

बाघ सिर्फ एक प्राणी नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत, पारिस्थितिक संतुलन और जैव विविधता का जीवंत प्रतीक है। भारत में, जहाँ इसे 1972 में राष्ट्रीय पशु का दर्जा मिला, बाघ केवल जंगल का राजा नहीं, बल्कि हमारी पहचान का हिस्सा है। प्राचीन काल से ही बाघ को शक्ति और सम्मान का प्रतीक माना गया है। हिंदू पौराणिक कथाओं में माँ दुर्गा का वाहन होने के नाते यह आध्यात्मिक महत्व भी रखता है। लेकिन आज, यह प्राणी खतरे में है। विश्व वन्यजीव कोष (डब्ल्यूडब्ल्यूएफ) के नवीनतम आँकड़ों (2024) के अनुसार, विश्व भर में जंगली बाघों की संख्या मात्र 4,500 के आसपास रह गई है, जो 20वीं सदी की शुरुआत में 1,00,000 से अधिक थी। भारत, जो विश्व की लगभग 70% बाघ आबादी का घर है, में 2022 की गणना के अनुसार 3,167 बाघ थे, जो 2018 के 2,967 से मामूली वृद्धि दर्शाता है। यह प्रगति आशाजनक है, लेकिन खतरे अभी भी बरकरार हैं।

बाघों की घटती संख्या के पीछे कई कारण हैं। अंधाधुंध वन कटाई ने उनके प्राकृतिक आवास को नष्ट कर दिया है। पर्यावरण मंत्रालय के आँकड़ों के अनुसार, भारत ने 2015 से 2023 के बीच 2.3 मिलियन हेक्टेयर वन क्षेत्र खो दिया, जो बाघों के लिए एक बड़ा झटका है। अवैध शिकार और बाघों के अंगों की तस्करी ने भी इस प्रजाति को गहरी चोट पहुँचाई है। 2023 में, भारत में कम से कम 121 बाघों की मृत्यु दर्ज की गई, जिनमें से कई अवैध शिकार का शिकार बने। एशियाई बाजारों में बाघ की हड्डियों, त्वचा और अन्य अंगों की माँग, विशेष रूप से पारंपरिक चीनी चिकित्सा के लिए, इस तस्करी को बढ़ावा देती है। विश्व बैंक की एक हालिया रिपोर्ट (2024) के अनुसार, अवैध वन्यजीव व्यापार वैश्विक स्तर पर 23 बिलियन डॉलर का उद्योग है, जिसमें बाघों की तस्करी एक प्रमुख हिस्सा है। इसके अलावा, मानव-बाघ संघर्ष एक बढ़ती समस्या है। जैसे-जैसे मानव बस्तियाँ जंगलों के करीब आ रही हैं, बाघों को भोजन और स्थान के लिए मानव क्षेत्रों में प्रवेश करना पड़ रहा है, जिसके परिणामस्वरूप उनकी मृत्यु या कैद हो रही है।

बाघ केवल एक शीर्ष शिकारी नहीं, बल्कि पारिस्थितिकी तंत्र का संरक्षक है। वह जंगल में शाकाहारी प्राणियों, जैसे हिरण और जंगली सुअर, की आबादी को नियंत्रित करता है, जिससे वनस्पतियों को अत्यधिक चराई से बचाया जाता है। डब्ल्यूडब्ल्यूएफ के एक अध्ययन (2023) के अनुसार, एक वयस्क बाघ प्रतिवर्ष औसतन 50-60 शिकार करता है, जो पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण है। बाघों की अनुपस्थिति में, शाकाहारी प्राणियों की अनियंत्रित वृद्धि जंगल की वनस्पतियों को नष्ट कर सकती है, जिसका प्रभाव नदियों, जलवायु और अन्य प्रजातियों पर पड़ता है। उदाहरण के लिए, स्वस्थ जंगल जल चक्र को नियंत्रित करते हैं, और बाघ इस चक्र को बनाए रखने में अप्रत्यक्ष रूप से योगदान देता है। यदि बाघ गायब हो गए, तो पूरा पारिस्थितिकी तंत्र खतरे में पड़ सकता है, जिसका प्रभाव हमारी खाद्य सुरक्षा और जलवायु पर भी पड़ेगा।

इन चुनौतियों के बावजूद, बाघ संरक्षण में आशा की किरणें दिखाई देती हैं। भारत का 'प्रोजेक्ट टाइगर', जो 1973 में शुरू हुआ, विश्व का सबसे सफल संरक्षण कार्यक्रम माना जाता है। 2024 तक, भारत में 53 बाघ अभयारण्य हैं, जिनमें कॉर्बेट (उत्तराखंड), बांधवगढ़ (मध्य प्रदेश), और सुंदरबन (पश्चिम बंगाल) जैसे क्षेत्र शामिल हैं। नवीनतम तकनीकों, जैसे कैमरा ट्रैप, ड्रोन और सैटेलाइट मॉनिटरिंग, ने बाघों की निगरानी को और सटीक बनाया है। सामुदायिक भागीदारी भी बढ़ रही है। मध्य प्रदेश के सतपुड़ा क्षेत्र में, स्थानीय समुदायों को पर्यटन और वैकल्पिक आजीविका के अवसर प्रदान किए गए हैं, जिससे मानव-बाघ संघर्ष में 30% की कमी आई है। ग्लोबल टाइगर फोरम (2024) के अनुसार, भारत ने बाघ संरक्षण में 12 बाघ-निवास वाले देशों में सबसे बेहतर प्रदर्शन किया है।

फिर भी, यह यात्रा अधूरी है। जलवायु परिवर्तन, वन्यजीव गलियारों की कमी, और अवैध शिकार अभी भी बड़े खतरे हैं। विश्व प्रकृति संरक्षण संघ (आईयूसीएन) ने बाघों को 'लुप्तप्राय' प्रजाति की श्रेणी में रखा है, जो इस बात का संकेत है कि हमें और सख्त कदम उठाने होंगे। बाघों के लिए सुरक्षित गलियारे, जो विभिन्न अभयारण्यों को जोड़ते हैं, उनकी प्रजनन और आवासीय आवश्यकताओं के लिए महत्वपूर्ण हैं। 2023 में, भारत सरकार ने 10 नए वन्यजीव गलियारों की पहचान की, लेकिन इनका पूर्ण विकास अभी बाकी है।

अंतरराष्ट्रीय बाघ दिवस, जिसकी शुरुआत 2010 में सेंट पीटर्सबर्ग टाइगर समिट में हुई, हमें एकजुट होकर बाघों की रक्षा करने का अवसर देता है। इस समिट में 13 बाघ-निवास वाले देशों ने 2022 तक बाघों की संख्या दोगुनी करने का लक्ष्य रखा था। हालाँकि यह लक्ष्य पूरी तरह हासिल नहीं हुआ, भारत ने इसमें उल्लेखनीय प्रगति की है। यह दिवस हमें प्रेरित करता है कि हम न केवल बाघों की स्थिति पर विचार करें, बल्कि ठोस कदम भी उठाएँ।

बाघों का संरक्षण केवल सरकार या वन विभाग का कर्तव्य नहीं, बल्कि हम सभी की साझा जिम्मेदारी है। हमें अपने जीवन में बदलाव लाना होगा—वृक्षारोपण, पर्यावरण जागरूकता और टिकाऊ जीवनशैली अपनाकर। हमें ऐसी नीतियों का समर्थन करना होगा जो वन कटाई और अवैध शिकार को रोके। स्कूलों व समुदायों में बच्चों को बाघों और प्रकृति के महत्व की शिक्षा देनी होगी। बाघ की गर्जना प्रकृति की धड़कन है, जो तभी जीवित रहेगी जब हम अपने दायित्व निभाएँगे। इस अंतरराष्ट्रीय बाघ दिवस पर संकल्प लें कि हम बाघों को उनके जंगलों में सुरक्षित रखेंगे, उनकी गर्जना को गूंजने देंगे और भावी पीढ़ियों को एक ऐसी धरती सौंपेंगे जहाँ बाघ स्वतंत्रता व गर्व के साथ विचरण करें। बाघ को बचाना केवल एक प्रजाति की रक्षा नहीं, बल्कि हमारी धरती, संस्कृति और भविष्य को संरक्षित करना है। जब तक बाघ गरजेगा, धरती जीवित रहेगी।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी

29 जुलाईः ईश्वरचंद्र विद्यासागर पुण्यतिथि : विचारों की लौः क्या हम ईश्वरचंद्र विद्यासागर के सपनों के भारत में हैं ?

जब अंधेरा इतना गहरा था कि समाज की आत्मा तक साँस नहीं ले पा रही थी, जब रूढ़ियों और अंधविश्वासों की बेड़ियाँ हर कदम पर मानवता को जकड़े हुए थीं, तब एक ज्योति प्रज्वलित हुई – एक ऐसी ज्योति जिसने न केवल बंगाल को, बल्कि पूरे भारतवर्ष को ज्ञान, करुणा और साहस का मार्ग दिखाया। वह ज्योति थी ईश्वरचंद्र विद्यासागर – एक नाम नहीं, एक क्रांति, एक विचार, एक ऐसी शक्ति जो आज भी हर उस हृदय में धड़कती है जो शिक्षा, समानता और मानवता के लिए संघर्ष करता है। उनकी पुण्यतिथि, 29 जुलाई, 1891, केवल एक तारीख नहीं, बल्कि एक पुकार है – एक पुकार जो हमें उनके सपनों के भारत को साकार करने के लिए प्रेरित करती है, हमें यह सवाल करने पर मजबूर करती है कि क्या हम वास्तव में उनके दिखाए मार्ग पर चल रहे हैं ?

ईश्वरचंद्र विद्यासागर का जन्म 26 सितंबर, 1820 को पश्चिम बंगाल के मेदिनीपुर जिले के बीरसिंह गाँव में एक निर्धन ब्राह्मण परिवार में हुआ। उनके पिता ठाकुरदास बंद्योपाध्याय और माता भगवती देवी की आर्थिक तंगी ने उनके बचपन को कठिनाइयों से भर दिया। फिर भी, उन्होंने इन परिस्थितियों को अपनी मंजिल की ओर बढ़ने में बाधा नहीं बनने दिया। सड़क के किनारे जलते तेल के दीपकों की मद्धम रोशनी में पढ़ाई करने वाला वह बालक न केवल संस्कृत का प्रकांड विद्वान बना, बल्कि पूरे देश के लिए 'विद्यासागर' बन गया। 1839 में कोलकाता के संस्कृत कॉलेज से अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्हें 'विद्यासागर' की उपाधि मिली, जो उनके अथाह ज्ञान और समर्पण का प्रतीक थी। यह उपाधि केवल एक सम्मान नहीं थी, बल्कि उनके उस संकल्प की गवाही थी जिसने उन्हें समाज के लिए एक प्रेरणा बनाया।

विद्यासागर का सबसे बड़ा योगदान था समाज सुधार, विशेषकर स्त्री-शिक्षा और विधवा पुनर्विवाह के क्षेत्र में। 19वीं सदी का भारत एक ऐसा समाज था जहाँ स्त्रियों को शिक्षा देना पाप माना जाता था, जहाँ विधवाएँ सामाजिक बहिष्कार और तिरस्कार की शिकार थीं। विद्यासागर ने इस अंधकार को चुनौती दी। उन्होंने शास्त्रों का गहन अध्ययन कर यह सिद्ध किया कि विधवा पुनर्विवाह न केवल धार्मिक रूप से उचित है, बल्कि सामाजिक न्याय की माँग भी है। उनके अथक प्रयासों का परिणाम था 1856 का विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, जिसके तहत पहला विधवा पुनर्विवाह 7 दिसंबर, 1856 को कोलकाता में संपन्न हुआ। यह एक ऐतिहासिक क्षण था, जिसने समाज की सोच को बदलने की नींव रखी। इसके साथ ही, उन्होंने बंगाल में 35 से अधिक बालिका विद्यालय स्थापित किए, जिससे यह साबित हुआ कि नारी केवल घर की दीवारों तक सीमित नहीं, बल्कि समाज की प्रगति की आधारशिला है।

ईश्वर चंद्र विद्यासागर का जीवन वैचारिक दृढ़ता और मानवीय संवेदना का अनुपम समन्वय था। वे न केवल विद्वान थे, बल्कि कर्मयोगी भी थे, जिन्होंने ज्ञान को समाज सेवा का माध्यम बनाया। उनकी कृति 'वर्ण परिचय' ने बंगाली भाषा को सरल और सुगम बनाकर प्रारंभिक शिक्षा का आधार प्रदान किया, जो आज भी प्रासंगिक है। विद्यासागर ने संस्कृत और अंग्रेजी शिक्षा के बीच सेतु बनाया, जिससे भारतीय युवा आधुनिक और परंपरागत ज्ञान का समन्वय प्राप्त कर सके। उनकी साहित्यिक कृतियों में कालिदास के 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' का बांग्ला अनुवाद, जिसे 'शकुंतला' के नाम से जाना जाता है, और 'रामायण' के कुछ हिस्सों का बांग्ला अनुवाद शामिल है, जिसमें सीता का चरित्र उभरकर सामने आता है। ये रचनाएँ केवल साहित्यिक नहीं, बल्कि नैतिकता और मानवता के पाठ हैं, जो आज भी प्रेरणा देती हैं। उनका साहस और स्वाभिमान उनकी पहचान था। अंग्रेजी शासन के दौर में भी उन्होंने अपनी सांस्कृतिक जड़ों से कभी समझौता नहीं किया। जब उन्हें लगा कि अंग्रेजी सरकार के नियम अन्यायपूर्ण हैं, तो उन्होंने संस्कृत कॉलेज के प्राचार्य पद से इस्तीफा दे दिया। यह उनका वह साहस था जो उन्हें समकालीन सुधारकों में विशिष्ट बनाता है। उन्होंने धर्म को मानवता के चश्मे से देखा और जब लोग धार्मिक ग्रंथों का हवाला देकर कुरीतियों को सही ठहराते थे, तब विद्यासागर ने शास्त्रों की पुनर्व्याख्या कर यह सिद्ध किया कि सच्चा धर्म वही है जो मानव कल्याण के लिए हो।

विद्यासागर की करुणा और संवेदनशीलता ने उन्हें जन-जन का प्रिय बनाया। एक बार एक गरीब विधवा की दयनीय स्थिति देखकर उन्होंने न केवल उसे तत्काल सहायता दी, बल्कि उसके लिए नियमित मदद की व्यवस्था भी की। ऐसे अनगिनत किस्से हैं जो उनकी मानवता को उजागर करते हैं। वे समाज के सबसे निचले तबके के लोगों के साथ उतनी ही आत्मीयता से मिलते थे जितनी कि उच्च वर्ग के लोगों के साथ। यह उनकी वह विशेषता थी जो उन्हें न केवल एक सुधारक, बल्कि एक सच्चे मानवतावादी बनाती थी।

आज, 29 जुलाई को, उनकी पुण्यतिथि पर हमें यह विचार करना होगा कि क्या हम उनके आदर्शों को जी रहे हैं ? 2021 के साक्षरता आँकड़ों के अनुसार, भारत में महिलाओं की साक्षरता दर 70.3% थी, जो पुरुषों की 84.7% से काफी कम है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह अंतर और भी गहरा है। क्या यह स्थिति विद्यासागर के सपनों के भारत को दर्शाती है ? आज जब समाज एक बार फिर कट्टरता, असमानता और जातिवाद की ओर बढ़ रहा है, विद्यासागर के विचारों को पुनर्जनन की आवश्यकता है। उनकी पुण्यतिथि हमें यह याद दिलाती है कि शिक्षा और समानता के लिए उनका संघर्ष अभी अधूरा है।

विद्यासागर का जीवन हमें सिखाता है कि सच्ची प्रगति तभी संभव है जब समाज का हर व्यक्ति – चाहे वह किसी भी जाति, लिंग या आर्थिक पृष्ठभूमि से हो – सम्मान और अवसर प्राप्त करे। उन्होंने यह भी दिखाया कि बदलाव की शुरुआत एक व्यक्ति से हो सकती है, बशर्ते उसमें दृढ़ संकल्प और मानवता के प्रति प्रेम हो। उनकी पुण्यतिथि पर हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम उनके विचारों को केवल स्मरण ही नहीं करेंगे, बल्कि उन्हें अपने जीवन में उतारेंगे।

ईश्वरचंद्र विद्यासागर का नाम आज भी हर उस व्यक्ति के हृदय में जीवित है जो शिक्षा को समाज का आधार मानता है। उनकी मृत्यु भले ही 1891 में हो गई, लेकिन उनके विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं। वे उस दीपक की तरह हैं जो एक बार जलने के बाद कभी नहीं बुझता, बल्कि दूसरों को भी प्रज्वलित करता रहता है। उनकी पुण्यतिथि पर सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उनके जैसे साहसी, संवेदनशील और समर्पित बनें। हमें शिक्षा को हर घर तक पहुँचाना होगा, हर उस व्यक्ति को सम्मान देना होगा जो समाज में हाशिए पर है, और यह विश्वास करना होगा कि सच्चा धर्म और सच्ची प्रगति वही है जो मानवता की सेवा में हो। जब तक भारत में ज्ञान की ज्योति जलती रहेगी, ईश्वरचंद्र विद्यासागर का नाम अमर रहेगा – एक पथ-प्रदर्शक, एक कर्मयोगी और एक सच्चे मानवतावादी के रूप में।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

गिरिडीह में आय से अधिक संपत्ति पर एसीबी ने बोला धावा

परिवहन तेरा लीला अपार

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला। गिरिडीह जिले में एक बार फिर एसीबी (एंटी करप्शन ब्यूरो) की रेड पड़ी है. इस बार एसीबी ने आय से अधिक संपत्ति के मामले में एक सरकारी क्लर्क के विरुद्ध कारवाई की है. सरकारी क्लर्क प्रदीप गोस्वामी के घर आज सोमवार की सुबह से एसीबी की टीम छापेमारी कर रही है. एसीबी के अधिकारी अभी कुछ भी बोलने से कतरा रहे हैं. झारखंड का परिवहन जो अवैध कमाई का बड़ा जरिया है एक जिले में प्रदीप गोस्वामी नामक कर्मचारी उसी विभाग से मोटी अवैध संपत्ति कमाई थी . इस संबंध में मिली जानकारी के अनुसार आज सोमवार की सुबह पांच गाड़ियों से एसीबी की टीम पंजाबी मुहल्ला स्थित प्रदीप के घर पर पहुंची. यहां आते ही टीम ने प्रदीप के घर को चारों ओर से घेर लिया. सुबह से ही प्रदीप के घर छापेमारी जारी है. प्रदीप पहले जिला स्थापना शाखा में पदस्थापित थे. इसके बाद इनका स्थानांतरण पीरटांड प्रखंड कार्यालय में हो गया है. प्रदीप के खिलाफ पूर्व में भी आय से अधिक संपत्ति के मामले पर शिकायत दर्ज हुई है. गिरिडीह के सुनील लहरी ने यह शिकायत दर्ज करवायी थी.बताया जाता है कि जब प्रदीप गोस्वामी गिरिडीह परिवहन विभाग में कार्यरत था तब उसने अकूत संपत्ति कमाई थी ।जिसके लेकर उसकी शिकायतें की गयी थीं ।

झारखंड में नौ वर्षों से शिक्षक पात्रता परीक्षा नहीं, छात्रों में तीव्र रोष

संविधान का अनुच्छेद 14,16,21 का हवाला देते हुए सरकार के माथे ठीकरा फोडा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची। झारखंड में युवाओं के भविष्य के साथ खिलबाड़ किया जा रहा है। नौ वर्षों से जेटेट (झारखंड शिक्षक पात्रता परीक्षा) आयोजित न होने से छात्रों में जबरदस्त नाराजगी है।

इसी को लेकर रविवार को हजारीबाग के गांधी मैदान में छात्र युवा अधिकार संघ की एक महत्वपूर्ण बैठक हुई, जिसमें राज्य सरकार की उदासीनता के विरोध में चरणबद्ध आंदोलन की घोषणा की गई।

संघ के सदस्य जीवन कुमार ने बताया कि हजारों छात्र एनसीटीई से मान्यता प्राप्त संस्थानों से बीएड या डीएलएड की पढ़ाई पूरी कर चुके हैं और जेटेट परीक्षा में शामिल होने के लिए पूरी तरह से योग्य हैं।

लेकिन 2016 के बाद से परीक्षा आयोजित नहीं की गई है। उन्होंने कहा कि योग्य अभ्यर्थी वर्षों से सिर्फ इंतजार कर रहे हैं, जो सरकार की गंभीर लापरवाही को दर्शाता है।

बैठक में रविंद्र पासवान ने इसे संविधान के अनुच्छेद 14 (समानता का अधिकार), 16 (रोजगार में समान अवसर) और 21 (जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता) का उल्लंघन करार दिया।

उन्होंने कहा कि एनसीटीई की गाइडलाइंस के अनुसार हर वर्ष जेटेट का आयोजन आवश्यक है, लेकिन झारखंड सरकार अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठा सकी है।

विक्रमने बताया कि पूर्व में सरकार द्वारा परीक्षा के लिए आवेदन मंगवाए गए थे, जिसमें 3.5 लाख से अधिक छात्रों ने हिस्सा लिया था। लेकिन प्रक्रिया को बिना किसी स्पष्ट कारण के रद कर दी गई।

जिससे लाखों युवाओं की उम्मीदें टूट गईं। बैठक में आंदोलन की रणनीति तय की गई और जल्द ही इसकी औपचारिक घोषणा करने की बात कही गई।

इस दौरान जीवन कुमार यादव, रविंद्र पासवान, अभिषेक राज, सत्यम सिंह, विक्रम कुमार, विनय कुमार, नीरज, आदर्श आनंद, विष्णु मंडल समेत दर्जनों छात्र उपस्थित रहे।

कहानीः दुपट्टे की गाँठ

लेखिकाः डॉ. प्रियंका सौरभ

कभी-कभी ज़िंदगी के सबसे बड़े सबक किसी स्कूल या किताब से नहीं, बल्कि एक साधारण से घर में, एक सादी-सी औरत के मुँह से मिलते हैं। सुधा के साथ ऐसा ही हुआ था। उसे क्या पता था कि उस दिन का एक छोटा-सा लम्हा, उसकी सोच और जीवन के प्रति रवैये को हमेशा के लिए बदल देगा।

हर सुबह जब मोहल्ले में सूरज की पहली किरण घरों की दीवारों से टकराती, उसी समय सुधा अपनी झोपड़ी के बाहर बाल्टी, झाड़ू और पोछे का झोला लेकर तैयार खड़ी होती। दिनभर चार-चार घरों में काम करती थी वह—झाड़ू, बर्तन, कपड़े और कभी-कभी खाना भी। दो बच्चों की माँ, एक शराबी पति की पत्नी और अपने छोटे से घर की अकेली उम्मीद।

पर इन सबके बावजूद सुधा की हँसी कभी थमती नहीं थी। उसका सधा हुआ हाथ और मुस्कुराता चेहरा उसे हर घर में अलग बना देता था। वह साफ-सुथरा रहती थी, दुपट्टा हमेशा कांधे से उतारकर काम में जुट जाती थी—उसे लगता था कि दुपट्टा बाँधने से हाथ रुकते हैं, मेहनत में बाधा आती है।

पिछले हफ्ते ही सुधा ने एक नया घर पकड़ा था—तीन मंजिला पक्का मकान, जहां सिर्फ चार लोग रहते थे—अंकल, आँटी और उनके दो जवान बेटे। घर साफ-सुथरा था और आँटी भी पढ़ी-लिखी लगती थीं। काम ज़्यादा नहीं होता था, पर समय पर पहुँचना ज़रूरी था। यह सुधा का दिन का आख़िरी घर था। वह अपने सभी काम निपटाकर दोपहर के बाद वहाँ जाती, थोड़ा काम और फिर आँटी के साथ चाय पर थोड़ी बातचीत। यही उसका आराम का समय होता। आँटी से उसे एक अलग अपनापन महसूस होता था।

उस दिन भी ऐसा ही दिन था। सुधा फर्श पर झुकी पोंछा लगा रही थी और आँटी पास की कुर्सी पर बैठी चाय पी रही थीं। बातों का सिलसिला चल रहा था—कभी बच्चों की पढ़ाई की बात, कभी सब्ज़ी के दामों की।

"सुधा, एक बात पूछूँ ? तू बुरा तो नहीं मानेगी ?"

"नहीं आँटी जी, आप तो मेरी बड़ी हैं, जो चाहे पूछिए।"

"तू हर घर में ऐसे ही दुपट्टा उतार देती है ?"

सुधा हँस पड़ी। ₹हाँजी, दुपट्टा लेकर काम बिल्कुल नहीं होता मुझसे। फँसता है, खिंचता है।"

आँटी एक पल को चुप रहीं, फिर धीरे से बोलीं, "बुरा मत मानना बेटा, पर ज़रा अपने कुर्ते की ओर देख तो।"

सुधा ने गर्दन घुमा कर अपनी ओर देखा, तो वह एकदम झेंप गई। कुर्ते का गला थोड़ा खुला था और झुकने से अंदर का कुछ हिस्सा दिख रहा था—थोड़ी-सी शमीज़ तक। वह एकदम सीधी हो गई। आँटी ने प्यार से कहा, ₹देखा बेटा, मैं औरत होकर देख पा रही हूँ, तो सोच तेरे आते-जाते उन दो लड़कों या अंकल की नज़र कहीं ग़लती से भी पड़ जाए, तो तू ही कहेगी कि घर के मर्द बिगड़े हुए हैं। पर जब सामने कुछ दिख रहा हो, तो नज़र तो जाएगी ही न ? कोई आँख बंद करके तो नहीं चलेगा।"

सुधा की आँखों में पानी आ गया था, पर वह कोई विरोध नहीं कर सकी। पहली बार किसी ने उसे इस नज़रिया से कुछ बताया था। आँटी ने मुस्कराते हुए कहा, "देख, मैं तुझे कुछ दिखाती हूँ, ऐसे करना चाहिए।" उन्होंने अपनी साड़ी के पल्लू से गले को ढका और फिर कमर में ठीक से कसकर बाँधा।

सुधा ने सिर हिलाया, और चुपचाप अपना दुपट्टा उठाया, उसे सामने से गले तक ढका और कमर में बाँध लिया।

सुधा को उस पल अपनी माँ की याद आ गई। वह बहुत छोटी थी जब माँ चल बसी थीं। तब वह आठ साल की थी। माँ की गोदी, उसकी डाँट, उसका प्यार—सब कहीं धुंधला सा था। लेकिन आज आँटी की वो बात, वो नसीहत, वो सिखाने का तरीका—सब कुछ उसे उसकी माँ की याद दिला गया था।

उसके गले से आवाज़ नहीं निकल रही थी। आँटी ने प्यार से पूछा, ₹ऐसे क्या देख रही है ?"

सुधा की आँखें भर आईं। ₹आपने जो कहा, बिलकुल सही है। पर आज तक किसी ने इस तरह कुछ बताया नहीं, शायद इसीलिए कभी ध्यान नहीं गया। आप मेरी माँ जैसी हैं।"

उस दिन के बाद सुधा ने अपना तरीका बदल लिया। अब वह हर घर में दुपट्टा सही तरीके से बाँध कर ही काम करती। कई जगह लोगों ने सराहा भी। कुछ औरतों ने कहा, ₹अरे, अब तो तू बड़ी सलीके से दिखती है।"

सुधा के भीतर कुछ बदल गया था। एक आत्म-सम्मान, एक समझ, एक चेतना। उसे यह एहसास हुआ कि समाज में जीने के कुछ अनकहे कायदे होते हैं, जो हमें खुद ही समझने होते हैं। और कभी-कभी, कोई अपना हमें वो कायदे सिखा देता है—बिना जजमेंट, बिना अपमान के।

इस पूरी घटना ने सुधा को एक और बात सिखाई—औरतें अगर एक-दूसरी को जज करने की बजाय समझाएं, साथ खड़ी हों, तो बहुत कुछ बदल सकता है। आँटी ने सुधा को ताना नहीं मारा, उसे शर्मिंदा नहीं किया, बस एक माँ की तरह समझाया।

और यही बात सुधा ने अब अपनी बेटी में भी डालनी शुरू की। वह अपनी बारह साल की बेटी को धीरे-धीरे सजग बनाना सीख रही थी—कपड़े, भाषा, व्यवहार और आत्म-सम्मान के स्तर पर।

कुछ महीनों बाद आँटी का बेटा दिल्ली ट्रांसफर हो गया और वे लोग घर बेचकर चले गए। आँटी के जाने पर सुधा बहुत रोई। आँटी ने जाते समय एक छोटी सी पोटली में एक सुंदर सूती दुपट्टा देकर कहा था, ₹ये रख, जब भी पहने, मुझे याद कर लेना।"

सुधा ने वह दुपट्टा संभाल कर रखा। कभी पहनती तो आँटी की बातें कानों में गूंजने लगतीं।

अब सुधा खुद कई औरतों को, नई कामवालियों को सिखाती है। वह उन्हें बताती है, ₹काम करो मेहनत से, लेकिन सलीके से भी। लोग क्या सोचते हैं, यह हमारे हाथ में नहीं; लेकिन हम खुद को कैसे पेश करते हैं, यह हमारे बस में है।"

उसे लोग अब 'सुधा दीदी' कहते हैं। वह मोहल्ले की औरतों के लिए अब सलाहकार बन गई है। उसका आत्मविश्वास और भाषा बदल चुकी है। और यह सब शुरू हुआ था, उस एक दिन की उस एक सच्ची बात से—जो आँटी ने कही थी।

हम में से बहुतों को ज़िंदगी में ऐसे लोग नहीं मिलते जो हमें समय पर टोक दें, रोक दें या सही रास्ता दिखा दें। और कभी-कभी, जब ऐसे लोग मिलते भी हैं, तो हम उन्हें सुनना नहीं चाहते।

लेकिन अगर हम थोड़ा रुकें, थोड़ा सोचें, और अपने भीतर झाँकें, तो शायद ज़िंदगी की असली समझ उन चुपचाप बोलने वाली बातों में ही छुपी होती है। दुपट्टा कोई बड़ा मुद्दा नहीं था, पर उस दिन वो सुधा के लिए पहचान, सुरक्षा और आत्मसम्मान का प्रतीक बन गया। सच में, कुछ गाँठें खोलने के लिए पहले उन्हें बाँधना पड़ता है—और उस दिन सुधा ने दुपट्टे की गाँठ के साथ अपनी सोच की भी गाँठ बाँध ली थी।

समाप्त।

चाइनीज मांझा: खुलेआम बिकती मौत की धार

डॉ. सत्यवान सौरभ

हर शहर, हर गली, हर मोहल्ले में, जब बच्चे और किशोर पतंग उड़ाने निकलते हैं, तो उनका उद्देश्य केवल आसमान छूना होता है। लेकिन दुर्भाग्य से अब पतंग की यह उड़ान कई बार किसी की जान लेकर ही थमती है। इसका कारण कोई आम धागा नहीं, बल्कि एक जानलेवा उत्पाद है— चाइनीज मांझा। यह मांझा अब केवल पतंगों की डोर नहीं रहा, यह सड़क पर चल रहे आम आदमी की ज़िंदगी का दुश्मन बन चुका है। हर दिन अख़बारों में ऐसी खबरें आती हैं कि फलां व्यक्ति की गर्दन मांझे से कट गई, किसी पक्षी के पर मांझे में उलझकर छिल गए, किसी स्कूली बच्चे का गला बुरी तरह घायल हो गया, कोई बाइक सवार अचानक बेहोश होकर गिर पड़ा, क्योंकि उसे नहीं पता था कि उसकी राह में मौत एक पारदर्शी धागे में लटकी हुई है।

आज की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि हम एक ऐसे युग में जी रहे हैं, जहाँ टेक्नोलॉजी ने हर चीज को तेज़, धारदार और सस्ता बना दिया है। उसी का दुष्परिणाम है यह चाइनीज मांझा। यह नायलॉन, प्लास्टिक और धातु के महीन रेशों से बना होता है जो देखने में भले ही सामान्य डोर लगे, लेकिन इसमें शीशे की तरह तीखी धार होती है। यह ना टूटता है, ना गलता है और ना ही आसानी से दिखाई देता है। यह हवा में लहराता है और जब किसी की गर्दन, चेहरे या हाथ से टकराता है तो त्वचा को चीरता हुआ शरीर में गहरा घाव छोड़ जाता है। कई मामलों में तो यह मांझा किसी धारदार हथियार की तरह काम करता है और गले की नसों तक को काट देता है, जिससे तुरंत खून का बहाव रुकता नहीं और पीड़ित की जान तक चली जाती है।

सवाल यह है कि जब यह मांझा इतना जानलेवा है, तो इसका खुलेआम व्यापार कैसे हो रहा है? सड़कों के किनारे, बाजारों में, ऑनलाइन वेबसाइटों पर, यह चाइनीज मांझा अब भी बेचा जा रहा है। प्रतिबंध केवल कागज़ों में दर्ज है, जमीनी स्तर पर न कोई कार्रवाई हो रही है, न ही कोई सख्ती। प्रशासन की यह चुप्पी इस मांझे जितनी ही धारदार और खतरनाक है। एक तरह से यह मौन स्वीकृति है उस उत्पाद के लिए, जो हर दिन किसी के खून से लाल हो रहा है। कानून होने के बावजूद जब कार्यवाही नहीं होती, तो जनता का विश्वास टूटता है और गलत व्यापारियों के हौसले और बुलंद हो जाते हैं।

-डॉ. सत्यवान सौरभ, लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार, हरियाणा

समस्या यह भी है कि इस मांझे को उपयोग करने वालों को इसके दुष्परिणामों की गंभीरता का अंदाजा नहीं होता। उन्हें लगता है कि यह मांझा मजबूत है, इससे पतंगें ज्यादा काटी जा सकती हैं और प्रतिस्पर्धा में जीत हासिल की जा सकती है। पर वे भूल जाते हैं कि यह जीत किसी की जिंदगी की हार बन सकती है। अगर वे एक बार भी अस्पतालों की इमरजेंसी वार्ड में जाकर देखें कि चाइनीज मांझे से घायल लोग कैसी हालत में होते हैं, तो शायद वे कभी भी इसे हाथ में न लें। कई बार तो बच्चे भी इस मांझे के कारण ज़ख्मी होते हैं। उनके नाज़ुक शरीर पर यह मांझा ऐसी चीर देता है जिसे देखकर दिल दहल जाता है। कल्पना कीजिए, एक मासूम बच्चा साइकिल चला रहा हो और अचानक उसके चेहरे से यह मांझा लिपट जाए— उसकी आंखों, गालों या गर्दन पर जो जख्म होगा, वह जीवनभर नहीं भरेगा।

यह मांझा केवल इंसानों के लिए नहीं, पशु-पक्षियों के लिए भी अभिशाप बन गया है। हर वर्ष हज़ारों पक्षी पतंगों के इस मांझे में फंसकर घायल होते हैं या दम तोड़ देते हैं। खासकर मकर संक्रांति और स्वतंत्रता दिवस जैसे अवसरों पर जब पतंगबाज़ी चरम पर होती है, तो आकाश में उड़ती चीलें, कबूतर, तोते और अन्य पक्षी इस मांझे में उलझकर घायल हो जाते हैं। कई पक्षियों के पर कट जाते हैं, कुछ की आंखें फूट जाती हैं और कुछ तो पेड़ों या छतों से उलझे मांझे में लटककर मर जाते हैं। ये दृश्य किसी भी संवेदनशील इंसान को भीतर से झकझोर देते हैं, पर दुर्भाग्य है कि पतंग के खेल में हम केवल अपनी जीत का रोमांच देखते हैं, किसी की जान जाने की पीड़ा नहीं।

प्रशासन अगर चाहे, तो इस पर तुरंत कार्रवाई हो सकती है। सबसे पहले तो सभी जिलों में विशेष अभियान चलाकर चाइनीज मांझे की बिक्री पर पूर्ण प्रतिबंध लागू करना होगा। बाजारों में दुकानों की नियमित जांच की जाए और जिस भी व्यापारी के पास यह मांझा पाया जाए, उसके खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई होनी चाहिए। केवल जुर्माना नहीं, बल्कि जेल की सज़ा का प्रावधान भी होना चाहिए ताकि लोग डरें। साथ ही समाज के स्तर पर भी जागरूकता अभियान ज़रूरी है। स्कूलों, कॉलोनियों, पंचायतों और युवाओं के बीच इस मांझे के दुष्परिणामों की जानकारी दी जाए। रेडियो, टीवी और सोशल मीडिया के ज़रिए इसे आम जनता तक पहुंचाया जाए।

यह ज़िम्मेदारी सिर्फ प्रशासन की नहीं, हम सबकी है। अगर हममें से हर कोई संकल्प ले कि हम इस मांझे का उपयोग नहीं करेंगे, तो व्यापारी खुद-ब-खुद इसे बेचना बंद कर देंगे। हर घर में यह निर्णय लिया जाए कि बच्चों को इस मांझे से दूर रखा जाएगा और उन्हें समझाया जाएगा कि जीत वही सच्ची होती है जो दूसरों को हानि पहुंचाए बिना हासिल की जाए। आखिर इंसानियत से बढ़कर कोई खेल नहीं हो सकता।

यह भी समझना होगा कि हमारी सड़कों पर यह मांझा केवल दुर्घटना नहीं, एक हत्या का माध्यम बन चुका है। कोई बाइक सवार जो रोज़ की तरह अपने काम पर जा रहा था, उसकी गर्दन कट जाती है और वह मौके पर ही दम तोड़ देता है। परिवार इंतज़ार करता रह जाता है, लेकिन लौटता है एक शव। यह घटना अब दुर्लभ नहीं, बार-बार हो रही है। इसे दुर्घटना कहना अब अपराध है। इसे रोकना नैतिक, कानूनी और मानवीय कर्तव्य है।

चाइनीज मांझे पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगाने के लिए जितनी जल्दी कदम उठाए जाएंगे, उतनी ही जल्दी हम अनगिनत ज़िंदगियाँ बचा सकते हैं। अगर हम अब भी नहीं जागे, तो आने वाले समय में यह मांझा किसी अपने की जान लेकर ही चेतावनी बनेगा।

एक सभ्य समाज वह नहीं जो केवल कानून बनाए, बल्कि वह होता है जो हर व्यक्ति की सुरक्षा की गारंटी देता है। और जब सड़कों पर, छतों पर, आसमान में मौत इस मांझे के रूप में तैर रही हो, तब सबसे ज़रूरी है इस मौत की डोर को काट देना। अब वक्त आ गया है कि हम कहें – 'पतंग उड़ाइए, लेकिन ज़िंदगी नहीं गिराइए।'

चाइनीज मांझा, जो नायलॉन और धातु से बना अत्यंत तीव्र धार वाला धागा है, आज पतंगबाज़ी से कहीं अधिक जानलेवा साबित हो रहा है। यह मांझा इंसानों और पक्षियों दोनों के लिए खतरनाक है, जिससे हर वर्ष कई दुर्घटनाएं होती हैं। गर्दन और चेहरे पर गहरे कट, पक्षियों की मृत्यु, और सड़क हादसों की वजह से यह मांझा मौत की खुली डोर बन चुका है। इसके बावजूद यह खुलेआम बिक रहा है। प्रशासन से मांग है कि इसपर पूर्ण प्रतिबंध लगे और सख्ती से कार्रवाई हो, ताकि मासूम जानें बचाई जा सकें।

भारत दुनिया का पांचवां सबसे बड़ा ई-कचरा उत्पादक

पुनीत उपाध्याय

भारत में बढ़ता ई-कचरा या ई-वेस्ट गंभीर चुनौती बनता जा रहा है। इलेक्ट्रॉनिक कचरा या ई-कचरा दरअसल बिजली और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का वेस्ट है। राज्यसभा में केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़ों का हवाला देकर केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय राज्य मंत्री कीर्तिवर्धन सिंह ने बताया कि वित्तीय वर्ष २०२०-२१ से २०२२-२३ तक ई-कचरे के उत्पादन में क्रमिक वृद्धि हुई हालांकि वित्तीय वर्ष २०२३-२४ में इसमें कमी आई है। वित्तीय वर्ष २०२४-२५ में इसमें मामूली वृद्धि हुई है। वित्तीय वर्ष २०२४-२५ में देश में 13 लाख 97 हजार मीट्रिक टन ई-कचरा पैदा हुआ। इससे पहले 16 दिसंबर २०२४ को सरकार ने राज्यसभा में बताया था कि पिछले पांच वर्षों में इलेक्ट्रॉनिक कचरे के उत्पादन में भारी वृद्धि देखी गई जो २019-२० में 1.01 मिलियन मीट्रिक टन से बढ़कर २०२३-२४ में 1.751 मिलियन मीट्रिक टन हो गया है। राष्ट्रीय स्तर के आंकड़े २019-२० से ई-कचरा उत्पादन में चिंताजनक 72.54 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाते हैं जो देश भर में इलेक्ट्रॉनिक और बिजली उपकरणों के बढ़ते उपयोग को दर्शाता है। स्मार्टफोन और लैपटॉप से लेकर उन्नत औद्योगिक और चिकित्सा उपकरणों तक. तकनीक आर्थिक विकास, कनेक्टिविटी और नवाचार की रीढ़ बन गई है। इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों पर इस बढ़ती निर्भरता का नुकसान भी है जिसे इलेक्ट्रॉनिक कचरे के रूप में जाना जाता है।

भारत में 95 फीसदी कचरे का उचित निस्तारण नहीं

दुनिया के शीर्ष ई-कचरा उत्पादकों (चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान और जर्मनी) में शुमार भारत के सामने ई-कचरे के प्रबंधन की एक कठिन चुनौती है। भारत में ई-कचरे की मात्रा छह वर्षों में 151.03 फीसदी बढ़कर २017-18 में 7 लाख 8 हजार 445 मीट्रिक टन से बढ़कर २०२३-२४ में 17 लाख 78 हजार 400 मीट्रिक टन हो गई जिसमें 1 लाख 69 हजार २83 मीट्रिक टन की वार्षिक वृद्धि हुई है।

संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार भारत दुनिया का पांचवां सबसे बड़ा ई-कचरा उत्पादक है। यहां उत्पन्न होने वाले लगभग 95 फीसदी ई.कचरे को या तो जला दिया जाता है या लैंडफिल में फेंक दिया जाता है। तेज़ी से बढ़ते शहरीकरण के साथ यह संख्या और भी बढ़ेगी और साथ ही स्वास्थ्य को ख़तरा पैदा करने वाले लोगों की संख्या भी बढ़ेगी। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार ई-कचरा दुनिया में सबसे तेज़ी से बढ़ते ठोस अपशिष्ट स्रोतों में से एक है। २०२२ में वैश्विक स्तर पर अनुमानित ६२ मिलियन टन ई-कचरा उत्पन्न हुआ। केवल २२.३ का ही का ही औपचारिक रूप से संग्रहण और रिसाइकिल किया गया। चिंता की बात यह है कि सीसा एक सामान्य पदार्थ है जो पर्यावरण में तब उत्सर्जित होता है जब ई-कचरे को खुले में जलाने सहित अनौपचारिक गतिविधियों के माध्यम से पुनर्चक्रित, संग्रहीत या डंप किया जाता है। अनौपचारिक ई-कचरा निस्तारण के कई प्रतिकूल स्वास्थ्य प्रभाव हो सकते हैं। बच्चे और गर्भवती महिलाएं विशेष रूप से असुरक्षित हैं। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन और विश्व स्वास्थ्य संगठन का अनुमान है कि दुनिया भर में अनौपचारिक रिसाइकिल क्षेत्र में काम करने वाली लाखों महिलाओं और बाल श्रमिकों को खतरनाक ई-कचरे के संपर्क में आने का खतरा हो सकता है।

उत्पादन.रिसाइकिल में बड़ा गैप. पांच गुना अंतर आ चुका

संयुक्त राष्ट्र के चौथे वैश्विक ई-कचरा मॉनिटर के अनुसार दुनिया में इलेक्ट्रॉनिक कचरे का उत्पादन इसकी रिसाइकिलिंग की तुलना में पांच गुना तेज़ी से बढ़ रहा है। २०२२ में रिकॉर्ड ६२ मिलियन टन ;ई-कचरा उत्पन्न हुआ जो २010 से 82 फीसदी अधिक है। २030 में 32 फीसदी और बढ़कर 82 मिलियन टन होने की संभावना है जिससे अरबों डॉलर मूल्य के रणनीतिक रूप से मूल्यवान संसाधन बर्बाद होंगे। दुनिया भर में ई-कचरे का वार्षिक उत्पादन २६ लाख टन की दर से बढ़ रहा है जो २030 तक 8.२ करोड़ टन तक पहुंचने की संभावना है।

(किताबों में दर्ज बदलाव) "बीबिपुर: एक गांव की कहानी, जो अब किताबों में पढ़ाई जाएगी"

हरियाणा का बीबिपुर गांव अब देशभर के छात्रों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गया है। ICSE बोर्ड ने इसकी सामाजिक क्रांति की कहानी कक्षा आठवीं के पाठ्यक्रम में शामिल की है। 'बेटी के नाम नेमप्लेट', 'लाडो सरोवर', खुले में शौच से मुक्ति और महिला सशक्तिकरण जैसे प्रयासों ने इसे एक मॉडल गांव बनाया। पूर्व सरपंच प्रह्लाद डांगरा के नेतृत्व में यह गांव सोच और समाज दोनों बदलने में सफल रहा। बीबिपुर अब सिर्फ एक गांव नहीं, बल्कि ग्रामीण भारत के लिए एक आशा की किरण और बदलाव का प्रतीक बन चुका है।

डॉ. प्रियंका सौरभ

कभी एक सामान्य सा गांव और आज देशभर के बच्चों के लिए प्रेरणा — हरियाणा का बीबिपुर गांव अब सिर्फ नक्शे पर मौजूद एक बिंदु नहीं रहा, बल्कि सामाजिक बदलाव और विकास का जीवंत प्रतीक बन चुका है। इतना ही नहीं, अब बीबिपुर गांव की यह अनूठी कहानी कक्षा आठवीं के छात्रों को भी पढ़ाई जाएगी। ICSE बोर्ड ने इसे अपने सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम में शामिल कर लिया है। यह न केवल एक ऐतिहासिक उपलब्धि है, बल्कि पूरे ग्रामीण भारत के लिए एक संदेश भी है — परिवर्तन संभव है, अगर सोच बदले।

बदलाव की शुरुआत: एक बीज से विशाल वटवृक्ष

बीबिपुर गांव, हरियाणा के जींद जिले में स्थित है। यह वही राज्य है, जहां लिंगानुपात के असंतुलन, बाल विवाह और सामाजिक भेदभाव जैसे मुद्दे दशकों तक चर्चा का विषय रहे हैं। लेकिन इसी हरियाणा की मिट्टी से उभरा बीबिपुर, जिसने इन सभी धारणाओं को तोड़कर नई मिसाल कायम की।

वर्ष 2010 में गांव के पूर्व सरपंच प्रह्लाद डांगरा ने एक ऐसी पहल की शुरुआत की, जो आगे चलकर सामाजिक क्रांति में बदल गई। उनका सपना था — एक ऐसा गांव, जहां बेटी को सम्मान मिले, जल-संरक्षण हो, महिलाएं सशक्त हों, और समाज खुले में शौच से मुक्त हो।

नेमप्लेट पर 'लाडो' का नाम

बीबिपुर गांव की सबसे चर्चित और क्रांतिकारी पहल रही — ₹बेटी के नाम नेमप्लेट₹। यह विचार बेहद सरल, मगर सामाजिक रूप से बेहद प्रभावशाली था। आज तक अधिकांश घरों की पहचान पुरुष सदस्य के नाम से होती थी, लेकिन बीबिपुर में घरों की पहचान बेटियों के नाम से शुरू हुई।

इस पहल ने सिर्फ एक संकेत बदला नहीं, बल्कि सोच बदल दी। बेटियों को घर का गौरव मानने की दिशा में यह पहला साहसी कदम था। गांव के सैकड़ों घरों में बेटियों के नाम की तख्तियां लगीं और एक नई सामाजिक चेतना जागी।

लाडो सरोवर: बेटियों के नाम जल-स्त्रोत

गांव में 'लाडो सरोवर' की स्थापना सिर्फ जल संचयन का प्रयास नहीं था, बल्कि यह उस सोच का सम्मान था जो बेटियों को प्रकृति के साथ जोड़ती है।

यह एक प्रतीक बन गया — जीवन देने वाले जल और जीवन की जननी 'बेटी' के बीच के अटूट संबंध का।

लाडो सरोवर ने गांव को पर्यावरणीय जागरूकता की राह पर भी अग्रसर किया और जल संरक्षण की प्रेरणा दी।

खुले में शौच से मुक्ति और स्वच्छता की अलख

बीबिपुर की सबसे बड़ी जीत उस समय मानी गई जब उसने खुले में शौच से पूरी तरह मुक्ति पा ली। शौचालय निर्माण को प्राथमिकता दी गई और इसके पीछे शर्म नहीं, स्वास्थ्य और गरिमा की भावना को रखा गया। महिलाओं को सुरक्षा और सम्मान मिला, बच्चों को बीमारियों से राहत, और गांव को नई पहचान।

'सोच बदली तो गांव बदला'

प्रह्लाद डांगरा और उनकी टीम ने एक नारा दिया — "सोच बदली तो गांव बदला"। यह नारा महज शब्दों की जुगलबंदी नहीं थी, यह हर बीबिपुरवासी के दिल की आवाज थी। पुरुषों की मानसिकता में बदलाव आया, महिलाओं को निर्णय लेने का अधिकार मिला, बेटियों को शिक्षा और सम्मान मिला, और गांव की तस्वीर बदलने लगी।

महिला पंचायतें और जागरूकता कार्यक्रम

गांव में महिला ग्राम सभाओं का आयोजन हुआ, जहां महिलाएं खुलकर अपनी समस्याएं और सुझाव रखती थीं। यह लोकतंत्र का सच्चा रूप था, जिसमें आधी आबादी भी पूरी भागीदारी निभा रही थी। शराबबंदी, दहेज, बाल विवाह और घरेलू हिंसा जैसे मुद्दों पर खुलकर बहसें हुईं और समाधान निकाले गए।

राष्ट्रीय स्तर पर पहचान

बीबिपुर की इस सामाजिक जागरूकता की लहर ने जल्द ही मीडिया, प्रशासन और विभिन्न सामाजिक संगठनों का ध्यान खींचा। इस गांव को कई राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय पुरस्कार मिले। कई एनजीओ ने यहां मॉडल के रूप में अध्ययन शुरू किया। गांव के बदलाव को डॉक्यूमेंट्रीज़ और शोध-पत्रों में दर्ज किया गया।

अब किताबों में: प्रेरणा का स्थायी स्थान

आज जब ICSE बोर्ड ने बीबिपुर गांव की इस कहानी को कक्षा आठवीं की किताब में शामिल किया है, तो यह किसी पुरस्कार से कम नहीं। यह कहानी अब देशभर के लाखों छात्र-छात्राओं को पढ़ाई जाएगी। वे जानेंगे कि बदलाव के लिए बड़े-बड़े भाषण या योजनाएं जरूरी नहीं होतीं — बस एक व्यक्ति की दृढ़ इच्छा शक्ति और सामाजिक भागीदारी ही काफी होती है।

यह न केवल छात्रों को सामाजिक विज्ञान का पाठ पढ़ाएगी, बल्कि ₹समाज विज्ञान₹ का असली अर्थ भी समझाएगी।

शिक्षा से बदलाव की वापसी

बीबिपुर की कहानी बच्चों को यह सिखाएगी कि गांव का विकास केवल सड़क या इमारतों से नहीं होता, बल्कि विचारों से होता है। यह पाठ छात्रों में सामाजिक नेतृत्व, नागरिक जिम्मेदारी और सकारात्मक सोच का बीज बोएगा। और यही तो शिक्षा का अंतिम उद्देश्य होता है — सोच में परिवर्तन।

क्या बाकी गांव सीखेंगे?

बीबिपुर एक मॉडल है, परंतु यह अकेला नहीं होना चाहिए। आज देश के हजारों गांव सामाजिक कुरीतियों से जूझ रहे हैं। कहीं बेटियों की भ्रूण हत्या हो रही है, कहीं खुले में शौच आज भी आम है, कहीं शिक्षा का स्तर बेहद कमजोर है। ऐसे में बीबिपुर की कहानी एक आदर्श प्रस्तुत करती है — अगर वे कर सकते हैं, तो हम क्यों नहीं?

सरकारों को चाहिए कि ऐसे उदाहरणों को पाठ्यक्रम से आगे ले जाकर नीति-निर्माण का आधार बनाए। पंचायतों को प्रशिक्षित किया जाए, महिला नेतृत्व को बढ़ावा मिले, और गांवों में मूलभूत बदलाव लाने के लिए ऐसे मॉडल को स्थानीय भाषाओं में प्रचारित किया जाए।

बीबिपुर अब सिर्फ एक गांव नहीं, एक विचार है

बीबिपुर की सफलता की असली कुंजी सहभागिता, जागरूकता और नेतृत्व है। यह गांव बताता है कि असल क्रांति हथियारों से नहीं, सोच की धार से आती है। यह कहानी यह भी बताती है कि कोई गांव छोटा नहीं होता, अगर उसकी सोच बड़ी हो।

आज जब बीबिपुर की कहानी स्कूलों में पढ़ाई जाएगी, तो वह सिर्फ एक पाठ नहीं होगी, बल्कि सपनों के बीज बोने वाली प्रेरणा होगी। हो सकता है, किसी बच्चे के मन में यह कहानी एक चिंगारी जला दे, जो कल किसी और गांव को रोशन कर दे।

बीबिपुर अब सिर्फ एक स्थान नहीं, एक आंदोलन, एक प्रेरणा और एक जीवित पाठशाला है — जहां से देश को नई दिशा मिलेगी।

खाद्य मंत्री कृष्ण पात्रा ने ज़मीन खरीदना से धोखाधड़ी का शिकार, 25 लाख रुपये लेकर गायब

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर: अगर आपने आम लोगों के साथ धोखाधड़ी के बारे में सुना है, तो आपको जानकर हैरानी होगी कि मंत्री जी भी एक बिचौलिए के जाल में फँस गए हैं। खाद्य आपूर्ति एवं उपभोक्ता कल्याण मंत्री कृष्ण चंद्र पात्रा भी ऐसी ही धोखाधड़ी का शिकार हो गए हैं। ढेंकनाल सदर थाना क्षेत्र के बनसिंह इलाके के एक व्यक्ति ने ज़मीन बेचने का झांसा देकर उनसे ढाई लाख रुपये ठग लिए। धोखाधड़ी का शिकार हुए मंत्री ने आखिरकार रविवार को ढेंकनाल टाउन पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और जांच कर रही है। मंत्री कृष्ण चंद्र पात्रा का घर ढेंकनाल टाउन का सिमिलिया में है। सदर थाने के बानासिंह इलाके का एक व्यक्ति उनके पास आया। बानासिंह इलाके में अच्छी कीमत पर ज़मीन है। उसने कहा कि अगर वह ज़मीन खरीदना चाहे तो वह सारी ज़मीन खरीद लेगा। मंत्री ने ज़मीन खरीदने की हामी भर दी और कहा कि ज़मीन मालिकों को अग्रिम राशि देनी होगी। उस व्यक्ति ने 25 लाख रुपये ले लिए।

मंत्री ने संबंधित व्यक्ति पर भरोसा करके पैसे दे दिए, लेकिन कई दिनों तक ज़मीन नहीं मिल पाई। तरह-तरह के बहाने बनाते हुए दिन बीतते गए। आखिरकार, निराश होकर कृष्ण पात्रा ने उससे पैसे वापस माँगे। आरोपी ने कृष्ण पात्रा के नाम से दो चेक दिए थे। जब उन्होंने उन्हें बैंक में जमा किया, तो चेक बाउंस हो गए। मंत्री ने पैसे वापस करने के लिए नोटिस भेजा, लेकिन उसने पैसे नहीं दिए।

बार-बार अनुरोध करने पर, वह 30 नवंबर 2024 तक सारा पैसा वापस करने को तैयार हो गया। लेकिन उसने तय समय सीमा के भीतर पैसे वापस नहीं किए और जनवरी 2025 के अंत तक पैसे वापस करने को कहा। पैसे दिए बिना वह लुका-छिपी खेलता रहा। और वह पकड़ा नहीं गया। मंत्री को जब पता चला कि आरोपी के पास कोई ज़मीन नहीं है, या फिर उसे पता ही नहीं था कि उसने किसी मालिक से संपर्क किया है, तो संबंधित व्यक्ति ने मंत्री के थाने में शिकायत दर्ज कराई है। उसने धोखेबाज़ को तुरंत गिरफ़्तार करने और पैसे वापस दिलाने की गुहार लगाई है। टाउन थाना पुलिस मामला दर्ज कर जाँच कर रही है।

यापराल व्यापारी ट्रेंड्स एसोशिएशन संगठन के राजूराम चोयल अध्यक्ष बने व लालाराम सीरवी सचिव बने

बालाजी नगर यापराल स्थित व्यापारी ट्रेंड्स एसोशिएशन संगठन के चुनाव सम्पन्न हुआ। नवनिर्वाचित अध्यक्ष राजाराम चोयल, सचिव लालाराम सीरवी, सदस्य अशोक सीरवी इस अवसर पर उपस्थित सीरवी समाज बडेर बालाजी नगर वडेर अध्यक्ष जयराम पंवार, सचिव हीरालाल चोयल, समस्त सीरवी समाज बालाजी नगर कार्यकारणी सदस्य व सर्व समाज बन्धु व अन्य।

ज़िंदगी की किताब और सब्र का कवर

ज़िंदगी को अगर एक किताब मान लिया जाए तो ये किताब हर किसी की अपनी अपनी होती है। कुछ के पन्ने रंगीन होते हैं, कुछ फीके, कुछ उजले और कुछ दर्द से लिखे हुए। लेकिन इस किताब को मुकम्मल बनाए रखने के लिए जो चीज़ सबसे ज़्यादा ज़रूरी है, वो है – "सब्र का कवर"।

जैसे एक किताब को सामने से पीछे तक बाँध कर रखने वाला हिस्सा उसका कवर होता है, जो हर पन्ने को महफ़ूज़ रखता है, ठीक वैसे ही ज़िंदगी में सब्र (धैर्य) वो कवर है जो हमारे टूटे-बिखरे लम्हों को बाँध देता है।

जब रंज-,-ग़म (दु:ख और तकलीफ़ें) आ जाएँ, जब ख़ुशियाँ मुनक़तअ (छोटी और अस्थायी) लगें, जब हमारी कहानी इधर-उधर बिखरने लगे तभी तो सबसे ज़्यादा ज़रूरत होती है उस धागे की जो इन सबको फिर से जोड़ता है। और वो धागा है,सब्र। जैसे जैसे वक़्त गुज़रता है।

हर दिन एक नया पन्ना है। किसी दिन का पन्ना आँसुओं से भीगा होता है, तो किसी दिन का पन्ना मुस्कुराहट से महकता है। लेकिन उसी किताब में कुछ पन्ने ऐसे भी होते हैं जो चाह कर भी समझ नहीं आते, सिर्फ़ सब्र ही उन्हें समझने का हौसला देता है।

सब्र तालीम देता है कि ठहर जाओ, सोचो, साँस लो,हर चीज़ का वक़्त होता है।

"अगर सब्र न हो तो?"

फिर तो ज़िंदगी के ये पन्ने हवा में उड़ जाते हैं। कोई एक पन्ना खो जाए तो पूरी कहानी अधूरी लगती है, जैसे एक टूटा तानाबाना। सब्र ही वो ताक़त है जो हर पन्ने को न सिर्फ़ जोड़ता है, बल्कि उन्हें एक मुकम्मल अफ़साना बना देता है।

पेग़ाम (संदेश):

ज़िंदगी एक किताब है जिसकी सूरत बिखर भी सकती थी, मगर सब्र का कवर इसे बाँधे रखता है।

हर मुस्कान, हर आँसू, हर ठहराव , सब कुछ इसी सब्र से बने एक दस्तावेज़ में तब्दील हो जाता है।

इसलिए, चाहे हालात कैसे भी हों, सब्र को अपनी ज़िंदगी का हिस्सा बनाईए।

यही वो तीरगी में रौशनी की शम्अ है जो हर पन्ने को नूर दे देती है।

डॉ.मुश्ताक अहमद

काचीगुड़ा स्थित माजीसा ढाका ट्रैवल्स के उद्घाटन कार्यक्रम में उपस्तित प्रबंधक धर्माराम ढांका, रामेश्वर दायमा, सभी पधारे अतिथियों मे विकास शर्मा, मंगलाराम पंवार, कैलाश शर्मा, सोहन सिंह राजपुरोहित , लक्ष्मण सिंह राजपुरोहित,आनंद शर्मा, हरजीराम काग ,रुपाराम कुमावत, वचनाराम जाट , धर्माराम कड़वा, बकसाराम खुडखुडीया ,लिखमाराम खोखर, कैलाश सारण, दोलाराम कड़वा, आशाराम गेहलोत, जगदीश कुलकधाणीया, बाबूलाल कुलकधाणीया, हिरालाल उपाध्याय,गौकूलचंन्द उपाध्याय अन्य।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023